FAIZAN E MADINA

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

सितम्बर 2025 ई. / रबीउ़ल अव्वल 1447 हि.

मुख़्तसर सीरत नम्बर

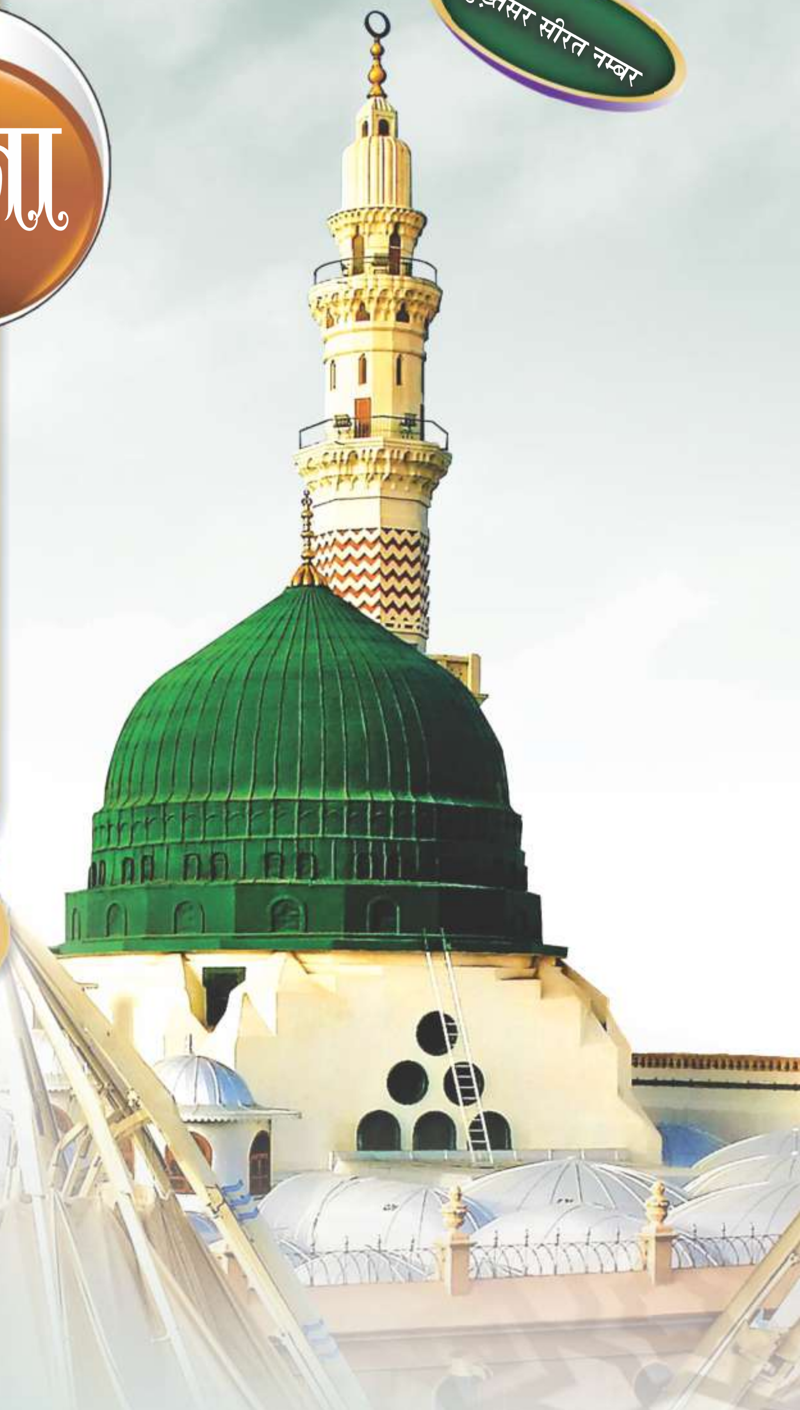

- आमदे मुस्त़फ़ा ﷺ के क़ुरआनी मक़ासिद 3
- इन्सान की ख़ुश बख़्ती और बद बख़्ती 7
- शुक्रानए नेमत की इस्लामी तालीमात और मीलादुन्नबी 30
- तह़फ़्फ़ुज़े अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत और हमारी ज़िम्मेदारी 32
- तरबियते औलाद के मुस्त़फ़वी उसूल 49

1500वाँ
जश्ने विलादत
मुबारक हो

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

सितम्बर 2025 ई. | जिल्द : 09 | शुमारा : 09

ब फ़ैज़ाने नज़र
सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह,
इमामे आज़म हज़रते सय्यिदुना
इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

ब फ़ैज़ाने करम
आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह
इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

क़ुरआनो हदीस

आमदे मुस्तफ़ा ﷺ के क़ुरआनी मक़ासिद 3
इन्सान की ख़ुश बख़्ती और बद बख़्ती 7

फ़ैज़ाने सीरत

हुज़ूरे अकरम ﷺ ब हैसिय्यते मुअल्लिम 10
तब्लीग़े दीन में रसूलुल्लाह ﷺ की हिक्मते अमलियां 14
आख़िरी नबी मुहम्मदे अरबी ﷺ एक अज़ीम नफ़्सियात शनास 17
रसूलुल्लाह ﷺ का देहातियों के साथ अन्दाज़े करम नवाज़ी 20

फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत

रसूले करीम صلی اللہ علیہ والہ وسلم को नूरुल्लाह कहना कैसा ? मअ दीगर सुवालात 22

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

जिब्रीले अमीन कितनी बार बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए ? मअ दीगर सुवालात 24

मज़ामीन

तालीमाते नबवी ﷺ और इज़्दिवाजी ज़िन्दगी 26
शुक्रानए नेमत की इस्लामी तालीमात और मीलादुन्नबी 30
तहफ़्फ़ुज़े अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत और हमारी ज़िम्मेदारी 32

ताजिरों के लिये

अहकामे तिजारत 34

बुज़ुर्गाने दीन की सीरत

दिलों पर दस्ते शफ़क़त की बरकतें 36
सहाबए किराम के मन्ज़ूम नज़राने 41
अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये 44

बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"

आला अख़्लाक़ की तक्मील वाले नबी ﷺ 46
आंखों के सामने से गुज़रे पर ख़बर न हुई 47
हुरूफ़ मिलाइये ! 48
तरबियते औलाद के मुस्तफ़वी उसूल 49
ख़त्मे नुबुव्वत 52
बच्चों के इस्लामी नाम 53

इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"

छोटी बच्चियों पर हुज़ूर ﷺ की शफ़क़तें 54
इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 56

आफ़िय्यत की दुआ

रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआए आफ़िय्यत को बहुत अहमियत दी, न सिर्फ़ ख़ुद येह दुआ ब कसरत फ़रमाते बल्कि उम्मत को भी इस की बहुत ज़ियादा तरग़ीब इरशाद फ़रमाया करते ताकि ज़ाहिरी व बातिनी और दुन्यावी व उख़रवी तकालीफ़ व आज़माइशों से बचा जाए।

आइये ! 5 अहादीसे मुबारका मुलाहज़ा फ़रमाइये :

1 हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا बयान करते हैं कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुब्हो शाम येह दुआएं तर्क न फ़रमाते थे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَافِيَةَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِیْ دِيْنِیْ وَدُنْيَایَ وَاَهْلِیْ وَمَالِیْ

اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَتِیْ

तर्जमा : ऐ मेरे अल्लाह ! मैं तुझ से दुन्या व आख़िरत में आफ़िय्यत तलब करता हूं। ऐ मेरे अल्लाह ! मैं तुझ से दर गुज़र और अपने दीनो दुन्या और अहल व माल में आफ़िय्यत का सुवाल करता हूं। ऐ मेरे अल्लाह ! मेरे पर्दे की हिफ़ाज़त फ़रमा।

(ابو داؤد، 4/414، حدیث:5074)

2 **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी मुहम्मदे अरबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब गरज चमक की आवाज़ सुनते तो दुआ करते :

اَللّٰهُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَلَا تُهْلِكْنَا بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذٰلِكَ

तर्जमा : **ऐ अल्लाह !** हमें अपने ग़ज़ब से हलाक न करना और न हमें अपने अज़ाब से तबाह करना और हमें इस से पहले आफ़िय्यत अता फ़रमा देना। (ترمذی، 5/280، حدیث:3461)

3 एक मौक़अ पर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ मिम्बरे रसूल के पास खड़े हुए और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को याद कर के रोने लगे। फिर फ़रमाया : बेशक रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हिजरत के पहले साल उसी जगह इरशाद फ़रमाया : लोगो ! अल्लाह पाक से आफ़िय्यत का सुवाल करो (येह तीन मरतबा फ़रमाया) क्यूंकि किसी को ईमान के बाद आफ़िय्यत से बेहतर कोई चीज़ नहीं मिली।

(سنن کبریٰ للنسائی، 6/221، حدیث:10720)

4 एक शख़्स ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! सब से अफ़ज़ल दुआ कौन सी है ? इरशाद फ़रमाया : अपने रब्बे करीम से आफ़िय्यत और दुन्या व आख़िरत की भलाई का सुवाल किया करो। दूसरे दिन भी उस शख़्स ने हाज़िर हो कर अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! सब से अफ़ज़ल दुआ कौन सी है ? आप ने उसी दुआ का इरशाद फ़रमाया। तीसरे दिन आ कर फिर उस ने यही सुवाल किया तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर तुम्हें दुन्या व आख़िरत में आफ़िय्यत मिल जाए तो तुम कामयाब हो गए।

(ترمذی، 5/305، حدیث:3523)

5 रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बन्दा उस से अफ़ज़ल कोई दुआ नहीं मांगता :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْمُعَافَاةَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

तर्जमा : **ऐ अल्लाह !** मैं तुझ से दुन्या और आख़िरत में आफ़िय्यत का सुवाल करता हूं। (ابن ماجہ، 4/273، حدیث:3851) यूंही इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक को ज़ियादा पसन्द है कि उस से आफ़िय्यत का सुवाल किया जाए।

(ترمذی، 5/306، حدیث:3526)

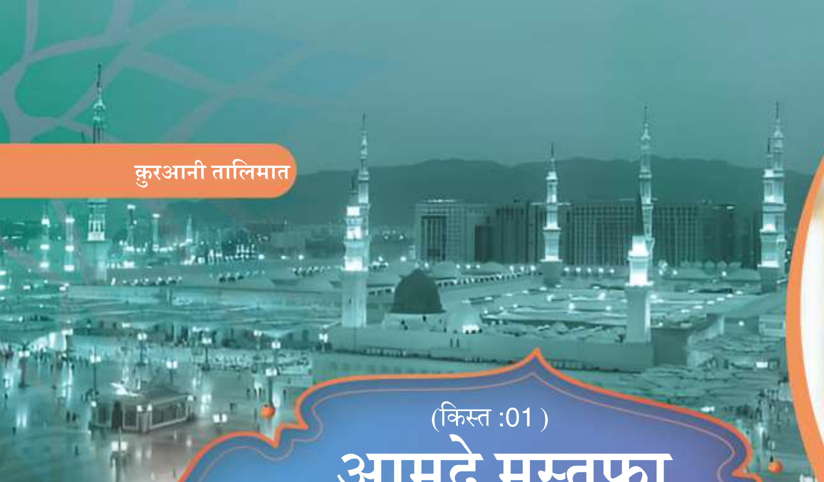

(क़िस्त :01)

आमदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ुरआनी मक़ासिद

अम्बियाए किराम की बिअसत दर ह़क़ीक़त इन्सानिय्यत के लिये रब्बानी रह़मत है जो जहालत के अन्धेरों, ज़ुल्म की गिरिफ़्त, शिर्क की गुमराही और अख़्लाक़ी ज़वाल से नजात का ज़रीआ बनी। अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام अपनी उम्मतों को **अल्लाह** وحدہٗ لاشریک के दर पर झुकने की तालीम देते रहे और गुमराही से बचाते रहे, हिदायत व रहनुमाई के नबवी सिल्सिले का इख़्तिताम ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर हुवा, आप दोनों जहां के लिये रह़मत बन कर तशरीफ़ लाए, आप की बिअसत न सिर्फ़ अरब बल्कि तमाम आलमे इन्सानिय्यत के लिये एक इन्क़िलाबी रह़मत थी। क़ुरआने करीम में अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिअसत के मुतअद्दद वाज़ेह और जामेअ मक़ासिद बयान फ़रमाए, जो क़ियामत तक के इन्सानों के लिये हिदायत का रौशन मीनार हैं।

इन्सानिय्यत को अल्लाह की त़रफ़ बुलाना

अल्लाह तआला ने इन्सान को अपनी मारिफ़त, इबादत और बन्दगी के लिये पैदा किया। ताहम इन्सान की फ़ित़री कमज़ोरी, ख़्वाहिशाते नफ़्स और ख़ारिजी असरात की बिना पर लोग बारहा अल्लाह की बन्दगी से हटते रहे। चुनान्चे हर दौर में अल्लाह तआला ने अम्बिया को मबऊस फ़रमाया ताकि वोह इन्सानों को रब की त़रफ़ रुजूअ करने की दावत दें, उन्हें शिर्क व गुमराही से निकाल कर तौह़ीदो हिदायत की त़रफ़ लाएं। ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद का भी येह एक अहम मक़्सद है।

क़ुरआने मजीद में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस मक़्सदे बिअसत को यूं बयान फ़रमाया गया :

﴿يٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِیْرًاۙ(۴۵) وَّ دَاعِیًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا مُّنِیْرًا(۴۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) बेशक हम ने तुम्हें भेजा ह़ाज़िर नाज़िर और ख़ुश ख़बरी देता और डर सुनाता और **अल्लाह** की त़रफ़ उस के हुक्म से बुलाता और चमका देने वाला आफ़्ताब।[1] इन आयात में रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जिन सिफ़ात के साथ मुतआरिफ़ करवाया गया, उन में से एक वस्फ़ "دَاعِیًا اِلَى اللّٰهِ" यानी "अल्लाह की त़रफ़ बुलाने वाला" है। और येह दावत ऐसी दावत है जो अल्लाह के इज़्न और हुक्म से है, न कि किसी ज़ाती मफ़ाद, सियासी नज़रिये या क़ौमी तअस्सुब की बुन्याद पर। उसी दावत की वज़ाह़त रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने इस इरशाद में की जो क़ुरआन ही ने नक़्ल किया : ﴿قُلْ هٰذِهٖ سَبِیْلِیْۤ اَدْعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ ؔ عَلٰى بَصِیْرَةٍ اَنَا وَ مَنِ اتَّبَعَنِیْؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ येह मेरी राह है मैं अल्लाह की त़रफ़ बुलाता हूं मैं और जो मेरे क़दमों पर चलें दिल की आंखें रखते हैं।[2]

क़ुरआने करीम ने इस दावत की फ़ज़ीलत को भी बयान फ़रमाया है :

﴿وَ مَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَ عَمِلَ صَالِحًا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो अल्लाह की त़रफ़ बुलाए और नेकी करे।[3]

क़ुरआने करीम और ह़िक्मत की तालीम

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिअसत का एक मर्कज़ी मक़्सद क़ुरआने मजीद ने बार बार बयान किया है, और वोह है : किताबुल्लाह और ह़िक्मत की तालीम देना। यानी इन्सानिय्यत को वह़िये इलाही की रौशनी में इल्म अ़ता करना, उन्हें फ़िक्री गुमराहियों, जाहिलाना रुसूम, बात़िल अ़क़ाइद और यहूदो नसारा की तह़रीफ़ शुदा तालीमात से निकाल कर ऐसी तालीम देना जो अल्लाह की त़रफ़ से हो, जामेअ़ हो, वाजे़ह हो और इन्सान की इन्फ़िरादी व इज्तिमाई ज़िन्दगी को संवारने वाली हो।

क़ुरआने मजीद की मुतअ़द्दद आयात में येह मक़्सद निहायत वज़ाह़त के साथ बयान हुवा है। सूरतुल जुमुआ में फ़रमाया गया : ﴿هُوَ الَّذِیْ بَعَثَ فِی الْاُمِّیّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَ يُزَكِّيْهِمْ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَۗ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोही है जिस ने अन पढ़ों में उन्ही में से एक रसूल भेजा कि उन पर उस की आयतें पढ़ते हैं और उन्हें पाक करते हैं और उन्हें किताब और ह़िक्मत का इल्म अ़ता फ़रमाते हैं।[4]

सूरतुल बक़रह की आयत 129 पढ़ते हैं तो पता चलता है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सूरत में अहले अ़रब बल्कि सारे जहान को जो नेमत मिली है वोह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ का समर है, और आप की दुआ में येह भी शामिल था कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां लोगों को किताबुल्लाह और ह़िक्मत की तालीम दें चुनान्चे सूरतुल बक़रह में है :

﴿رَبَّنَا وَ ابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ يُزَكِّيْهِمْؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे और भेज उन में एक रसूल उन्हीं में से कि उन पर तेरी आयतें तिलावत फ़रमाए और उन्हें तेरी किताब और पुख़्ता इल्म सिखाए और उन्हें ख़ूब सुथरा फ़रमा दे।[5]

और फिर उसी दुआ की क़बूलिय्यत सूरए आले इमरान आयत 164 में मज़कूर है : ﴿لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَ يُزَكِّيْهِمْ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَۚ وَ اِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ(۱۶۴)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह का बड़ा एह़सान हुवा मुसलमानों पर कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन पर उस की आयतें पढ़ता है और उन्हें पाक करता और उन्हें किताब व ह़िक्मत सिखाता है और वोह ज़रूर इस से पहले खुली गुमराही में थे।[6]

रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्मे इलाही के मुत़ाबिक़ क़ुरआन की तालीम दी और दानाई व ह़िक्मत सिखाई, बल्कि ह़िक्मत की अहमिय्यत को (اَلْحِكْمَةُ ضَالَّةُ الْمُؤْمِنِ)[7] फ़रमा कर हर मुसलमान के लिये उजागर फ़रमाया।

येह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तालीमो तरबियत और ह़िक्मतो दानाई ही थी कि मुसलमान चन्द ही सालों में इस्लाम का पैग़ाम ले कर 22 लाख मुरब्बअ़ मील से भी आगे पहुंच गए।

येह तालीम सिर्फ़ अल्फ़ाज़ की अदाएगी या किताब ख़्वानी न थी बल्कि एक जामेअ़ फ़िक्री, रूह़ानी और अ़मली तरबियत थी। जिसे मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने नफ़्स की क़ुव्वते अ़मलिय्या व इल्मिय्या की तक्मील से ताबीर फ़रमाया है।[8] रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ुरआन की तालीम को दिलों में रासिख़ किया और उस पर अ़मल का शुऊर पैदा किया, और उम्मत के लिये एक ज़िन्दा मिसाल बन कर ख़ुद उस तालीम का अ़मली नमूना बने। येही वज्ह है कि ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا ने फ़रमाया : كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآن यानी आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अख़्लाक़ क़ुरआन था।[9]

तालीमे क़ुरआन व ह़िक्मत को सिर्फ़ अपनी ज़ात से ही वाबस्ता न रखा बल्कि उम्मत को क़ुरआने करीम सिखाने और

आगे पहुंचाने की तरग़ीब दिलाई, ज़ेहन साज़ी फ़रमाई यहां तक कि उम्मत ने क़ुरआने करीम की हिक्मत भरी तालीमात को हज़ारों तफ़ासीर की सूरत में आम किया।

तज़्कियए नफ़्स व अख़्लाक़ी तरबियत

इन्सानी वुजूद सिर्फ़ जिस्म व अक़्ल का मज्मूआ नहीं, बल्कि इस में एक बातिन भी है। जिसे रूह, क़ल्ब, नफ़्स से ताबीर किया जाता है, अगर येह बातिन पाक हो तो इन्सान ख़ैर, अद्ल, इख़्लास और इन्सानिय्यत की राह पर गामज़न होता है, और अगर येह बातिन फ़ासिद हो जाए तो इन्सान ख़्वाह कितनी भी अक़्ल या ताक़त रखता हो, वोह फ़साद, ज़ुल्म और ख़ुद परस्ती की दलदल में गिरता चला जाता है। येही वज्ह है कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की बिअसत का एक बुन्यादी हदफ़ तज़्किया यानी इन्सान के नफ़्स और रूह को पाक करना, उस के अख़्लाक़ को संवारना और उसे तहारते बातिन से रूशनास कराना था। बि ऐनिही येही मक़्सद रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिअसत का भी एक मुस्तक़िल और नुमायां पहलू है।

क़ुरआने मजीद में मुतअद्दद मक़ामात पर "तज़्किया" को नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिअसत के मक़्सद के तौर पर बयान फ़रमाया गया है, सूरए अल बक़रह की आयत 151 में फ़रमाया :

﴿كَمَاۤ اَرْسَلْنَا فِیْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ یَتْلُوْا عَلَیْكُمْ اٰیٰتِنَا وَ یُزَكِّیْكُمْ وَ یُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ یُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ(۱۵۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जैसे हम ने तुम में भेजा एक रसूल तुम में से कि तुम पर हमारी आयतें तिलावत फ़रमाता है और तुम्हें पाक करता और किताब और पुख़्ता इल्म सिखाता है और तुम्हें वोह तालीम फ़रमाता है जिस का तुम्हें इल्म न था।[10]

यहां یُزَكِّیْكُمْ यानी "तुम्हें पाक करता है" को "**तिलावत**" और "**तालीम**" के दरमियान अलग और मुस्तक़िल तौर पर ज़िक्र किया गया, जो उस की अहमिय्यत को ज़ाहिर करता है।

इसी मफ़्हूम को सूरतुल जुमुआ, सूरए आले इमरान, और सूरए अल बक़रह में भी बताया गया है। उन सब आयात से वाज़ेह होता है कि बिअसते रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सिर्फ़ इल्मी पहलू नहीं बल्कि रूहानी इस्लाह और अख़्लाक़ी तरबियत भी इस मिशन का बुन्यादी रुक्न है।

तज़्किये का मफ़्हूम क़ुरआन की रौशनी में वसीअ है। इस में ईमान की तक़्विय्यत, शिर्क से नजात, दिल की सफ़ाई, निय्यत की इस्लाह, आमाल में ख़ुलूस, ज़बान की पाकीज़गी, नज़र की हया, नफ़्स की तहज़ीब, और अख़्लाक़े हसना की तरबियत शामिल है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी उस तज़्किये का जीता जागता नमूना थी। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِنَّمَا بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ مَكَارِمَ الْاَخْلَاقِ[11] मुझे तो अख़्लाक़े हसना की तक्मील के लिये भेजा गया है। येह हदीस तज़्किया की जामेअ तरीन ताबीर है, जिस में अख़्लाक़ी ततहीर, मुआशरती इस्लाह, बातिनी सफ़ाई और आला किरदार को नुबुव्वत का मक़्सद क़रार दिया गया।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरत का मुतालआ किया जाए तो येह हक़ीक़त उभरती है कि आप ने बदतरीन अख़्लाक़ में मुब्तला अफ़राद को बेहतरीन इन्सानों में तब्दील कर दिया। जो लोग झूट, शराब, ज़िना, जहालत, ज़ुल्म, इन्तिक़ाम, तअस्सुब और माल परस्ती में डूबे हुए थे, वोह आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोहबत व तालीम से सच्चाई, हया, इफ़्फ़त, अद्ल, तक़्वा, रवादारी और सख़ावत की अलामत बन गए।

आज के दौरे मादियत में जब तालीम तो है मगर तरबियत नहीं, मालूमात तो हैं मगर अख़्लाक़ नापैद, तरक़्क़ी तो है मगर रूहानी सुकून अन्क़ा है। हमें चाहिये कि नबवी तज़्किये के उसूलों को इन्फ़िरादी ज़िन्दगी से ले कर इज्तिमाई निज़ाम तक नाफ़िज़ करें, ताकि इन्सानिय्यत फ़ितनों से निकल कर तहारत, महब्बत, अम्न, और नूर की तरफ़ लौटे।

फ़रीज़ए तब्लीग़ की अदाएगी

आमदे सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक अहम और बुन्यादी मक़्सद तब्लीग़े पैग़ामे इलाही है। यानी जो कुछ अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हुवा, उसे पूरी दियानत, वज़ाहत और इस्तिक़ामत के साथ, बग़ैर किसी ख़ौफ़, लालच या मस्लहत के लोगों तक पहुंचा देना है।

क़ुरआने मजीद में इस फ़रीज़े को बड़ी अज़मत के साथ बयान किया गया है। सूरए अल माइदा की आयत 67 में इरशादे बारी तआला है : ﴿یٰۤاَیُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ مِنْ

رَبِّكَ ؕ وَ اِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِی الْقَوْمَ الْكٰفِرِیْنَ(۶۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रसूल पहुंचा दो जो कुछ उतरा तुम्हें तुम्हारे रब की त़रफ़ से और ऐसा न हो तो तुम ने उस का कोई पयाम न पहुंचाया और अल्लाह तुम्हारी निगहबानी करेगा लोगों से बेशक अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता।[12]

तब्लीग़ कोई आम अमल नहीं बल्कि मन्सबे रिसालत का ऐन जौहर है। आप صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم को मह़ज़ किताब लेने वाला या ह़ामिले वह़ी नहीं बनाया गया, बल्कि इस वह़ी को लोगों तक पहुंचाने वाला, और वोह भी बिला ख़ौफ़ व बिला कमज़ोरी, बनाया गया।

रसूलुल्लाह صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم की पूरी सीरत इस आयत की अमली तफ़्सीर है। मक्का की घुटन, त़ाइफ़ की संगबारी, बद्र व उहुद की ख़ूंरेज़ी, मुनाफ़िक़ीन की साज़िशें, यहूद की अय्यारी, मुशरिकीन की दुश्मनी, और क़ुरैश का शदीद रद्दे अमल, इन सब के बा वुजूद आप صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने तब्लीग़ का फ़रीज़ा जारी रखा। आप صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने तन्हाई में भी तब्लीग़ की, मज्मअ में भी, ह़ज के मैदानों में भी, बाज़ारों में भी, और कुफ़्फ़ार के सरदारों, क़बाइली वुफ़ूद, बादशाहों, और आम लोगों तक भी। तब्लीग़ की वुस्अत और जामेइय्यत का येह आलम था कि आप صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने न सिर्फ़ क़ुरैश और अहले मक्का को, बल्कि रूम व फ़ारस के सलात़ीन को ख़ुत़ूत़ लिख कर इस्लाम की दावत दी।

रसूलुल्लाह صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم के इस मन्सब और मक़्सदे बिअसत को कई आयात में बयान फ़रमाया गया है, सूरतुन्नह़ल की आयत 82 में फ़रमाया :

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَیْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِیْنُ(۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर अगर वोह मुंह फेरें तो ऐ मह़बूब तुम पर नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना।[13] और सूरतुन्नाज़िआत में है :

اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ یَّخْشٰىهَا(۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम तो फ़क़त़ उसे डराने वाले हो जो उस से डरे।

रसूलुल्लाह صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने इस ज़िम्मेदारी को उस कमाल के साथ अदा फ़रमाया कि ह़िज्जतुल वदाअ के मौक़अ पर जब आप صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने लाखों सह़ाबा के मज्मअ में फ़रमाया : " هَلْ بَلَّغْتُ ؟ " क्या मैं ने (पैग़ाम) पहुंचा दिया ? तो सब ने जवाब दिया : "नअम" जी हां। फिर आप صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने फ़रमाया : "اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ" ऐ अल्लाह ! तू गवाह रह।[14]

तब्लीग़ की इस ज़िम्मेदारी में आप صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم की इस्तिक़ामत और इख़्लास का येह आलम था कि क़ुरआन ने फ़रमाया : لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا یَكُوْنُوْا مُؤْمِنِیْنَ(۳) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कहीं तुम अपनी जान पर खेल जाओगे उन के ग़म में कि वोह ईमान नहीं लाए।[15]

اَلْحَمْدُ لِلّٰه हम नबिय्ये करीम صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم के सच्चे उम्मती और पैरौकार हैं तो हमें भी अपनी इस्तिअदाद, इल्म, किरदार और ज़राएअ के मुत़ाबिक़ पैग़ामे इलाही को वाज़ेह़, ह़कीमाना और मुअस्सर अन्दाज़ में दूसरों तक पहुंचाना होगा। येही बिअसत की तक्मील है, येही नबवी अमानत का ह़क़ है, और येही क़ियामत के दिन हमारी नजात की बुन्याद बन सकता है।

---

(1)پ22، الاحزاب:45،46(2)پ13، یوسف:108(3)پ24، حٰمٓ السجدۃ:33(4)پ28، الجمعۃ:2(5)پ1، البقرۃ:129(6)پ3، اٰلِ عمرٰن:164(7)ترمذی، 4/314، حدیث:2696(8)تفسیر خزائن العرفان، پ4، اٰل عمرٰن، تحت الآیۃ:164(9)مسند احمد، 9/512، حدیث:25357(11)پ2، البقرۃ:151(11)سنن الکبری للبیہقی، 10/323، حدیث:20782(12)پ6، المائدۃ:67(13)پ14، النحل:82(14)مسلم، ص712، حدیث:4386(15)پ19، الشعراء:3۔

इन्सान की ख़ुश बख़्ती और बद बख़्ती
(Good fortune and misfortune)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مِنْ سَعَادَةِ ابْنِ آدَمَ رِضَاهُ بِمَا قَضَى اللّٰهُ لَهُ، وَمِنْ شَقَاوَةِ ابْنِ آدَمَ تَرْكُهُ اسْتِخَارَةَ اللّٰهِ، وَمِنْ شَقَاوَةِ ابْنِ آدَمَ سَخَطُهُ بِمَا قَضَى اللّٰهُ لَهُ

तर्जमा : इन्सान की सआदत (ख़ुश बख़्ती) में से हैं कि अल्लाह ने इस के लिये जो फ़ैसला किया है वोह इस पर राज़ी हो जाए और इन्सान की शक़ावत (बद बख़्ती) में से है कि वोह अल्लाह पाक से इस्तिख़ारा (ख़ैर मांगना) छोड़ दे और अपने बारे में अल्लाह पाक के फ़ैसले पर नाराज़ हो।(1)

इस ह़दीसे रसूल में सआदत व शक़ावत का मेयार बयान किया गया है। सईद व ख़ुश बख़्त है वोह शख़्स जो अल्लाह के फ़ैसले पर अपने सर को झुका ले, दिल में शिक्वा व शिकायत को जगह न दे और शक़ी व बद बख़्त वोह है जो अल्लाह के फ़ैसले को तस्लीम करने के बजाए नाराज़ हो कर शिक्वा शिकायत पर उतर आए। इसी त़रह़ अल्लाह पाक से इस्तिख़ारा (यानी भलाई त़लब) न करने वाला भी शक़ावत में मुब्तला हो जाता है। ख़याल रहे कि मुसीबतों को दूर करने के लिये तदबीरें करना बुरा नहीं लेकिन तदबीर करने के बाद भी उस का नतीजा अल्लाह करीम के ह़वाले कर देना चाहिये कि वोह जो चाहे उस के बारे में फ़ैसला फ़रमाए।

सआदत व शक़ावत का पता कैसे चलता है ?

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिख्ते हैं : सआदत, शक़ावत एक ग़ैबी चीज़ है मगर इन दोनों की अलामात हैं। जो बन्दा अल्लाह पाक की रिज़ा पर राज़ी, उस की क़ज़ा पर सर झुकाए रहे समझ लो कि اِنْ شَآءَ اللّٰه येह सईद (ख़ुश नसीब) है, उस का ख़ातिमा अच्छा होने वाला है, उस के बर अक्स हो तो अलामत बद बख़्ती की है।(2)

सआदत की अलामत क़रार देने का सबब

अल्लाह पाक के फ़ैसले पर राज़ी रहने को बन्दे की सआदत की अलामत इस लिये क़रार दिया गया है कि 1 वोह इबादत के लिये यक्सू हो जाए क्यूंकि अगर बन्दा क़ज़ा पर राज़ी न हो तो हमेशा ग़मज़दा और दिल में फ़िक्रमन्द रहता है, और येह सोचता रहता है : ऐसा क्यूं हुवा ? वैसा क्यूं न हुवा ? 2 वोह अल्लाह तआला के ग़ज़ब का निशाना न बने, क्यूंकि बन्दे की नाराज़ी येह है कि वोह अल्लाह के फ़ैसले के सिवा किसी और बात का ज़िक्र करे और कहे : येही बात ज़ियादा बेहतर और मौज़ूं थी, हालांकि इस बात के नफ़ा या नुक़्सान का यक़ीन भी नहीं होता।(3)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : وَاِنَّ اللّٰهَ اِذَا اَحَبَّ قَوْمًا ابْتَلَاهُمْ، فَمَنْ رَضِيَ فَلَهُ الرِّضَا، وَمَنْ سَخِطَ فَلَهُ السَّخَطُ

तर्जमा : अल्लाह पाक जब किसी क़ौम से मह़ब्बत करता है तो उन्हें आज़माइश में मुब्तला कर देता है तो जो इस की क़ज़ा पर राज़ी हो उस के लिये रिज़ा है और जो नाराज़ हो उस के लिये नाराज़ी है।(4)

अगर हम ग़ौर करें तो इन्सान के पास रिज़ा बिल क़ज़ा (तक़्दीर पर राज़ी होने) के इलावा चारा ही क्या है ? इस लिये कि हमारे नाराज़ होने से वोह फ़ैसला बदल नहीं सकता जो हमारे बारे में हो चुका था, नाराज़ी से ग़म दूर नहीं हो सकता बल्कि इस नाराज़ी से ग़म की शिद्दत और तक्लीफ़ में मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाएगा और इन्सान के दिल में आएगा "हम ने येह क्यूं न कर लिया, फ़ुलां तदबीर क्यूं न इख़्तियार कर ली।" रिज़ा बिल क़ज़ा में दर ह़क़ीक़त इन्सान की तसल्ली का सामान है।

काश और अगर से बचें

ह़ज़रते अबू हुरैरा से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : त़ाक़तवर मोमिन, कमज़ोर मोमिन की निस्बत अल्लाह के नज़दीक बेहतर और ज़ियादा मह़बूब है, अगर्चे भलाई दोनों में है। तुम उस चीज़ में रग़बत करो जो तुम्हें फ़ाएदा दे, और अल्लाह से मदद मांगो, कमज़ोर मत बनो। अगर कोई मुसीबत पहुंचे तो येह न कहो : काश ! मैं यूं करता तो ऐसा हो जाता। बल्कि यूं कहो : येह अल्लाह की तक़्दीर है, वोही करता है जो चाहता है। क्यूंकि "**अगर**" का लफ़्ज़ शैतान के लिये दरवाज़ा खोल देता है।(5)

ह़ज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : मैं किसी अंगारे को ज़बान से चाटूं और वोह जला दे जो जला दे और बाक़ी रहने दे जो बाक़ी रहने दे, येह मेरे नज़दीक उस से ज़ियादा पसन्दीदा है कि जो काम हो चुका उस के बारे में कहूं : काश न होता या न होने वाले काम के बारे में कहूं : काश हो जाता।(6)

बहरह़ाल हमें अल्लाह पाक की रिज़ा पर राज़ी रहना चाहिये क्यूंकि हम नहीं जानते कि हमारे लिये क्या बेहतर है और क्या नहीं ? मगर वोह अलीमो ख़बीर जानता है, दूसरे पारे में इरशाद होता है :

﴿وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَیْــٴًـا وَّهُوَ خَیْرٌ لَّكُمْۚ وَعَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَیْــٴًـا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْؕ وَاللّٰهُ یَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ۠(۲۱۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे ह़क़ में बेहतर हो और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।(7)

कई साल पहले एक फ़ैमेली में किसी को हार्ट अटेक आया, डोक्टरों ने बाईपास ओप्रेशन तज्वीज़ किया लेकिन फ़ैमेली रक़म का इन्तिज़ाम न कर सकी और कुछ ही अर्से में मरीज़ दुन्या से चल बसा। उन की बेवा की ज़बान से निकला कि काश उन का ओप्रेशन हो जाता और येह बच जाते। इस के चन्द महीनों बाद दूसरे भाई को भी दिल का अटैक आया, डोक्टरों ने उन के लिये भी बाईपास तज्वीज़ किया, पहले भाई के मुआमले को देखते हुए किसी न किसी त़रह रक़म जमा की गई और उन का ओप्रेशन करवाया गया लेकिन ओप्रेशन कामयाब न हो सका और वोह भी इन्तिक़ाल कर गए, उन की बेवा येह कहती पाई गई कि काश मैं इन का ओप्रेशन न करवाती शायद येह बच जाते। अल्लाह पाक दोनों भाइयों की मग़्फ़िरत फ़रमाए, बहरह़ाल होता वोही है जो अल्लाह का फ़ैसला होता है और इन्सान सोचता रह जाता है।

पैकरे तस्लीमो रिज़ा

हमारी तो ह़ैसिय्यत ही क्या है ! बात बात पर टेन्शन, बेचैनी और बे क़रारी का शिकार हो कर परेशान हो जाते हैं। काइनात की सब से अज़ीम हस्ती ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी को देखा जाए तो कैसे कैसे कठिन और मुश्किल तरीन ह़ालात में तस्लीमो रिज़ा के पैकर बन कर हमें अपनी पैरवी की दावत देते दिखाई देते हैं। पैदाइश से पहले वालिदे मोह़तरम और बचपन में प्यारी मां की दुन्या से रुख़्सती, मुशरिकीने मक्का से साज़िशों में रुकावट बनने वाले चचा और हमदर्द व ग़म गुसार ज़ौजा की जुदाई, दावते इस्लाम देते वक़्त क़रीबी रिश्तेदार का आवाज़ें कसना, बुग़्ज़ो कीना से भरी हुई औरत का राहों में कांटे बिछाना, कुफ़्फ़ारे मक्का की नाज़ेबा ह़रकतें, दाख़िले इस्लाम होने वाले सआदत मन्दों पर जिस्मानी तशद्दुद होना, सफ़रे त़ाइफ़ में औबाशों का संगबारी कर के आप को ज़ख़्मी करना, शिअबे अबी त़ालिब में मह़सूर रहना, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को शहीद करने की साज़िशें होना, बेटियों के मुआमलात में सताया जाना, प्यारे आबाई शहर मक्का पाक को छोड़ कर हिजरत करना, लश्करे कुफ़्फ़ार का वहां भी पीछा कर के

शजरे इस्लाम की आबयारी को रोकने की मज़्मूम कोशिशें करना, मुनाफ़िक़ों की मक्काराना चालें, दूध पीते बेटे ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ का छोटी सी उम्र में विसाल हो जाना और ऐसे बहुत से मुश्किल हालात का सामना रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ज़ाए इलाही पर राज़ी रह कर किया। अल्लाह पाक हमें इन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन

इस्तिख़ारा इस ह़दीसे पाक में इस्तिख़ारा का भी ज़िक्र हुवा यानी इब्ने आदम की सआदत (ख़ुश बख़्ती) में से येह भी है कि वोह अल्लाह से इस्तिख़ारा करे, फिर अल्लाह के फ़ैसले पर दिल से राज़ी हो जाए। जब बन्दा अल्लाह से इस्तिख़ारा करता है, तो जो फ़ैसला होता है, उस पर राज़ी हो जाता है और दिल से मुवाफ़क़त इख़्तियार करता है और जो इस्तिख़ारा तर्क कर देता है, जब उस पर अल्लाह की तक़्दीर वाक़ेअ होती है और वोह उस पर नाराज़ होता है, तो वोह बद बख़्ती में पड़ जाता है।[8] बाज़ अहले इल्म ने येह भी कहा कि कामिल तस्लीम व रिज़ा, इस्तिख़ारा से भी बेहतर है, क्यूंकि इस्तिख़ारा में बन्दे की त़रफ़ से एक क़िस्म की त़लब, इरादा और फ़ैसला मौजूद होता है। इस्तिख़ारे की ह़क़ीक़त येह है कि बन्दा अपने तमाम मुआमलात में अल्लाह से ख़ैर त़लब करे, बल्कि उसे यक़ीन हो कि वोह ख़ुद नहीं जानता कि उस के लिये क्या अच्छा है और क्या बुरा?[9]

इस्तिख़ारे की तालीम दिया करते

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि रसूले अकरम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम को तमाम उमूर में इस्तिख़ारा तालीम फ़रमाते जैसे क़ुरआन की सूरत तालीम फ़रमाते थे।[10]

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : इस्तिख़ारा के माना हैं ख़ैर मांगना या किसी से भलाई का मशवरा करना, चूंकि इस दुआ व नमाज़ में बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से गोया मशवरा करता है कि फ़ुलां काम करूं या न करूं इसी लिये उसे इस्तिख़ारा कहते हैं।[11]

इस्तिख़ारे के दो त़रीक़े इस्तिख़ारे का मुस्तह़ब त़रीक़ा येह है कि इन्सान अहम दीनी या दुन्यवी मुआमले में लोगों से मशवरा कर लेने के बाद, इस्तिख़ारे की दुआ करे, कम अज़ कम येह कहे : ऐ अल्लाह ! मेरे लिये ख़ैर का इन्तिख़ाब फ़रमा, और मुझे मेरे ह़ाल पर न छोड़।

और कामिल त़रीक़ा येह है कि फ़र्ज़ नमाज़ के इलावा दो रक्अत नमाज़ पढ़े, फिर ह़दीस में वारिद मश्हूर दुआ मांगे, तफ़्सील के लिये मकतबतुल मदीना की किताब **“बद शुगूनी”** सफ़ह़ा 44 ता 53 पढ़ लीजिये।

---

(1)ترمذی،4/60،حدیث:2158(2)دیکھئے:مراٰۃ المناجیح،7/118(3)مرقاۃ، 9/166، تحت الحدیث:5303(4)ترمذی،4/178،حدیث:2404(5)مسلم، ص1098،حدیث: 6774(6)الزھد لابن المبارک، ص31، رقم:122 (7)پ2،البقرۃ:216(8)التیسیر شرح جامع صغیر،2/382(9)مرقاۃ المفاتیح، 9/166، تحت الحدیث:5303(10)بخاری، 1/393، حدیث:1162 (11)مراٰۃ المناجیح،2/301۔

हु़ज़ूरे अकरम ﷺ ब हैसिय्यते मुअ़ल्लिम

(बिअसते मुबारका का अ़ज़ीम मक़्सद इ़ल्म को आम करना)

जहालत के अन्धेरों से भरी इस दुन्या में इ़ल्म व आगही की शम्एं जलाने, त़ालिबाने ह़क़ को मारिफ़त व ह़क़ीक़त के जाम पिलाने और भटकती इन्सानिय्यत को अपने ख़ालिक़ का पता बताने के लिये रह़मते आलम صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुअ़ल्लिमे काएनात बन कर तशरीफ़ लाए, आप की तशरीफ़ आवरी का एक अ़ज़ीम मक़्सद इ़ल्म की रौशनी फैलाना भी था, क़ुरआनो सुन्नत में इस मक़्सदे बिअसत की सराह़त मौजूद है, चुनान्चे इरशादे बारी तआला है : ﴿لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ اِذْ بَعَثَ فِیْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِهٖ وَ یُزَكِّیْهِمْ وَ یُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَۚ وَ اِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ(۱۶۴)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक अल्लाह ने ईमान वालों पर बड़ा एह़सान फ़रमाया जब उन में एक रसूल मबऊस फ़रमाया जो उन्ही में से है। वोह उन के सामने अल्लाह की आयतें तिलावत फ़रमाता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब और ह़िक्मत की तालीम देता है अगर्चे येह लोग इस से पहले यक़ीनन खुली गुमराही में पड़े हुए थे।[1]

पहली वह़ी का आग़ाज़ भी पढ़ाई की अहमिय्यत को ख़ूब वाज़ेह़ करता है : ﴿اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَۚ(۱) خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍۚ(۲) اِقْرَاْ وَ رَبُّكَ الْاَكْرَمُۙ(۳) الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِۙ(۴) عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْؕ(۵)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : पढ़ो अपने रब के नाम से जिस ने पैदा किया आदमी को ख़ून की फटक से बनाया पढ़ो और तुम्हारा रब ही सब से बड़ा करीम जिस ने क़लम से लिखना सिखाया आदमी को सिखाया जो न जानता था।[2]

इसी त़रह़ कसीर अह़ादीसे करीमा हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुअ़ल्लिम व उस्ताद होना बयान करती हैं, चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا बयान करते हैं कि एक दिन रसूले पाक صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने एक हु़जरए मुबारका से बाहर आए, फिर मस्जिद शरीफ़ में दाख़िल हुए, वहां दो ह़ल्क़े मुलाह़ज़ा फ़रमाए, एक ह़ल्क़े वाले क़ुरआने पाक पढ़ रहे थे और अल्लाह पाक से दुआ कर रहे थे जब कि दूसरे ह़ल्क़े वाले इ़ल्म सीख और सिखा रहे थे, येह देख कर आप صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : كُلٌّ عَلَى خَيْرٍ، هَؤُلَاءِ يَقْرَءُونَ الْقُرْآنَ، وَيَدْعُونَ اللّٰهَ، فَإِنْ شَاءَ أَعْطَاهُمْ، وَإِنْ شَاءَ مَنَعَهُمْ، وَهَؤُلَاءِ يَتَعَلَّمُونَ وَيُعَلِّمُونَ، وَإِنَّمَا بُعِثْتُ مُعَلِّمًا

यानी येह दोनों ह़ल्क़े भलाई पर हैं, येह वाले क़ुरआने पाक पढ़ते और अल्लाह पाक से दुआ कर रहे हैं, पस अगर अल्लाह

पाक चाहे तो इन्हें अ़ता फ़रमाए और चाहे तो मना कर दे और येह दूसरे वाले इल्म सीखने सिखाने में मसरूफ़ हैं और में मुअल्लिम बना कर भेजा गया हूं। येह फ़रमा कर सीखने सिखाने वालों के साथ बैठ गए।[3]

मेयारी इल्म कौन सा है ?

वाज़ेह रहे कि इल्म की अहमिय्यत मुसल्लम है मगर मेयारी और ग़ैर मेयारी इल्म कौन सा है ? इस का तअय्युन हर एक अपने ज़ौक़, ज़रूरत और फ़हमो फ़िरासत के ह़िसाब से करता है मगर मुअल्लिमे काएनात हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेयारी इल्म उसे क़रार दिया जो "**नफ़ा बख़्श**" हो, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ है : हम ऐसे इल्म से अल्लाह पाक की पनाह मांगते हैं जो नफ़ा न दे।[4] लिहाज़ा जिस भी इल्म को नफ़ा बख़्श होने के मेयार पर जांचा जाएगा वोह नुक़्सान व हलाकत ख़ेज़ी से लाज़िमन मह़फ़ूज़ रहेगा। क़ाबिलिय्यत (Skills) बढ़ाने की मौजूदा डगर में अगर हर शख़्स निय्यत की दुरुस्ती के साथ इस मेयारी इल्म को अपनाए तो मफ़ाद परस्ती का ख़ातिमा होगा और मुआशरा नेक सीरत व हमदर्द अफ़राद से भर जाएगा। मेयारी इल्म सिखाने, पढ़ाने और समझाने में हुज़ूर जाने रह़मत, मुअल्लिमे काएनात صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तालीमी उसूल, तरबियत व दर्स के अन्दाज़ व त़रीक़े भी बड़े शान्दार व ला जवाब और क़ाबिले तह़सीन व लाइक़े इत्तिबाअ हैं, ज़ैल में हम बाज़ को बयान करते हैं।

इल्म सिखाने के मक़्सद की लगन

मक़्सद में कामयाबी के लिये उस की लगन व चाहत बड़ा किरदार अदा करती है, इस्तिक़ामत बजाए ख़ुद एक करामत है, इस्तिक़लाल व हिम्मत कामयाबी की बुन्यादी सीढ़ी है, हम देखते हैं कि रह़मते आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हुक्मे इलाही के मुताबिक़ अपने मक़्स्द के ह़ुसूल, तालीमाते इलाही से अफ़राद को रूशनास करवाने में हमा वक़्त मसरूफ़ रहते, कभी पीछे न हटे। दीनो दुन्या के उलूम सिखाने के अ़ज़ीम मक़्सद में आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की लगन बड़ी मिसाली थी, बड़ी से बड़ी मुश्किल भी राह में ह़ाइल न हो सकी। वाक़िअए त़ाइफ़ हो, शिअबे अबी त़ालिब में मह़सूरी हो, ज़ुल्मो सितम की आंधियां हों या मुशरिकीन की मालो दौलत की पेशकश हो कोई शै भी मुअल्लिमे इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सद्दे राह न हो सकी।

जां सोज़ी और दर्दमन्दी

मीर कारवान के लिये निगाह की बुलन्दी, सुख़न की दिल नवाज़ी के साथ साथ जान की पुरसोज़ी व दर्दमन्दी इन्तिहाई अहम है, हुज़ूरे नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी क़ौम को गुमराही से निकालने, उन्हें राहे ह़क़ पर चलाने और उन की तालीमो तरबियत के लिये सबो रोज़ दिल गुदाज़ कैफ़िय्यत में गुज़ारते रहे। इस को समझने के लिये येह ह़दीस शरीफ़ हमारी रहनुमाई करती है। चुनान्चे हुज़ूर रह़मते आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरी मिसाल उस शख़्स की त़रह है जिस ने आग जलाई और जब उस आग ने इर्द गिर्द की जगह को रौशन कर दिया तो उस में पतंगे और ह़शरातुल अर्ज गिरने लगे, वोह शख़्स उन को आग में गिरने से रोकता है और वोह उस पर ग़ालिब आ कर आग में धड़ा धड़ गिर रहे हैं, पस येह मेरी मिसाल और तुम्हारी मिसाल है, मैं तुम्हारी कमर पकड़ कर तुम्हें जहन्नम में जाने से रोक रहा हूं और कह रहा हूं कि जहन्नम के पास से हट जाओ ! जहन्नम के पास से हट जाओ ! और तुम लोग मेरी बात न मान कर (पतंगों के आग में गिरने की त़रह़) जहन्नम में गिरे चले जा रहे हो।[5]

बात समझाने की कामिल महारत

दूसरों को सिखाने के लिये येह महारत बेह़द ज़रूरी है कि सिखाने वाला बात समझाने की पूरी सलाह़िय्यत रखता हो और तफ़्हीम के जुम्ला तक़ाज़ों से आगाह हो। इस तअल्लुक़ से हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शख़्सिय्यत में महारत ब दर्जा कमाल मौजूद थी, अव्वल से आख़िर तक आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गुफ़्तगू निहायत साफ़ होती, जामेअ गुफ़्तगू फ़रमाते यानी अल्फ़ाज़ कम मगर पुर तासीर होते, आप को जवामेउल कलिम की ख़ुसूसिय्यत अ़ता की गई थीं यानी आप कसीर मफ़्हूम व मआनी को चन्द लफ़्ज़ों में समझा देते।

ह़ज़रते उम्मे मअबद رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا जिन्हों ने बड़े शानदार त़रीक़े से हुस्नो जमाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बयान किया है, वोह फ़रमाती हैं : आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शीरीं कलाम और वाज़ेह बयान

थे, न कम गो थे और न ज़ियादा गो थे और गुफ़्तगू ऐसी थी जैसे मोती के दाने पिरो दिये गए हों। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا बयान करती हैं : रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ والہ وسلم के कलिमात में फ़साह़तो बलाग़त वाज़ेह थी, आप ठहर ठहर कर गुफ़्तगू फ़रमाते, अगर कोई आप صلی اللہ علیہ والہ وسلم के अल्फ़ाज़ शुमार करना चाहता तो कर सकता था।(6)

इफ़्हामो तफ़्हीम में नर्म रवय्या

तालीमो तरबियत में नर्म रवय्या तीर ब हदफ़ का काम करता है, क्यूंकि नर्मी फ़लाह़ व कामयाबी की ज़मानत फ़राहम करती है, सख़्ती से वोह मक़ासिद ह़ासिल नहीं हो पाते जो नर्मी के साथ समझाने से ह़ासिल होते हैं। रह़मते कौनैन صلی اللہ علیہ والہ وسلم इन्तिहाई नर्म दिल थे। सिवाए महारिमे इलाहिय्या व हुदूदे शरअ के सख़्ती नहीं फ़रमाते, प्यार से समझाते, डांट डपट न करते, मुजस्समे राफ़त व रह़मत थे।

अल्लाह पाक क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है :

﴿فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ
لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۪ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَ اسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَ شَا
وِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ (۱۵۹)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो कैसी कुछ अल्लाह की मेहरबानी है कि ऐ मह़बूब तुम उन के लिये नर्म दिल हुए और अगर तुन्द मिज़ाज सख़्त दिल होते तो वोह ज़रूर तुम्हारे गिर्द से परेशान हो जाते तो तुम उन्हें मुआफ़ फ़रमाओ और उन की शफ़ाअत करो और कामों में उन से मशवरा लो और जो किसी बात का इरादा पक्का कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो बेशक तवक्कुल वाले अल्लाह को प्यारे हैं।(7)

ह़ुज़ूरे अकरम, हादिये आलम صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने तालीम देने का ऐसा अमली अन्दाज़ अ़ता फ़रमाया है कि जिस में न डांट डपट है और न ही झिड़कियां और मार धाड़ है। शवाहिद के त़ौर पर कसीर अह़ादीसे मुबारका पेश की जाती है, सरे दस्त एक रिवायत मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे

ह़ज़रते मुआविया बिन ह़कम सुलमी رضی اللہ عنہ नमाज़ अदा फ़रमा रहे थे, दौराने नमाज़ किसी को छींक आ गई, ह़ज़रते मुआविया बिन ह़कम ने "يَرْحَمُكَ الله" कहा तो इर्द गिर्द मौजूद नमाज़ियों को तशवीश हुई और अपने अन्दाज़ से आप को इस चीज़ का एह़सास दिला दिया, नमाज़ से फ़राग़त के बाद मुअ़ल्लिमे काएनात صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने आप को अपने पास बुलाया। इस मौक़ेअ पर आप फ़रमाते हैं : मैं ने आप صلی اللہ علیہ والہ وسلم से पहले और आप के बाद आप से बढ़ कर सिखाने वाला नहीं देखा, अल्लाह पाक की क़सम ! न तो आप ने मुझे झिड़का, न मारा और न डांटा बल्कि आप صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने फ़रमाया : बेशक इस नमाज़ में लोगों की बात क़बूल करने की सलाह़िय्यत नहीं है, नमाज़ तो तस्बीह़ व तक्बीर और क़िराअते क़ुरआन का नाम है।(8)

मुख़ात़ब की ज़ेहनी सलाह़िय्यत और अह़वाल का ख़याल

सिखाने के अमल में मुख़ात़ब की ज़ेहनी सलाह़िय्यत और ज़ाती अह़वाल का ख़याल रखना भी बेहतर नताइज फ़राहम करता है, लोग मुख़्तलिफ़ ख़यालात और त़बीअतों के ह़ामिल होते हैं, मुअ़ल्लिम को इस का ध्यान रखना नागुज़ीर है, कुतुबे अह़ादीस व सीरत बताती हैं कि तालीमो तदरीस और तफ़्हीमो तरग़ीब और सुवालात के जवाबात देने में रसूले अकरम صلی اللہ علیہ والہ وسلم मुख़ात़ब की ज़ेहनी सलाह़िय्यत और मिज़ाज का पूरा लिह़ाज़ रखते, सामने वाले की वुस्अ़ते ज़र्फ़ी और अमली ह़ैसिय्यत देख कर बात करते। बच्चों, जवानों और बूढ़ों की सोच समझ के मुत़ाबिक़ मुआमला फ़रमाते और येही वज्ह है कि मुअ़ल्लिमे काएनात صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने साइलीन व मुख़ात़िबीन की अमली कैफ़िय्यात को देखते हुए मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ पर मुख़्तलिफ़ चीज़ों को अफ़्ज़ल बताया, जिस में जो कमी मह़सूस की उसे ह़िक्मत के साथ उसी बात की तरग़ीब इरशाद फ़रमाई। किसी को फ़रमाया अफ़्ज़ल अमल ज़िक्र है, कभी बताया अफ़्ज़ल शै रात की नमाज़ है, किसी के लिये वालिदैन के साथ ह़ुस्ने सुलूक करना अफ़्ज़ल इरशाद हुवा और किसी को नमाज़ का अफ़्ज़ल होना बताया।

मा तह़तों पर इन्फ़िरादी तवज्जोह

तालीमो तरबियत में अपने मा तह़तों, शागिर्दों और मुरीदों को इन्फ़िरादी तवज्जोह देने की भी बड़ी अहमिय्यत है। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम को नाम ले कर बुलाते, कभी मह़ब्बत वाला नाम रखते जैसे ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا को हुमैरा और आइश वग़ैरा कहना, किसी को अबू तुराब, अबू हुरैरा वग़ैरा के अल्क़ाबात व कुन्नियतों से नवाज़ा, बाज़ अफ़राद की इन्फ़िरादी ख़ुसूसिय्यत का एतिराफ़ किया, उन की तह़सीन फ़रमाई और उन के फ़ज़ाइल बयान किये। येह ऐसे उमूर हैं जो सिखाने और सीखने वाले के दरमियान अपनाइय्यत को जन्म देते हैं। यूंही हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनाइय्यत व तअल्लुक़ की मज़बूती और तालीमो तअल्लुम के अमल को ताम करने के लिये कभी कभी ह़ज़रात सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से शाइस्ता अन्दाज़ में मिज़ाह़ भी फ़रमाते, फ़रह़त व इंबिसात़ पैदा करने के लिये पुर लुत़्फ़ जुम्ले कहते। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ عَنْہُ ने बयान किया कि रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : يَا ذَا الْاُذُنَيْنِ यानी ऐ दो कानों वाले।[9] नीज़ आप ही बयान करते हैं : रसूले पाक साह़िबे लौलाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे साथ बड़े प्यार से और घुल मिल कर रहते थे ह़त्ता कि मेरे छोटे भाई से फ़रमाते : يَا اَبَا عُمَيْرٍ، مَا فَعَلَ النُّغَيْرُ ऐ अबू उमैर ! तुम्हारे बुल्बुल को क्या हुवा।[10]

क़ौलो फ़ेल में मुत़ाबक़त

क़ौलो फ़ेल का तज़ाद बड़े बड़ों को लाइक़े इत्तिबाअ नहीं रहने देता, सीखने वाले भी उसे अपने क़ुलूब व इज़्हान में जगह नहीं देते और ऐसे मुअल्लिम की बात में तासीर नहीं रहती। लिहाज़ा मुअल्लिम व उस्ताद को बा अमल व बा किरदार होना चाहिये, उस के अफ़्आल उस के अक़्वाल की तस्दीक़ करें। इस मुआमले में भी हुज़ूर मुअल्लिमे इन्सानिय्यत صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शख़्सिय्यत बे दाग़ है, आप के क़ौलो फ़ेल की यक्सानिय्यत व यगानिय्यत की गवाही दुश्मन भी सादिक़ व अमीन कह कर देते थे। आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पूरी ज़िन्दगी में क़ौलो फ़ेल में तज़ाद की एक भी मिसाल नहीं मिलती लिहाज़ा उस्ताद को अपनी बात और अमल में तज़ाद से हमेशा बचना चाहिये।

आसानी पहुंचाना, मुश्किल से बचाना

हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : يَسِّرُوا وَلَا تُعَسِّرُوا وَبَشِّرُوا وَلَا تُنَفِّرُوا यानी आसानी पैदा करो, तंगी न करो, ख़ुशख़बरी दो, नफ़रत पैदा न करो।[11] एक रिवायत में وَسَكِّنُوْا के अल्फ़ाज़ हैं यानी सुकून पहुंचाओ। असातिज़ा को चाहिये कि त़लबा पर आसानी करें, तंगी न करें, ऐसा काम न करें कि वोह आप से बदज़न व मुतनफ़्फ़िर हों। हुज़ूर मुअल्लिमे इन्सानिय्यत صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सीखने वालों पर आसानी के लिये मुख़्तलिफ़ त़रीक़े अपनाते, अपनी गुफ़्तगू में मिसालें देते, नक़्शों से समझाते, वाक़िआत सुनाते और कभी पहेली नुमा सुवाल भी पूछते वग़ैरा वग़ैरा।

रह़मते दो आलम, मुअल्लिमे काएनात صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा इन्सानिय्यत के लिये ऐसा मीनारे नूर है जो हर दौर की तारीकियों में रहनुमाई का फ़रीज़ा अन्जाम देता रहेगा। आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तालीम को मह़ज़ ज़बान व बयान का फ़न नहीं बल्कि तज़्कियए नफ़्स, इस्लाह़े क़ल्बो रूह़, और तामीरे किरदार का ज़रीआ बनाया। आप का हर क़ौल, हर फ़ेल, हर अन्दाज़े तरबियत एक ऐसा दरे ह़िक्मत है जिस से सदियां मुस्तफ़ीद होती रही हैं और ता क़ियामत होती रहेंगी। आज जब कि दुन्या जदीद तालीमो महारत की दौड़ में मसरूफ़ है, हमें मुअल्लिमे आज़म صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तालीमात की रौशनी में एक ऐसा तालीमी माह़ौल तश्कील देना होगा जहां इल्म के साथ ह़िल्म, फ़हम के साथ रह़म, और हुनर के साथ ख़ैर ख़्वाही को भी जगह दी जाए। हमें चाहिये कि तालीमो तरबियत के हर मरह़ले पर उस्वए रसूल को मेयार बनाएं। मुअल्लिमे काएनात صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तालीमात अगर हमारे निज़ामे तालीम की रूह़ बन जाएं तो यक़ीनन येह मुआशरा इल्मो इरफ़ान का गुल्ज़ार और इन्सानिय्यत का अक्कास बन जाएगा। اِنْ شَآءَ اللہ

---

(1) پ4، اٰل عمرٰن:164 (2) پ30، العلق:1 تا5 (3) ابن ماجہ، 1/150، حدیث: 229 (4) مسلم، ص1118، حدیث:6906 (5) مسلم، ص965، حدیث:5957 (6) بخاری، 2/491، حدیث:3567 (7) پ4، اٰل عمرٰن:159 (8) مسلم، ص 215، حدیث:1199 مختصراً (9) ابو داؤد، 4/390، حدیث:5001 (10) بخاری، 4/155، حدیث:6203 ملخصاً (11) بخاری، 1/42، حدیث:69۔

तब्लीग़े दीन में रसूलुल्लाह صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم की ह़िक्मते अमलियां

(Strategic Methods of Propagation)

नबिय्ये करीम صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने इस्लाम की दावत व तब्लीग़ के लिये मुख़्तलिफ़ हकीमाना त़रीक़ों, तदाबीर और तरबियती असालीब को इख़्तियार फ़रमाया ताकि लोग बग़ैर ज़ोर ज़बरदस्ती के, अ़क़्ल, फ़हम और दिल की गहराई से दीने ह़क़ को क़बूल करें।

तब्लीग़े दीन का अमल इस्लाम की रूह़ है और नबिय्ये करीम صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم की ह़याते त़य्यिबा इस फ़रीज़े की तक्मील का कामिल नमूना है। दीन की दावत एक ऐसा फ़न है जिस में ह़िक्मत, बसीरत, सब्र, तदरीज और ह़ालात की रिआयत बुन्यादी अनासिर हैं। रसूलुल्लाह صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने मुख़्तलिफ़ मराह़िल में मुख़्तलिफ़ ह़िक्मते अमलियां अपनाईं जो दावते दीन को मुअस्सर, पाईदार और हमागीर बनाने में अहम किरदार अदा करती हैं।

आप صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने दावते इस्लाम का आग़ाज़ अल्लाह करीम के हुक्म व तालीम के मुत़ाबिक़ ख़ामोशी से, महदूद अफ़राद में किया, फिर आहिस्ता आहिस्ता एलाने आम की त़रफ़ बढ़े। इस ह़िक्मते अमली से लोग ज़ेहनी त़ौर पर तय्यार होते गए और मुख़ालफ़त के लिये वक़्त मिला।

आप صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم हर शख़्स की अ़क़्ल, इल्म और ह़ालात के मुत़ाबिक़ अन्दाज़े गुफ़्तगू इख़्तियार फ़रमाते थे। आप صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم का उस्लूब निहायत नर्म, शफ़ीक़ और ख़ुश गुफ़्तार था, जो मुख़ालिफ़ को भी क़ाइल कर देता था। क़ुरआने करीम ने भी आप के इस वस्फ़ पर तारीफ़ फ़रमाई:

﴿فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो कैसी कुछ अल्लाह की मेहरबानी है कि ऐ महबूब तुम उन के लिये नर्म दिल हुए।(1) आप صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने तब्लीग़ सिर्फ़ बातों से नहीं की, बल्कि अपने अमल, दियानत, सच्चाई, ह़िल्म और वफ़ादारी से लोगों को मुतअस्सिर किया, येही वज्ह थी कि आप मुख़ालिफ़ीन में भी सादिक़ व अमीन मश्हूर थे और उसी शोहरत ने नुबुव्वत के एलान को कुछ ह़द तक आसान बनाया। तब्लीग़ के दौरान त़ानो तशनीअ, ज़ुल्मो सितम, बायकॉट और त़रह़ त़रह़ की अज़िय्यतों का सामना हुवा लेकिन आप ने सब कुछ बरदाश्त किया और दावत से पीछे न हटे। आप صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم दावते दीन के लिये मुनासिब मौक़अ से फ़ाएदा उठाते, ह़ज, मेलों, क़बाइल के वुफ़ूद, बाज़ार अल ग़रज़ हर जगह मौक़अ ब मौक़अ इस्लाम की दावत देते, इन्ही मवाक़ेअ में मदीना के औस व ख़ज़रज क़बाइल से बैअत ली, जिसे बैअते उक़्बए ऊला व सानिया कहते हैं, जो दर ह़क़ीक़त हिजरत और मदीना में इस्लामी रियासत के क़ियाम की बुन्याद थी। आप صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने ग़ैर मुस्लिम बादशाहों, सरदारों को ख़ुत़ूत़ लिखे और उन के पास सह़ाबा को भेजा। आप صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने दावत के लिये मिसालें, क़िस्से, सुवाल जवाब,

ख़ामोशी, तजन्नुब, तबस्सुम, हर क़िस्म के अन्दाज़ को मौक़अ महल के लिहाज़ से इस्तिमाल किया। तब्लीग़ में तरतीब से काम लिया पहले अल्लाह की वहादानिय्यत और आख़िरत पर ईमान की दावत, फिर नमाज़, अख़्लाक़, मुआशरत वग़ैरा की तालीम। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दलाइल और हिक्मत के साथ दावते देते। किसी पर ज़ोर ज़बरदस्ती न करते। अल ग़रज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तब्लीग़े दीन के लिये जो भी अन्दाज़ और हिक्मते अमलियां इख़्तियार फ़रमाईं उन के गहरे और बर वक़्त असरात मुरत्तब हुए। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की येह हिक्मते अमलियां न सिर्फ़ उस वक़्त मुअस्सर थीं बल्कि आज के दौर में भी मुबल्लिग़ीने इस्लाम के लिये बेहतरीन राहनुमा उसूल फ़राहम करती हैं। रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते तय्यिबा के मुतालआ से आप की जो तब्लीग़ी हिक्मते अमलियां और मुबल्लिग़ाना औसाफ़ अयां होते हैं उन की एक तवील फ़ेहरिस्त है, अलब्त्ता ज़ैल में चन्द तब्लीग़ी हिक्मते अमलियां मुख़्तसरन मुलाहज़ा कीजिये:

तदरीज यानी मरहलावार दावत : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हकीमाना तब्लीग़ी हिक्मते अमली

तब्लीग़े दीन के लिये नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तदरीज यानी मरहलावार दावत को अपनाया। येह हिक्मते अमली इन्सानी नफ़्सियात, मुआशरती साख़्त और ज़ेहनी तरबियत को सामने रखते हुए निहायत मौज़ूं और मुअस्सर साबित हुई। तदरीज का मक़्सद मुख़ातब को शिद्दत या सख़्ती के बजाए नर्मी, वक़्त और तरतीब से उस हक़ की तरफ़ लाना है जो उस के क़ल्बो अमल को मुकम्मल तौर पर बदल दे।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दावत का आग़ाज़ तौहीद, रिसालत और आख़िरत जैसे बुन्यादी अक़ाइद से किया। नमाज़, रोज़ा, ज़कात वग़ैरा का हुक्म बाद में नाज़िल हुवा। चुनान्चे मक्कए मुकर्रमा के 13 साल अक़ाइद की इस्लाह और अख़्लाक़ी तरबियत पर सर्फ़ किये गए। इसी तरह शराब की हुर्मत और नमाज़ व जिहाद की फ़र्ज़िय्यत भी तदरीजन हुई, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुआशरती, इक़्तिसादी और सियासी अहकाम भी तदरीजन सिखाए। जैसे सूद, यतीमों के हुक़ूक़, विरासत के क़वानीन वग़ैरा सब तदरीजन नाज़िल हुए। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी भी मुख़ातिबीन को बयक वक़्त तमाम अहकाम और ज़िम्मेदारियां नहीं सुनाईं बल्कि उन की अक़्लो ज़र्फ़ के मुताबिक़ आहिस्ता आहिस्ता दावत दी, ताकि दलाइल हज़म हों, मिज़ाज क़बूल करे और तबीअत आमादा हो जाए। येह तदरीजी अन्दाज़ न सिर्फ़ तालीमो तरबियत के बाब में अहम है बल्कि येह दीन की रहमत और सहूलत पसन्दी का भी इज़्हार है।

तदरीज की हिक्मते अमली आज के दौर में भी इन्तिहाई मुअस्सिर है। जब एक मुसलमान को दीनी अमल की तरफ़ बुलाया जाए तो फ़ौरी और मुकम्मल तब्दीली की तवक़्क़ोअ, अक्सर रद्दे अमल पैदा करती है। बेहतर तरीक़ा येह है कि ❁ पहले इस के दिल में अल्लाह की महब्बत और ख़ौफ़ पैदा किया जाए। ❁ फिर आहिस्ता आहिस्ता फ़राइज़ की अहमिय्यत बताई जाए। ❁ किसी ग़लत आदत (जैसे नशा, झूट, बद दियानती) से छुटकारे के लिये नफ़्सियाती और अमली मदद फ़राहम की जाए। ❁ बच्चों, नौ उम्रों और नए मुसलमानों के साथ भी येही तदरीजी तरबियत मुअस्सिर होती है।

किरदार की पाकीज़गी और अमली नमूना

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तब्लीग़ी हिक्मत अमलियों में जो अम्र सब से ज़ियादा दिलों को मुसख़्ख़र करता है, वोह आप का बे दाग़, शफ़्फ़ाफ़ और हर ऐब से पाक किरदार है। तब्लीग़े दीन का अस्ल मुअस्सिर ज़रीआ क़ौल के बजाए अमल और किरदार होता है। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी अमली ज़िन्दगी में जिस बे मिसाली अख़्लाक़ और किरदार का मुज़ाहरा फ़रमाया, वोह ख़ुद एक ज़िन्दा व जावेद दावत था। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बान से निकलने वाला हर हर्फ़ लोगों के दिल पर असर करता, क्यूंकि इस के पीछे वोह किरदार खड़ा होता था जिस पर न सिर्फ़ मक्का के सरदार बल्कि आप के बदतरीन मुख़ालिफ़ीन भी उंगली न उठा सके।

क़ुरआने मजीद ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के किरदार की अज़मत को इन अल्फ़ाज़ में सराहा : ﴿وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِیْمٍ(۴)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक तुम्हारी ख़ूबू बड़ी शान की है।(2) येह आयत इस हक़ीक़त को उजागर करती है कि अल्लाह तआला ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुलन्द तरीन अख़्लाक़ पर पैदा फ़रमाया ताकि आप की सीरत और किरदार बज़ाते ख़ुद इस्लाम की दावत का ज़रीआ बनें। इसी लिये अल्लाह तआला ने तमाम मुसल्मानों को आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उस्वए हसना की पैरवी की तरग़ीब दी : ﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है।[3]

सीरते तय्यिबा में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के किरदार की पाकीज़गी के बे शुमार वाक़िआत मौजूद हैं। नुबुव्वत से पहले क़ुरैश ने आप को "अल सादिक़" (सच्चे) और "अल अमीन" (अमानत दार) का लक़ब दिया, जो इस बात की दलील है कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सच्चाई और दियानतदारी ज़मानए जाहिलिय्यत में भी मुसल्लमुस्सुबूत थी। हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا ने जब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निकाह किया तो उन्हों ने कहा कि आप फ़ितरी नेकी, सच्चाई, दियानत और हुस्ने सुलूक के पैकर हैं। पहली वही के बाद जब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم घर तशरीफ़ लाए तो हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا ने आप के किरदार ही को तसल्ली की बुन्याद बनाया, जैसा कि हदीस में मज़्कूर है : فَوَاللّٰهِ لَا يُخْزِيكَ اللّٰهُ أَبَدًا، فَوَاللّٰهِ إِنَّكَ لَتَصِلُ الرَّحِمَ، وَتَصْدُقُ الْحَدِيثَ، وَتَحْمِلُ الْكَلَّ (अल्लाह आप को कभी रुस्वा नहीं करेगा, क्यूंकि आप सिलए रेहमी करते हैं, सब बोलते हैं, आप कमज़ोर का बोझ उठाते हैं।[4]

मक्की दौर में जब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तौहीद का पैग़ाम दिया तो कुफ़्फ़ारे मक्का ने इस की सख़्त मुख़ालफ़त की, मगर आप के किरदार पर कभी एतिराज़ न कर सके। येही वज्ह है कि जब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जबले सफ़ा पर खड़े हो कर फ़रमाया : "**अगर मैं कहूं कि उस पहाड़ के पीछे एक लश्कर है, तो क्या तुम मेरी बात मानोगे ?**" तो सब ने बयक ज़बान कहा : "हां, हम ने आप को कभी झूट बोलते नहीं पाया।"[5] येह किरदार ही था जिस ने इन्कार करने वाले दिलों को भी सच्चाई का क़ाइल किया, ख़्वाह वोह मानें या न मानें।

अमली ज़िन्दगी में किरदार की पाकीज़गी की ततबीक़ उस वक़्त इन्तिहाई ज़रूरी है, जब हम देखते हैं कि मुसलमानों की अक्सरियत क़ौलो फ़ेल के तज़ाद का शिकार है। दीन की दावत देने वाले, अगर ख़ुद बद दियानती, बद अख़्लाक़ी, या दुन्या परस्ती में मुब्तला हों, तो उन की दावत का कोई असर नहीं होता। मगर जो दाई अपने किरदार से सच्चाई, दियानत, अफ़्व, इन्साफ़, हिल्म और सब्र का मुज़ाहरा करता है, वोह बग़ैर बोले लोगों को मुतअस्सिर कर देता है।

किरदार की पाकीज़गी सिर्फ़ इन्फ़िरादी नहीं बल्कि इज्तिमाई इस्लाह का ज़रीआ है। नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस हिक्मते अमली के ज़रीए एक बिगड़े हुए मुआशरे को अख़्लाक़ी इन्क़िलाब से गुज़ारा। येही हिक्मते अमली आज के दाइयाने इस्लाम के लिये रौशनी का मीनार है। अगर हम अपनी दावत को मुअस्सर बनाना चाहते हैं तो किरदार की पाकीज़गी को अपनी तरजीहे अव्वल बनाना होगा।

हमारे मुबल्लिग़ीन को चाहिये कि वोह **इख़्लास, अदल, नर्मी, बरदाश्त, सच्चाई** और ख़िदमते ख़ल्क़ जैसे औसाफ़ को ख़ुद में पैदा करें ताकि उन की बात दिलों पर असर करे।

वालिदैन, असातिज़ा और राहनुमा अगर बच्चों और नौजवानों की सीरत के उस्वा के साथ अमली ज़िन्दगी में भी हुस्ने अख़्लाक़, नमाज़, सदाक़त, दियानतदारी का अमली नमूना पेश करें, तो उन की दावत ज़ियादा मुअस्सिर होगी।

क़ौलो फ़ेल के तज़ाद से दावत बे असर हो जाती है। तलबा, बच्चे या सामेइन जब दाई को ख़ुद दियानत, सच्चाई, सब्र, अफ़्व, इन्फ़ाक़ और ख़िदमते ख़ल्क़ पर अमल करते देखते हैं, तो वोह मुतअस्सिर होते हैं, और ला शुऊरी तौर पर इस अमल को अपनाने लगते हैं।

बक़िय्या अगले शुमारे में

(1)پ4، آلِ عمرٰن:159 (2)پ29، القلم:4 (3)پ21، الاحزاب:21 (4)بخاری، 3/384، حدیث:4953 (5)بخاری، 3/294، حدیث:4770۔

आख़िरी नबी ﷺ
मुह़म्मदे अ़रबी
एक अज़ीम नफ़्सिय्यात शनास
(क़िस्त : 01)

साइकोलॉजी की तारीख़ इतनी ही पुरानी है, जितना ख़ुद इन्सान, अलबत्ता सब से पहले उसे बा क़ाइदा बतौरे इल्म यूनान के मशहूर फ़लासफ़र अरस्तूने मुतआरिफ़ करवाया । उसे ही साइकोलॉजी का पहला बानी कहा जाता है।

ह़क़ीक़त येह है कि हज़ारों उलूम की तरह साइकोलॉजी भी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के दरियाए इल्म में से एक क़तरा है । अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के दुन्या में आने का बुन्यादी मक़्सद ही रूह़, नफ़्स, ज़ात और मुआशरे की इस्लाह़ है, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام ने जिस हुस्नो ख़ूबी से लोगों के दिलो दिमाग़, रूह़ और नफ़्स की इस्लाह़ फ़रमाई और उस के जितने देर पा असरात मुआशरे पर सब्त फ़रमाए हैं, ऐसे नताइज लोगों की साइकोलॉजीकल ह़ालत समझे बग़ैर मुम्किन ही नहीं। आख़िरी नबी, ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हम गिरोहे अम्बिया को हुक्म दिया गया कि हम लोगों से उन की अ़क़्ल के मुताबिक़ बात करें।[1] (ग़ौर फ़रमाइये ! सामने वाले की साइकोलॉजीकल ह़ालत जाने बग़ैर उस की अ़क़्ल के मुताबिक़ बात करना कैसे मुम्किन हो सकता है ?)

पहले नबियों पर नाज़िल होने वाले सह़ीफ़ों की ऐसी इबारात भी हमें मिलती हैं जो जदीद साइकोलॉजी के लिये बेहतरीन राहनुमा की ह़ैसिय्यत रखती हैं । मसलन Self Enhancement & Management के लिये येह नायाब इक़्तिसाब (Quotation) देखिये ! ह़ज़रते वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अ़क़्लमन्द को चाहिये कि 4 घड़ियों से कभी ग़ाफ़िल न हो (यानी अपनी डेली रूटीन में येह चार घड़ियां लाज़िमी शामिल करे) :

1 سَاعَةٍ يُنَاجِي فِيهَا رَبَّه यानी वोह घड़ी कि इस में अपने रब से मुनाजात करे 2 وَسَاعَةٍ يُحَاسِبُ فِيهَا نَفْسَه यानी वोह घड़ी कि उस में ख़ुद का जाएज़ा ले 3 وَسَاعَةٍ يَخْلُو فِيهَا مَعَ اِخْوَانِهِ الَّذِينَ يُخْبِرُونَهُ بِعُيُوبِه यानी एक घड़ी वोह कि उस में दोस्तों के पास बैठे ताकि वोह उसे उस के ऐब बताएं 4 وَسَاعَةٍ يَخْلُو فِيهَا بَيْنَ نَفْسِهٖ وَبَيْنَ لَذَّاتِهَا فِيمَا يَحِلُّ यानी चौथी घड़ी वोह कि उस में सिर्फ़ ख़ुद को वक़्त दे, अपने नफ़्स की जाइज़ ख़्वाहिशात पूरी करे।[2]

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! हमारे प्यारे नबी, ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नबियों के सरदार हैं, अल्लाह पाक ने आप को अगलों पिछलों के उलूम अ़ता फ़रमाए। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दीगर उलूम की तरह इल्मे नफ़्सियात के भी सिर्फ़ माहिर ही नहीं बल्कि हादी व राहनुमा हैं। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुन्या में तशरीफ़ लाने से पहले और बाद के मुआशरे का साइकोलॉजीकल मुतालआ कीजिये ! किस तरह आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मुर्दा क़ौम को ज़िन्दा कर दिया, कैसे ज़ात पात में बटे हुओं को उख़ुव्वत व भाई चारे के रिश्ते में बांध दिया, वोही लोग कि जिन के ग़ज़बनाक जज़्बात का नतीजा सालहा साल की जंगों की शक्ल में निकलता था, उन्हें अ़दलो इन्साफ़ का पैकर बनाया, वोह जिन का मक़्सद सिर्फ़ कमाना, खाना और लड़ना था, उन्हें आलमगीर मक़्सद (Vision Universal) अ़ता फ़रमा दिया।

वोह दानाए सुबुल, ख़त्मे रुसुल, मौलाए कुल जिस ने
ग़ुबारे राह को बख़्शा फ़रोग़े वादिये सीना

वज़ाह़त : यानी वोह ह़क़ की राहें जानने वाले, सब के आक़ा, आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिन्हों ने ज़र्रों को वादिये सीना जैसी बुलन्दी अ़ता फ़रमा दी।

यक़ीनन येह इन्क़िलाब, मुआशरे की येह नई तश्कील, रूह़ की ताज़गी, इन्सान की तामीरे नौ लोगों की नफ़्सिय्यात से

वाक़िफ़िय्यत और उस की रिआयत के बग़ैर बज़ाहिर मुम्किन नहीं है। बेशक हमारे प्यारे नबी, ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दूसरों की नफ़्सिय्यात पहचानने में इन्तिहाई माहिर और जदीद साइकोलॉजी के लिये बेहतरीन हादी व राहनुमा हैं। बत़ौरे माहिरे नफ़्सिय्यात आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरत पर मुख़्तलिफ़ पहलूओं से ग़ौर किया जा सकता है, अलबत्ता आज हम सीरते मुस्त़फ़ा के सिर्फ़ एक पहलू नफ़्सियाती मुआलजा (Psychotherapy) पर गुफ़्तगू करेंगे। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों का साइकोलॉजीकल ट्रीटमेन्ट किस अन्दाज़ से किया करते थे, इस की चन्द मिसालें मुलाह़ज़ा कीजिये !

1 साइकोलॉजीकल चेकअप : प्यारे नबी, रसूले हाशमी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते त़य्यिबा का एक ख़ूबसूरत पहलू है कि आप ख़्वाब को बहुत अहमिय्यत देते थे, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के ख़्वाब सुनना और उन की ताबीर बताना आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मामूलात का ह़िस्सा था। ह़ज़रते समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े फ़ज्र के बाद हमारी जानिब रुख़ करते और फ़रमाते : किस ने रात ख़्वाब देखा है ? जिस ने ख़्वाब देखा होता वोह बयान कर देता था।[3]

इस अदाए नबवी की यक़ीनन बहुत ह़िक्मतें होंगी, अलबत्ता इस में एक साइकोलॉजीकल पहलू भी है, जदीद साइकोलॉजी का मानना है कि किसी फ़र्द की साइकोलॉजीकल कन्डीशन का पूरा इन्ह़िसार उस के ला शुऊर पर है, येह ला शुऊर का कोई उल्झाव ही होता है जो किसी नफ़्सियाती मरज़ की सूरत में उभर कर सामने आता है और किसी के भी ला शुऊर को जांचने के लिये ख़्वाब की तह़लील (Dream interpretation) एक मुअस्सिर ज़रीआ है। एक माहिरे नफ़्सियात कहता है :

Dreams Are roads that lead to unconsciousness

यानी ख़्वाब ऐसी शाहराहें हैं जो ला शुऊर में जाती हैं।

शायद इसी ह़क़ीक़त के पेशे नज़र ख़्वाबों को ला शुऊर की ज़बान भी कहा जाता है। बहरह़ाल ! किसी की साइकोलॉजीकल ह़ालत का अन्दाज़ा लगाने का एक बेहतरीन त़रीक़ा है कि उस के ख़्वाब सुनें, उन को परखें और उन की ताबीर निकालें, सामने वाले की साइकोलॉजीकल कन्डीशन वाज़ेह़ हो जाएगी।

2 इन्तिक़ालियत (Transference) : जदीद साइकोलॉजी में येह एक त़रीक़ए इलाज है, इसे 1890ई में दरयाफ़्त किया गया, इन्तिक़ालियत का माना है : ढलना। इस नफ़्सियाती त़रीक़ए इलाज में मुआलिज सामने वाले के साथ एक जज़्बाती लगाव पैदा करता है, मसलन ख़ुद को सामने वाले के लिये एक वालिद के दर्जे पर उतार लेता है, उस के दिल में ऐसी ही मह़ब्बत उभारता है जो एक बेटे को अपने वालिद के साथ होती है, फिर उसी जज़्बाती लगाव के ज़रीए सामने वाले की साइकोलॉजीकल ह़ालत तब्दील कर के उसे मुस्बत बना देता है।

आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अरबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पाकीज़ा ज़िन्दगी में इस अन्दाज़ से इस्लाह़ करने की बहुत मिसालें मिलती हैं :

◎ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : एक मरतबा एक आराबी बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा, उस ने आप से मदद चाही, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की मदद की, उसे कुछ अ़त़ा फ़रमाया, फिर पूछा : मैं ने तुम से भलाई की ? आराबी बोला : नहीं, न आप ने भलाई की, न अच्छे त़रीक़े से पेश आए। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को उस की इस गुस्ताख़ी पर ग़ुस्सा आया, बाज़ उस की त़रफ़ लपके मगर प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें मना फ़रमा दिया। कुछ देर बाद आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم घर तशरीफ़ ले गए तो उस आराबी को भी अपने घर बुला लिया, उस के साथ बातें कीं, फिर उसे और भी कुछ अ़त़ा फ़रमाया, फिर पूछा : क्या मैं ने तुम से भलाई की ? आराबी बोला : जी हां ? अल्लाह पाक आप को जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सामने इज़्हार फ़रमाया कि आराबी ने अपने जुम्लों से रुजूअ कर लिया है और अब येह हम से ख़ुश है। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़ीद फ़रमाया : मेरी और इस आराबी की मिसाल उस शख़्स जैसी है, जिस का ऊंट उस से भाग गया हो, लोग ऊंट को पकड़ने के लिये दौड़े मगर ऊंट उन से ख़ौफ़ ज़दा हो कर मज़ीद दूर भागा, ऊंट वाला बोला : लोगो ! मुझे और मेरे ऊंट को अकेला छोड़ दो ! मैं इस पर ज़ियादा नर्म हूं, उसे ज़ियादा जानता हूं। फिर उस ने अच्छे त़रीक़े से ऊंट को अपनी त़रफ़ बुलाया तो ऊंट गर्दन झुकाए आ गया।[4]

◎ मरवी है कि एक नौजवान रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ करने लगा : या रसूलल्लाह

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे ज़िना की इजाज़त दीजिये। येह सुनते ही सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जलाल में आ गए और उसे मारना चाहा। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उसे न मारो ! फिर उसे अपने पास बुला कर बिठाया और निहायत नर्मी और शफ़क़त के साथ सुवाल किया : ऐ नौजवान ! क्या तुझे पसन्द है कि कोई तेरी मां से ऐसा फ़ेल करे ? उस ने अर्ज़ की : मैं उस को कैसे रवा रख सकता हूं ? फ़रमाया : तो फिर दूसरे लोग तेरे बारे में उसे कैसे रवा रख सकते हैं ? फिर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : तेरी बेटी से अगर इस त़रह़ किया जाए तो तू उसे पसन्द करेगा ? अर्ज़ की नहीं। फ़रमाया : अगर तेरी बहन से कोई ऐसी ह़रकत करे तो ? और अगर तेरी ख़ाला से करे तो ? इसी त़रह़ आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक एक रिश्ते के बारे में सुवाल फ़रमाया, वोह येही कहता रहा कि मुझे पसन्द नहीं। तब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के सीने पर हाथ रख कर अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ की : या इलाही ! इस के दिल को पाक कर दे और इस का गुनाह बख़्श दे। इस के बाद वोह नौजवान सारी ज़िन्दगी ज़िना से बेज़ार रहा।(5)

देखिये ! प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक माहिर उस्ताद की त़रह़ उस शख़्स के ला शुऊर को कुरेदा और उसी की ज़बानी उस से इक़रार करवा लिया कि वोह जिस काम का इरादा रखता है, वोह काम ख़ुद उस के नज़दीक भी अच्छा नहीं, बुरा है। बस उस का ला शुऊर उभरने की देर थी, इस का मन्फ़ी रवय्या ख़ुद ही मुस्बत हो गया, आख़िर में आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शाने नुबुव्वत का जल्वा दिखाया, उस के सीने पर हाथ रख कर दिल रौशन कर दिया।

बक़िय्या अगले शुमारे में

---

(1) الضعفاء الكبير، الجزء الرابع، ص1534، حديث:2057 (2) محاسبۃ النفس لابن ابی دنیا، ص30، رقم:12، شاملہ (3) بخاری، 1/467، حدیث:1386 (4) مجمع الزوائد، 8/575، حدیث:14193 (5) مسند احمد، 8/285، حدیث:22274۔

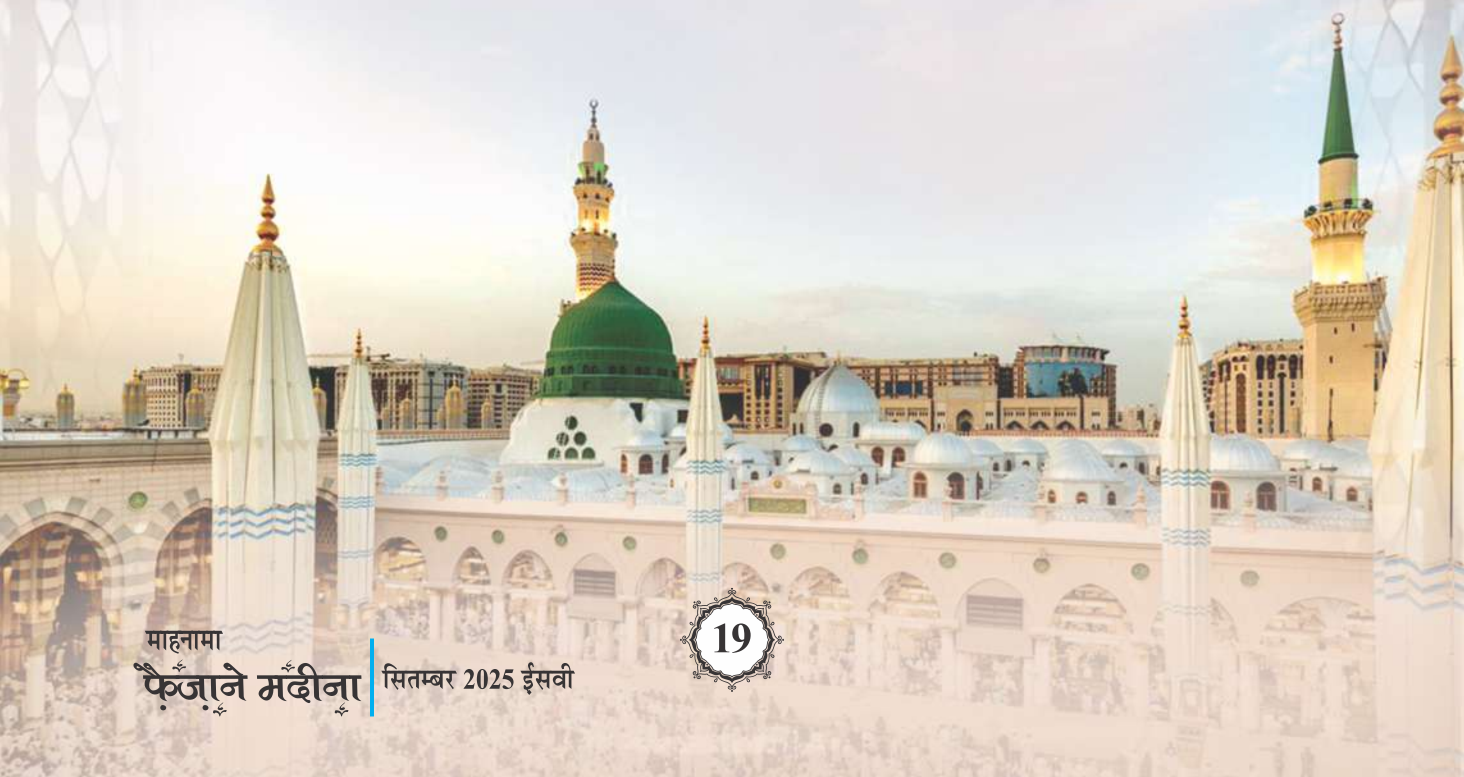

आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुह़म्मदे अ़रबी

का देहातियों के साथ अन्दाज़े करम नवाज़ी

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अन्दाज़े करम के क्या कहने कि आप की शाने करीमी तो हर मख़्लूक़ को नवाज़ती है, दुख दूर कर के सुख अ़ता करती है यूं मख़्लूक़े ख़ुदा दामने करम में आ कर राह़त और चैन व आराम मह़सूस करती है।

करीम आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की देहातियों पर बहुत करम नवाज़ियां रही हैं, आइये ! उन में से चन्द अह़ादीस पढ़ते हैं :

1 देहाती की इल्तिजा पर अन्दाज़े दुआ हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक में लोग सख़्त क़ह़त की लपेट में आ गए एक दफ़ा आप जुमुआ के रोज़ ख़ुत्बा दे रहे थे कि एक देहाती खड़ा हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! माल हलाक हो गया और बच्चे भूके मर गए। अल्लाह पाक से दुआ फ़रमाएं कि हम पर बारिश बरसाए। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ के लिये हाथ उठा दिये। उस वक़्त आस्मान में कोई बादल नहीं थे लेकिन (आप के हाथ उठाते ही) उसी वक़्त पहाड़ों जैसे बादल आ गए। आप अभी मिम्बर से नीचे तशरीफ़ नहीं लाए थे कि बारिश के क़त़रे आप की रीश मुबारक से टपकते हुए देखे गए। उस रोज़, उस से अगले रोज़ बल्कि अगले जुमुआ तक बारिश होती रही। फिर वोही आराबी या कोई दूसरा आदमी खड़ा हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मकानात गिर गए और माल ग़र्क़ हो गया, अल्लाह से हमारे लिये दुआ फ़रमाएं (कि बारिश रुक जाए)। हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़ौरी हाथ बुलन्द फ़रमाए और दुआ फ़रमाई : ऐ अल्लाह ! हमारे इर्द गिर्द बारिश बरसा और हमारे ऊपर नहीं। पस आप अपने मुबारक हाथ से आस्मान की जिस त़रफ़ भी इशारा करते उधर से बादल छट जाते यहां तक कि मदीनए मुनव्वरा थाली की त़रह़ हो गया कि उस के गिर्दो नवाह़ में बादल थे और मदीना के ऊपर आस्मान साफ़ था। जो आता वोह इस बारिश की इफ़ादियत का ज़िक्र ज़रूर करता।[1]

2 आख़िरी नबी का एक आराबी के साथ अन्दाज़े मिज़ाह़

ह़ज़रते ज़ाहिर बिन ह़िराम رَضِیَ اللہُ عَنْہ देहात से तअ़ल्लुक़ रखते थे, वहां से उम्दा फल, फूल, जड़ी बूटियां, दवाएं वग़ैरा ला कर बारगाहे रिसालत में पेश करते और वापस जाते हुए रसूले अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शहरे मदीना की वोह चीज़ें उन्हें अ़ता फ़रमाते जो गांव में दस्तयाब न होतीं। एक मौक़अ पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ाहिर رَضِیَ اللہُ عَنْہ के बारे में फ़रमाया : "ज़ाहिर हमारा देहात है और हम उस के शहर।"[2] यानी ज़ाहिर हमारी देहाती ज़रूरतें पूरी करते रहते हैं और हम ज़ाहिर की शहरी ज़रुरिय्यात पूरी करते रहते हैं गोया ज़ाहिर हमारा "**गांव**" हैं और हम "**ज़ाहिर**" का शहर। येह अख़्लाक़े करीमाना हैं कि अपने ग़ुलामों, नियाज़ मन्दों को इन अल्क़ाब से नवाज़ते हैं।[3] ह़ज़रते ज़ाहिर बिन ह़िराम رَضِیَ اللہُ عَنْہ देहात से लाया हुवा सामान बाज़ारे मदीना में बेचा करते थे। एक दिन हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बाज़ार से गुज़रते हुए आप को सामान बेचते हुए देखा तो आप ने उन्हें पीछे से अपनी गोद में ले लिया उन की बग़लों में से हाथ डाल कर अपना हाथ शरीफ़ ज़ाहिर की आंखों पर रख लिया, उन्हों ने अ़र्ज़ की : कौन है ? मुझे छोड़ दो। जब पीछे की त़रफ़ तवज्जोह की तो अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पहचान लिया। और पहचानते ही आप अपनी पीठ सीनए मुस्त़फ़ा से मिलाए रखने की कोशिश करने लगे। आक़ा करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझ से येह ग़ुलाम कौन ख़रीदेगा ? ह़ज़रते ज़ाहिर رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! फिर तो आप मुझे बे क़ीमत पाएंगे। आक़ा करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद

फ़रमाया : लेकिन तुम ख़ुदा के नज़दीक बे क़ीमत नहीं हो।[4]

3 जां निसार आराबी पर अन्दाज़े करम बारगाहे रिसालत में एक देहाती ह़ाज़िर हुए, ईमान लाए, आप की इत़ाअत व फ़रमां बरदारी करते रहने का अ़ज़्म ज़ाहिर किया और अ़र्ज़ की : मैं आप के साथ हिजरत कर के रहना चाहता हूं। तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बाज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को उन के बारे में ताकीद फ़रमा दी।

जब एक जंग के मौक़अ़ पर नबिय्ये करीम صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को माले ग़नीमत ह़ासिल हुवा तो आप ने उसे तक़्सीम फ़रमाया और उस देहाती का ह़िस्सा सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को दे दिया, वोह आराबी सह़ाबी उन के पीछे पहरा दिया करते थे। जब सह़ाबा ने उन का ह़िस्सा उन्हें दिया तो उन्हों ने पूछा : "येह क्या है ?" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने फ़रमाया : येह तुम्हारा ह़िस्सा है जो रसूले अकरम صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़त़ा फ़रमाया है।

वोह आराबी उस माल को ले कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह क्या है ?" फ़रमाया : "येह मेरी तक़्सीम में से तुम्हारा ह़िस्सा है।" वोह अ़र्ज़ करने लगे : "ह़ुज़ूर ! मैं ने उस माल के ह़ुसूल के लिये आप की पैरवी नहीं की बल्कि मैं ने तो इस लिये आप की पैरवी की है ताकि मुझे यहां तीर लगे और मैं शहीद हो कर जन्नत में दाख़िल हो जाऊं।" और अपनी गर्दन की त़रफ़ इशारा किया।

रसूले अकरम صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर तुम सच्चे हो तो अल्लाह तुम्हारी येह ख़्वाहिश ज़रूर पूरी फ़रमाएगा।" फिर कुछ अ़र्से बाद जब दुश्मनों के साथ मारिका हुवा तो उस देहाती को बारगाहे रिसालत में लाया गया, उन्हें इसी मक़ाम पर तीर लगा था जिस जगह का उन्हों ने इशारा किया था। आप صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या येह वोही है ? अ़र्ज़ की गई : जी हां। आप ने फ़रमाया : उस ने अल्लाह को सच्चा जाना तो अल्लाह ने उस की बात पूरी फ़रमा दी। फिर आप ने उन्हें अपना जुब्बा मुबारका में कफ़न दिया।[5]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक आराबी के ख़ैमे के क़रीब से गुज़रे। उस आराबी ने ख़ैमे का गोशा उठा कर पूछा : "कौन लोग हैं ?" कहा गया : "रसूलुल्लाह صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और उन के सह़ाबा हैं जो कि जंग का इरादा रखते हैं।" आराबी ने पूछा : "क्या दुन्या का माल भी पाएंगे ?" जवाब दिया गया : हां ! ग़नीमत पाएंगे फिर उन्हें मुसलमानों में तक़्सीम कर दिया जाएगा। येह सुन कर वोह आराबी अपने ऊंट की त़रफ़ बढ़े और उसे रस्सी से बांध कर उन के साथ चल पड़े।

वोह अपने ऊंट को रसूलुल्लाह صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब करने लगे, जब कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان उस के ऊंट को रसूलुल्लाह صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दूर करते रहे तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! येह जन्नत के बादशाहों में से हैं।" फिर जब दुश्मनों के साथ मुक़ाबला हुवा तो येह आराबी जंग करते करते शहीद हो गए। जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इन की शहादत की ख़बर दी गई तो आप उन की मय्यित पर तशरीफ़ लाए, उन के सिरहाने बैठ गए और ख़ुशी से मुस्कुराने लगे, फिर अपना चेहरा दूसरी त़रफ़ फेर लिया तो हम ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम ने आप को ख़ुशी से हंसते हुए देखा फिर आप ने अपना चेहरा दूसरी त़रफ़ क्यूं फेर लिया ? इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक की बारगाह में इस का मरतबा देखने की वज्ह से मुझे ख़ुशी थी और मेरे इस से मुंह फेरने की वज्ह येह है कि ह़ूरे ईन में से उस की एक बीवी अब इस के सिरहाने आ बैठी है।[6]

आजिज़ नवाज़ियों पे करम है तुला हुवा
वोह दिल लगा के सुनते हैं हर बे नवा की अ़र्ज़
क्यूं तूल दूं ह़ुज़ूर येह दें येह अ़त़ा करें
ख़ुद जानते हैं आप मेरे मुद्दआ की अ़र्ज़[7]

---

(1)بخاری،1/321،حدیث:933(2)مسند احمد،20/90،حدیث:12648-مرقاۃ المفاتیح، 8/622(3)شرح المصابیح لابن ملک، 5/262-مرقاۃ المفاتیح، 8/622-مراٰۃ المناجیح، 6/497(4)مسند احمد، 20/90، حدیث:12648(5)نسائی، ص330، حدیث:1950 (6)شعب الایمان،4/53،حدیث:4317(7)ذوقِ نعت، ص143،144۔

मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

1 रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नूरुल्लाह कहना कैसा ?

सुवाल : क्या नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अल्लाह का नूर कह सकते हैं ?

जवाब : बिल्कुल कह सकते हैं, क़ुरआने करीम में अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया : ﴿قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ(۱۵)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की त़रफ़ से एक नूर आया और रौशन किताब। (پ6، المآئدۃ:15) कई मुफ़स्सिरीन[1] ने इस आयत में नूर से मुराद प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात ली है तो यूं अल्लाह पाक ने अपने मह़बूब को नूर कहा, आइये हम भी मिल कर कहते हैं :

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَانُوْرَ اللّٰہ۔

2 सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अन्दाज़े गुफ़्तगू

सुवाल : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अन्दाज़े गुफ़्तगू के बारे में कुछ इरशाद फ़रमाइये ?

जवाब : प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हर अदा ला जवाब है, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गुफ़्तगू का अन्दाज़ चीख़ने चिल्लाने वाला नहीं बल्कि ऐसा मीठा और प्यारा होता था कि बात सब की समझ में आ जाए, आवाज़ न इतनी धीमी कि सामने वाला सुन सके, न इतनी ऊंची कि नागवार गुज़रे, बाज़ अवक़ात अपनी बात को तीन बार दोहराते थे ताकि लोग अच्छी त़रह़ समझ लें और बोलने की रफ़्तार ऐसी थी कि अगर कोई आप के अल्फ़ाज़ गिनना चाहे तो गिन ले।

3 विलादत गाहे मुस्तफ़ा पर दुआ क़बूल होती है

सुवाल : ह़रमैन शरीफ़ैन के सफ़र के दौरान विलादत गाहे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर आप की ह़ाज़िरी का क्या अन्दाज़ रहा था ?

जवाब : पांव से चल कर गया था, सर के बल जाना मेरे बस में होता तो येह भी कर गुज़रता। सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत गाह अदब का मक़ाम और ज़ियारत गाह है, उस का दीदार करना सआदत की बात है। उस के क़रीब दुआ भी क़बूल होती है, क्यूंकि जिस जगह सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तशरीफ़ लाना साबित हो "**मशहद**" कहलाती है और मशहद (यानी तशरीफ़ लाने की जगह) के पास दुआ क़बूल होती है। (फ़ज़ाइले दुआ, स. 136 माख़ूज़न) विलादत गाह तो वोह मक़ाम है जहां आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या में सब से पहले तशरीफ़ लाए, यूं वोह क़बूलिय्यते दुआ का मक़ाम है। अल्लाह पाक हमें बार बार उस मुक़द्दस मक़ाम की ज़ियारत नसीब फ़रमाए।

4 हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअत रब्बे करीम की इत़ाअत है

सुवाल : क्या हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअत ऐन इत़ाअते इलाही है ?

जवाब : जी हां ! ख़ुद अल्लाह करीम क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है : ﴿مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ﴾

---

[1] इमाम अबू जाफ़र मुह़म्मद बिन जरीर त़बरी (वफ़ात : 310 हि.) इमाम मुह़म्मद हुसैन बग़वी (वफ़ात 510 : हि.), इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी (वफ़ात : 606 हि.), इमाम नासिरुद्दीन अब्दुल्लाह बिन उमर बैज़ावी (वफ़ात : 685 हि.), अल्लामा अबुल बरकात अब्दुल्लाह नसफ़ी (वफ़ात : 710 हि.), अल्लामा अबुल ह़सन अली बिन मुह़म्मद ख़ाज़िन (वफ़ात : 741 हि.), इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई (वफ़ात : 911 हि.) رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن वग़ैरा मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस आयते मुबारका में मौजूद लफ़्ज़ "नूर" से मुराद नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते बा बरकात है। ह़दीसे पाक में नूर वाले आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ से फ़रमाया : ऐ जाबिर ! बेशक अल्लाह पाक ने तमाम मख़्लूक़ से पहले तेरे नबी का नूर अपने नूर से पैदा फ़रमाया।

(الجزء المفقود من الجزء الاوّل من المصنف لعبد الرزاق، ص63، رقم:18، المواھب اللدنیہ، 1/36)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस ने रसूल का हुक्म माना बेशक उस ने अल्लाह का हुक्म माना। (پ5،النسآء:80) नमाज़ के दौरान भी अगर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बुलाएं तो जवाब देना होगा और येह भी क़ुरआने करीम से साबित है

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह और उस के रसूल की बारगाह में हाज़िर हो जाओ जब वोह तुम्हें इस चीज़ के लिये बुलाएं जो तुम्हें ज़िन्दगी देती है। (پ9،الانفال:24) और उस से नमाज़ भी नहीं टूटेगी। (مرقاۃ المفاتیح، 4/624، تحت الحدیث:2118- مراٰۃ المناجیح، 3/224) हदीसे पाक में भी नमाज़ में बुलाने का ज़िक्र मौजूद है।[1]

5 हर प्यारी चीज़से बढ़कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत करना

सुवाल : प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कितनी महब्बत करनी चाहिये ?

जवाब : प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपने मां बाप, आल औलाद और हर प्यारी चीज़ से बढ़ कर महब्बत करना ज़रूरी है। "**ख़ुत्बाते रज़विय्या**" में है : اَلَا لَا اِيْمَانَ لِمَنْ لَّا مَحَبَّةَ لَه यानी ख़बरदार ! उस का ईमान नहीं जिस को सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत नहीं। (ख़ुत्बाते रज़विय्या, स. 6, دلائل الخیرات،ص47)

नक़्शे उल्फ़ते दुन्या मेरे दिल से मिटा देना
मुझे अपना ही दीवाना बनाना या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 327)

6 उम्मती उम्मती लब पे जारी रहा

सुवाल : प्यारे आक़ा करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्म शरीफ़ को जब क़ब्र मुबारक में उतार दिया गया तो उस वक़्त मुबारक होंटों पर क्या अल्फ़ाज़ थे ?

जवाब : मदारिजुन्नुबुव्वह में है : हज़रते सय्यिदुना क़ुसम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه वोह शख़्स थे जो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ब्रे अन्वर में उतारने के बाद सब से आख़िर में बाहर आए थे, चुनान्चे उन का बयान है कि मैं ही आख़िरी शख़्स हूं जिस ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रूए मुनव्वर, क़ब्रे अत़्हर में देखा था, मैं ने देखा कि सुल्ताने मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ब्रे अन्वर में अपने लबहाए मुबारका को जुम्बिश फ़रमा रहे थे (यानी मुबारक होंट हिल रहे थे) मैं ने अपने कानों को अल्लाह पाक के प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दहन (यानी मुंह) मुबारक के क़रीब किया, मैं ने सुना कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते थे रब्बि उम्मती उम्मती (यानी परवरदगार ! मेरी उम्मत मेरी उम्मत)। (مدارج النبوۃ، 2/442)

पहले सज्दा पे रोज़े अज़ल से दुरूद
यादगारिये उम्मत पे लाखों सलाम

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 512)

7 फूले नहीं समाते हैं अत्तार आज तो

सुवाल : इस शेर की वज़ाहत फ़रमा दीजिये :

फूले नहीं समाते हैं अत्तार आज तो
दुन्या में आज हामिये अत्तार आ गए

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 512)

जवाब : "**फूले नहीं समाना**" एक मुहावरा है, जिसे बहुत ज़ियादा ख़ुशी हो रही हो उस के लिये येह मुहावरा बोला जाता है। इस शेर का मत़लब येह है कि चूंकि जब किसी का प्यारा और मह़बूब आता है तो उसे बहुत ख़ुशी होती है और आज (यानी 12 रबीउल अव्वल को) अल्लाह के प्यारे, अल्लाह के महबूब और ग़म ख़्वारे उम्मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए हैं इस लिये आज "अत्तार"[2] बहुत ख़ुश, बहुत ख़ुश और बहुत ख़ुश है कि उस के आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आज विलादत हुई है।

---

1 बुख़ारी शरीफ़ में है : हज़रते अबू सईद बिन मुअल्ला رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिदे नबवी में नमाज़ पढ़ रहा था कि मुझे रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बुलाया, लेकिन मैं आप के बुलाने पर हाज़िर न हुवा। (नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद) मैं ने हाज़िरे ख़िदमत हो कर अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मैं नमाज़ पढ़ रहा था। सरकारे दो आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या अल्लाह पाक ने येह नहीं फ़रमाया है कि ﴿اِسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ﴾ अल्लाह और रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो जाओ जब वोह तुम्हें बुलाएं। (بخاری، 2/163، حدیث:4474)

2 अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का तख़ल्लुस "अत्तार" है। तख़ल्लुस : शाइर का वोह मुख़्तसर नाम जिसे वोह अपने अश्आर में इस्तिमाल करता है। (فیروز اللغات،ص376)

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

1 आयत "وَلَلْاٰخِرَةُ خَیْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى" की तफ़्सीर

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि क्या ﴿وَ لَلْاٰخِرَةُ خَیْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰىؕ(۴)﴾ का मत़लब येही है कि तुम्हारा मुस्तक़बिल तुम्हारे माज़ी से बेहतर है ? क्या येह हर मुसलमान के बारे में नाज़िल हुई है ? इस आयत की मुकम्मल तफ़्सीर बयान फ़रमा दें। بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَایَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

﴿وَ لَلْاٰخِرَةُ خَیْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰىؕ(۴)﴾ और बेशक तुम्हारे लिये हर पिछली घड़ी पहली से बेहतर है। येह आयते मुबारका हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये नाज़िल हुई, मुफ़स्सिरीने किराम ने इस आयत के मुतअद्दद मआनी बयान किये हैं। इस आयत का एक माना येह बयान किया है कि ऐ ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! बेशक तुम्हारे लिये आख़िरत दुन्या से बेहतर है क्यूंकि वहां आप के लिये मक़ामे महमूद, हौज़े कौसर और वोह भलाई है जिस का वादा किया गया है, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तमाम अम्बिया व रुसुल عَلَيْهِمُ السَّلَام पर मुक़द्दम होना, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत का तमाम उम्मतों पर गवाह होना, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअत से मोमिनीन के मरतबे और दर्जे बुलन्द होना और बे इन्तिहा इज़्ज़तें और करामतें हैं जो बयान में नहीं आ सकतीं। नीज़ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत के एक माना येह भी बयान फ़रमाए हैं कि आने वाले अहवाल आप के लिये गुज़श्ता से बेहतर व बरतर हैं गोया कि हक़ तआला का वादा है कि वोह रोज़ बरोज़ आप के दर्जे बुलन्द करेगा और इज़्ज़त पर इज़्ज़त और मन्सब पर मन्सब ज़ियादा फ़रमाएगा और हर आने वाली घड़ी में आप के मरातिब तरक़्क़ियों में रहेंगे।

तफ़्सीरे नसफ़ी में है : "ای ما اعد اللہ لك فی الآخرۃ من المقام المحمود والحوض المورود والخیر الموعود خیر مما اعجبك فی الدنیا"

यानी जो अल्लाह पाक ने आप के लिये आख़िरत में तय्यार फ़रमाया है जैसे मक़ामे महमूद, हौज़े कौसर और वोह ख़ैर व भलाई जिस का वादा किया गया है जो उस ख़ैर से बेहतर है जिस को आप दुन्या में पसन्द फ़रमाते थे। (تفسیر نسفی، 3/653- غرائب التفسیر وعجائب التاویل، 2/1354- فتاویٰ رضویہ، 30/165، 166 ملخصاً)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 जिब्रीले अमीन का 24 हज़ार बार नबिय्ये करीम की बारगाह में हाज़िर होना

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि हम ने सुना है कि हज़रते जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام, रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में चौबीस हज़ार मरतबा हाज़िर हुए। सुवाल येह है कि क्या येह बात दुरुस्त है या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَایَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जी हां येह बात दुरुस्त है और उलमाए किराम ने अपनी किताबों में इस बात को बयान किया है कि हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में चौबीस हज़ार मरतबा हाज़िर हुए। इस बात को इमाम अहमद बिन मुहम्मद बिन अबू बक्र अल क़स्तलानी عَلَيْهِ الرَّحْمَه ने इरशादुस्सारी शर्हे सहीह बुख़ारी और मवाहिबुल्लदुन्निया बिल मिन्हिल मुहम्मदिय्या में और अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी अज़्ज़ुर्क़ानी عَلَيْهِ الرَّحْمَه ने शर्हे अज़्ज़ुर्क़ानी अलल मवाहिबुल्लदुन्निया में और अल्लामा शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अहमद अल ख़तीब عَلَيْهِ الرَّحْمَه ने अस्सिराजुल मुनीर में नक़्ल किया है कि जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में 24000 मरतबा हाज़िर हुए और हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में 12 मरतबा हाज़िर हुए और हज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में 4 मरतबा हाज़िर हुए और हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में 50 मरतबा हाज़िर हुए और हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में 42 मरतबा हाज़िर हुए और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में 400 मरतबा हाज़िर हुए और हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में 10 मरतबा हाज़िर हुए।

इरशादुस्सारी शर्हे बुख़ारी में है : "ان جبریل نزل علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم اربعۃ وعشرین الف مرۃ، وعلی آدم اثنتی عشرۃ مرۃ، وعلی ادریس اربعًا، وعلی نوح خمسین، وعلی ابراھیم اثنتین واربعین مرۃ، وعلی موسی اربعمائۃ، وعلی عیسی عشرًا "

यानी जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में चौबीस हज़ार मरतबा हाज़िर हुए और हज़रत आदम عَلَیْہِ السَّلَام की बारगाह में बारह मरतबा हाज़िर हुए और हज़रते इदरीस عَلَیْہِ السَّلَام की बारगाह में चार मरतबा हाज़िर हुए और हज़रते नूह عَلَیْہِ السَّلَام की बारगाह में पचास मरतबा हाज़िर हुए और हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की बारगाह में बियालीस मरतबा हाज़िर हुए और हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की बारगाह में चार सौ मरतबा हाज़िर हुए और हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की बारगाह में दस मरतबा हाज़िर हुए।

(ارشاد الساری، 1/60-نزہۃ القاری، 1/247)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 क्या अम्बियाए किराम से भी सुवालाते क़ब्र होंगे ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि क्या अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام से भी सुवालाते क़ब्र होते रहे हैं और क्या हमारे नबी ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से भी सुवालाते क़ब्र हुए हैं ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

राजेह क़ौल के मुताबिक़ हमारे नबी ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم समेत दूसरे किसी भी नबी عَلَیْہِ السَّلَام से सुवालाते क़ब्र नहीं हुए।

जैसा कि मुसामरह में है : "والاصح ان الانبیاء علیھم الصلاۃ والسلام لایسألون فی قبورھم ولا اطفال المومنین اما الانبیاء فلانّہ قد ورد ان بعض صالحی الامّۃ یامن فتنۃ القبر بسبب عمل صالح--- واذا ثبت ھذا ذلک لبعض الامّۃ فالانبیاء علیھم الصلاۃ والسلام مع علوّ مقامھم المقطوع لھم بسببہ بالسعادۃ العظمٰی ومع عصمتھم اولٰی بذلک"

यानी ज़ियादा सहीह़ क़ौल येह है कि अम्बिया और मुसलमानों के बच्चों से उन की क़ब्रों में सुवाल नहीं किया जाएगा अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام से तो इस लिये कि जब उम्मत के कुछ नेक अफ़राद का किसी नेक अमल के बाइस सुवालाते क़ब्र से महफ़ूज़ रहना साबित है तो अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام का सुवालाते क़ब्र से महफ़ूज़ रहना बदर्जए औला साबित होगा ह़ालांकि उन का बुलन्द मरतबा होना क़त्ई और उन का मासूम होना साबित है।

(المسامرۃ شرح المسایرۃ، ص232، 233)

अल्लामा मुल्ला अली क़ारी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ (मुतवफ़्फ़ा 1014 हि.) इरशाद फ़रमाते हैं : "واستثنی من عموم سؤال القبر الانبیاء علیھم السلام والاطفال والشھداء ففی صحیح مسلم انہ علیہ الصلوۃ والسلام سئل عن ذلک؟ فقال: کفی ببارقۃ السیوف شاھداً ففی الکفایۃ انہ لا سؤال للانبیاء علیھم السلام"

यानी सुवालाते क़ब्र के उमूम में से अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام, बच्चे और शुहदा मुस्तस्ना हैं चुनान्चे सहीह़ मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस के मुतअल्लिक़ पूछा गया तो आप ने फ़रमाया : सुवालाते क़ब्र न होने के लिये तल्वारों के साए तले शहीद होना ही काफ़ी है चुनान्चे किफ़ाया में है कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام से सुवालाते क़ब्र न होंगे।

(شرح الفقہ الاکبر، ص181، 182)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 क्या हमारे आमाल हुज़ूर की बारगाह में पेश होते हैं ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि क्या दुन्या में हमारे आमाल हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने भी पेश होते हैं ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जी हां ! हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर आमाले उम्मत पेश किये जाते हैं।

चुनान्चे कन्ज़ुल उम्माल शरीफ़ में है कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "حیاتی خیر لکم تحدثون ویحدث لکم، فاذا انا مت کانت وفاتی خیرا لکم، تعرض علی اعمالکم فان رأیت خیرا حمدت اللہ تعالی وان رأیت شرا استغفرت لکم"

यानी मेरा जीना तुम्हारे लिये बेहतर है मुझ से बातें करते हो और हम तुम्हारे नफ़ा की बातें तुम से फ़रमाते हैं, जब मैं इन्तिक़ाल फ़रमाऊंगा तो मेरी वफ़ात तुम्हारे लिये ख़ैर होगी, तुम्हारे आमाल मुझ पर पेश किये जाएंगे अगर नेकी देखूंगा ह़म्दे इलाही करूंगा और दूसरी बात पाऊंगा तो तुम्हारी मग़्फ़िरत त़लब करूंगा।

(کنز العمال، 11/183-فتاوی رضویہ، 29/519، 520)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तालीमाते नबवी और इज़्दिवाजी ज़िन्दगी

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी हमारे लिये कामिल नमूना है। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़िन्दगी के हर हर शोबे, हर हर मुआमले में हमारी रहनुमाई फ़रमाई है। और वोह भी सिर्फ़ अपने अक़्वाल के ज़रीए नहीं बल्कि अमली त़ौर पर ज़िन्दगी गुज़ारने का सलीक़ा सिखाया।

इज़्दिवाजी ज़िन्दगी को कैसे गुज़ारा जाए, शौहर को कैसा होना चाहिये, अपनी बीवी के साथ किस त़रह़ का सुलूक किया जाए येह सब भी हमें प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अमली ज़िन्दगी से सीखने को मिलता है। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस त़रह़ हर लिहाज़ से आला व बेहतरीन थे इसी त़रह़ ब हैसिय्यते शौहर भी आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतरीन थे। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद फ़रमाया : خَیْرُکُمْ خَیْرُکُمْ لِاَھْلِہٖ وَاَنَا خَیْرُکُمْ لِاَھْلِیْ यानी तुम में सब से बेहतर वोह शख़्स है जो अपनी बीवी के ह़क़ में बेहतर हो और मैं अपनी बीवी के ह़क़ में तुम सब से बेहतर हूं।[1]

अज़्वाजे मुत़ह्हरात के साथ हुस्ने सुलूक आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अज़्वाजे मुत़ह्हरात के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आते। फ़ित़री त़ौर पर हर शख़्स का मिज़ाज दूसरे से मुख़्तलिफ़ होता है। हुस्ने सुलूक में येह बात भी शामिल है कि हर एक के मिज़ाज के मुत़ाबिक़ ही उस के साथ बरताव किया जाए। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी अज़्वाज के दरमियान इस बात का भी ख़याल रखते थे। इस बात में कोई शक नहीं कि तमाम ही अज़्वाजे मुत़ह्हरात आला किरदार की मालिक थीं, प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बेह़द मह़ब्बत फ़रमाने वाली थीं और आपस में भी उन के तअल्लुक़ात इन्तिहाई ख़ुश गवार थे। लेकिन कभी कभार किसी ज़ौजा मुत़ह्हरा के मिज़ाज में कुछ तेज़ी भी आ जाती जो कि एक फ़ित़री अमल है। ऐसे मौक़अ पर भी प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन से नाराज़ होने या झिड़कने के बजाए शफ़्क़त व मह़ब्बत से ही पेश आते। जैसा कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھَا फ़रमाती हैं :

एक दिन आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (मेरी बारी के दिन) मेरे पास से बाहर निकले। मैं ने दरवाज़ा बन्द कर दिया। आप तशरीफ़ लाए, दरवाज़ा खोलने के लिये कहा। मैं ने दरवाज़ा खोलने से इन्कार कर दिया। फ़रमाया : मैं तुम्हें क़सम दे कर कहता हूं कि तुम दरवाज़ा खोलो। मैं ने अर्ज़ की : आप मेरी बारी में किसी और ज़ौजा के पास तशरीफ़ ले गए थे। फ़रमाया : मैं ने ऐसा नहीं किया बल्कि मुझे क़ज़ाए ह़ाजत करना थी।[2]

अज़्वाजे मुत़ह्हरात से मह़ब्बत निकाह़ एक ऐसा रिश्ता है जिस की बदौलत शौहर और बीवी में बग़ैर किसी मारेफ़त और क़राबत के मह़ब्बत और हमदर्दी पैदा हो जाती है। येह अल्लाह पाक की कमाल रह़मत है। जैसा कि अल्लाह करीम क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है: ﴿وَمِنْ اٰیٰتِہٖۤ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْۤا اِلَیْهَا وَ جَعَلَ

بَیْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّ رَحْمَةً ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ (۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उस की निशानियों से है कि उस ने तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स से जोड़े बनाए ताकि तुम उन की तरफ़ आराम पाओ और तुम्हारे दरमियान महब्बत और रहमत रखी। बेशक इस में ग़ौरो फ़िक्र करने वालों के लिये निशानियां हैं।[3]

प्यारे आक़ा صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी अपनी अज़्वाज से बहुत महब्बत फ़रमाते और उस का इज़्हार भी फ़रमाते थे। चुनान्चे हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا के बारे में फ़रमाया : मुझे इन की महब्बत अता फ़रमाई गई है।[4]

येह हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से महब्बत ही थी कि जब तक वोह ज़िन्दा रहीं आप صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी और से निकाह न फ़रमाया।

आप صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी ज़ौजा हज़रते आइशा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से भी बहुत महब्बत फ़रमाते थे। आप صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा अपनी लाडली शहज़ादी हज़रते सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا को मुख़ातब कर के इरशाद फ़रमाया : रब्बे काबा की क़सम ! तुम्हारे वालिद को आइशा (رَضِیَ اللہُ عَنْہَا) बहुत ज़ियादा महबूब हैं।[5]

आप صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी अज़्वाजे मुतहहरात के साथ मिल कर बैठा करते, उन से गुफ़्तगू फ़रमाते, उन के साथ खाना तनावुल फ़रमाते।

हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मख़्सूस अय्याम में जब मैं पानी पीती फिर हुज़ूर صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दे देती तो जिस जगह मेरा मुंह लगता था हुज़ूर صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वहीं दहन मुबारक रख कर पीते और मख़्सूस अय्याम में हड्डी से गोश्त नोच कर खाती फिर आप को दे देती तो आप अपना दहन मुबारक उस जगह रखते जहां मेरा मुंह लगता था।[6]

अज़्वाजे मुतहहरात के दरमियान अद्लो इन्साफ़ जिस शख़्स की एक से ज़ाइद बीवियां हों इस पर उन के दरमियान तक़्सीम और अद्लो इन्साफ़ करना वाजिब है लेकिन आप صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर येह तक़्सीम और अद्ल वाजिब न था। इस के बा वुजूद आप صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अज़्वाजे मुतहहरात पर कमाल शफ़क़त फ़रमाते हुए उन के दरमियान अद्लो इन्साफ़ से ही काम लेते थे। सब को यक्सां तवज्जोह और वक़्त देते, हुक़ूक़ में भी बराबरी का लिहाज़ फ़रमाते। इसी वज्ह से आप صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तमाम अज़्वाज की बारियां मुक़र्रर कर रखी थीं। जिस ज़ौजए मुतहहरा की बारी होती उस की इजाज़त के बग़ैर दूसरी ज़ौजा के पास तशरीफ़ न ले जाते।

चुनान्चे हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से रिवायत है कि रसूले करीम صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी अज़्वाज के दरमियान बारी मुक़र्रर फ़रमाते हुए इन्साफ़ फ़रमाते और अल्लाह पाक की बारगाह में अर्ज़ करते इलाही ! येह मेरी तक़्सीम है उस में जिस का मैं मालिक हूं पस तू मुझे उस में इताब न फ़रमाना जिस का तू मालिक है और मैं मालिक नहीं। (यानी क़ल्बी महब्बत)[7]

यहां तक कि सफ़र पर रवाना होते वक़्त भी आप صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अज़्वाजे मुतहहरात के माबैन क़ुरआ अन्दाज़ी फ़रमाते, जिस ज़ौजा के नाम क़ुरआ निकलता उन को सफ़र में साथ ले जाते।[8]

इज़्दिवाजी इख़्तिलाफ़ात में बरदाश्त, सब्र और हिक्मते अमली आप صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने अज़्वाजे मुतहहरात के दरमियान होने वाले इख़्तिलाफ़ात को भी निहायत सब्र और हिक्मते अमली से सुलझाते थे। कभी भी ग़ुस्से व जज़्बात से काम न लेते बल्कि निहायत समझदारी व बुर्दबारी से मुआमलात को सुल्झाया करते। इस की एक मिसाल मुलाहज़ा हो :

हज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक प्याले में कुछ खाना भेजा, आप صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त हज़रते आइशा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا के घर में तशरीफ़ फ़रमा थे। हज़रते आइशा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا ने ख़ादिम के हाथ पर मारा, जिस से वोह बरतन गिर कर टूट गया। रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने टूटे हुए बरतन के टुकड़ों को जम्अ किया, और इस में वोह खाना जमा किया जो इस में था, और ख़ादिम से फ़रमाया : तुम्हारी मां को ग़ैरत आ गई थी येह जुम्ला आप صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दो मरतबा फ़रमाया। फिर आप ने हज़रते आइशा का सहीह पियाला मंगवाया और उसे उम्मे सलमा के

पास भिजवा दिया, और उम्मे सलमा का टूटा हुवा पियाला ह़ज़रते आइशा को दे दिया।[9]

अज़्वाजे मुत़ह्हरात के साथ ख़ुश त़बई शौहर अगर अपनी बीवी के साथ हर वक़्त सन्जीदगी और रोब वाला रवय्या ही अपनाए रखे, बिल्कुल भी हंसी मज़ाक़ न करे तो उस से इज़्दिवाजी तअल्लुक़ एक बोझ महसूस होने लगता है। लेकिन हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी भी अपनी इज़्दिवाजी ज़िन्दगी को बोझ बनने न दिया बल्कि ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात के साथ कमाल ख़ुश अख़्लाक़ी का मुज़ाहरा फ़रमाते हुए कभी कभी उन के साथ ख़ुश त़बई और हंसी मज़ाक़ भी फ़रमाते लेकिन आप के मिज़ाह में ह़क़ बात के सिवा कुछ न होता।

आप صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अपनी अज़्वाज को गुज़रे हुए ज़माने के लोगों के क़िस्से सुनाना भी साबित है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों में सब से बढ़ कर अपनी अज़्वाज के साथ ख़ुश त़बअ थे।[10]

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से मरवी है कि आप किसी सफ़र में अपने सरताज, साह़िबे मेराज صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थीं फ़रमाती हैं कि मैं ने आप صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ दौड़ लगाई तो मैं दौड़ने में आगे निकल गई फिर (कुछ अर्सा बाद) जब मैं ज़रा भारी हो गई तो आप ने दौड़ लगाई तो आप मुझ से आगे बढ़ गए फिर फ़रमाया : येह उस जीत का बदला हो गया।[11]

घरेलू ज़िम्मेदारियों में अज़्वाजे मुत़ह्हरात के साथ तआवुन हमारे मुआशरे में अगर शौहर बीवियों के साथ घर के काम काज में मदद करे तो उस को अच्छा नहीं समझा जाता, ह़ालांकि येह कोई बुरी बात नहीं बल्कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दो जहां के शहन्शाह व मालिक होने के बा वुजूद अपने काम अपने हाथ मुबारक से करने के साथ अज़्वाजे मुत़ह्हरात की भी घरेलू काम काज में मदद किया करते थे।

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से सुवाल हुवा कि क्या नबिय्ये करीम, रऊफ़ो रह़ीम صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर में काम करते थे ? फ़रमाया : हां आप صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने नालैने मुबारक ख़ुद गांठते, और कपड़ों में पैवन्द लगाते और वोह सारे काम किया करते थे जो मर्द अपने घरों में करते हैं।[12]

अज़्वाजे मुत़ह्हरात को दीनी तालीम देना बीवी के ह़ुक़ूक़ में से येह भी है कि शौहर अपनी बीवी को दीनी तालीमात सिखाए। ह़ुज़ूर صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात को दीनी तालीमात से आगाह फ़रमाते और अज़्वाजे मुत़ह्हरात भी वक़्तन फ़ वक़्तन आप صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से शरई मसाइल दरयाफ़्त फ़रमाया करतीं। अज़्वाजे मुत़ह्हरात जहां दीगर बातों में आम ख़वातीन से मुम्ताज़ हैं वहीं इल्मे दीन व फ़क़ाहत में भी कोई उन के मक़ामो मर्तबे को नहीं पहुंच सकता। और येह सब आप صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सिखाई हुई तालीमात की ही बदौलत है।

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا की शाने फ़क़ाहत का आलम तो येह है कि बड़े बड़े सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن आप के शागिर्द थे।

सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को जब भी कोई घम्बीर और न ह़ल होने वाला मस्अला आन पड़ता तो उस के ह़ल के लिये आप رَضِیَ اللہُ عَنْہَا की त़रफ़ रुजूअ लाते, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हम अस्ह़ाबे रसूल को किसी बात में इश्काल होता तो उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا की बारगाह में सुवाल करते और आप رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से ही इस बात का इल्म पाते।[13]

यूंही ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا भी शरई अह़काम में बहुत महारत रखती थीं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

"كَانَتْ تُعَدُّ مِنْ فُقَهَاءِ الصَّحَابِيَاتِ"

यानी आप رَضِیَ اللہُ عَنْہَا को फ़ुक़हा (यानी शरई अह़काम व क़वानीन की माहिर) सह़ाबिय्यात में शुमार किया जाता था।[14]

इज़्दिवाजी ज़िन्दगी में अख़्लाक़िय्यात हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हर हर अन्दाज़ निराला और क़ाबिले तह़सीन है। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बिला शको शुबा बेहतरीन अख़्लाक़ के मालिक थे।

किसी ने ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से पूछा : आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अपने अहले ख़ाना में ख़ल्क़ कैसा होता था ? उन्हों ने फ़रमाया : आप का अख़्लाक़ सारे लोगों से उम्दा था। आप फ़ोह़श गो न थे, क़स्दन भी बुरी बात न करते थे, बाज़ार में शोर करने वाले न थे, बुराई का बदला बुराई से न देते थे, बल्कि दर गुज़र फ़रमाते और मुआफ़ फ़रमाते थे।[15]

यूंही एक मरतबा ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस अख़्लाक़ के बारे में पूछा गया जो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी अज़्वाज के साथ तन्हाई इख़्तियार फ़रमाते थे, तो उन्हों ने फ़रमाया : आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी तुम्हारे मर्दों की त़रह़ एक इन्सान थे, मगर (फ़र्क़ येह था कि) आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब लोगों से ज़ियादा बा इज़्ज़त, सब से बेहतर अख़्लाक़ वाले, अपनी क़ौम में सब से नर्म मिज़ाज और सब से ज़ियादा शराफ़त वाले थे। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ूब हंसते और मुस्कुराते रहते थे।[16]

अज़्वाजे मुत़ह्हरात की नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत जिस त़रह़ प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात के साथ मह़ब्बत भरा सुलूक फ़रमाते इसी त़रह़ अज़्वाजे मुत़ह्हरात भी आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बहुत मह़ब्बत फ़रमाती थीं, आप की ख़िदमत व इत़ाअत को अपना फ़र्ज़ समझते हुए बख़ूबी अदा करतीं, किसी भी मुआमले में आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रंजीदा करना उन्हें गवारा न था। येह अज़्वाजे मुत़ह्हरात की आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत का वाज़ेह़ सुबूत है कि जब अज़्वाजे मुत़ह्हरात को इख़्तियार दिया गया कि वोह दुन्यावी आसाइशों को इख़्तियार करें या अल्लाह और उस के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को, तो तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात ने दुन्यावी आसाइशों को ठुकरा कर अल्लाह और उस के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इख़्तियार किया। आप की सब से पहली ज़ौजए मुत़ह्हरा ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا ने हर मुश्किल घड़ी में आप का साथ दिया। ह़ज़रते सौदा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत और आप से जुदाई के ख़ौफ़ से अपनी बारी ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا को दे दी। इसी त़रह़ दीगर अज़्वाज भी आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बहुत मह़ब्बत फ़रमाती थीं।

इज़्दिवाजी तअल्लुक़ात को ख़ुशगवार कैसे बनाएं ?

प्यारी बहनो ! आज कल अक्सर घरों में आए दिन मियां बीवी आपस में उलझते, झगड़ते, एक दूसरे को बुरा भला कहते दिखाई देते हैं। जिस की वज्ह से न सिर्फ़ घर का माह़ौल ख़राब होता है बल्कि बच्चों की तरबियत पर भी बुरा असर पड़ता है। इन सब मसाइल के ह़ल के लिये प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप की अज़्वाजे मुत़ह्हरात के बाहमी तअल्लुक़ात में हमारे लिये बे शुमार मदनी फूल हैं। एक समझदार और बा शुऊर औरत झोंपड़ी को भी मह़ल बना सकती है।

याद रखिये ! मकान का छोटा बड़ा होना, आमदन कम ज़ियादा होना, रोज़गार के मसाइल होना वग़ैरा येह सब आम बातें हैं जिन से हर इन्सान का कभी ना कभी वासित़ा पड़ता है। अस्ल चीज़ मह़ब्बत, तवज्जोह, एह़सास और सुकून है जो शौहर और बीवी को एक दूसरे से चाहिये होता है। और अगर शौहर बीवी के बाहमी तअल्लुक़ात अच्छे हों तो उस से घर का माह़ौल भी ख़ुश गवार होता है। लिहाज़ा इस्लामी बहनों को भी चाहिये कि अल्लाह व रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़कामात पर अमल करते हुए, सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم व अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللہُ عَنْہُنَّ के नक़्शे क़दम पर चलते हुए अपनी इज़्दिवाजी ज़िन्दगी को ख़ुशगवार बनाने की कोशिश करें।

---

(1)ابن ماجہ، 2/478، حدیث:1977(2)الطبقات الکبریٰ،8/109(3)پ21، الروم:21(4)مسلم، ص 1016، حدیث : 6278 (5)ابوداؤد، 4/359، حدیث:4898(6)مسلم، ص138، حدیث:692(7)ترمذی،2/374، حدیث: 1143(8)بخاری، 2 / 173، حدیث : 2593 (9)بخاری، 3/470، حدیث: 5225، سبل الہدی والرشاد،9/69(10)فیض القدیر، 5 / 229، تحت الحدیث: 6865(11)ابوداؤد، 3 /42، حدیث : 2578(12)مسند امام احمد،9 / 519، حدیث : 25396(13)ترمذی،ج5، ص 471، حدیث: 3909 (14)سیر اعلام النبلاء، 3 / 475(15)مسند احمد، 43/131، حدیث: 25990 (16)سبل الہدیٰ والرشاد، 11/147۔

शुक्रानए नेमत की इस्लामी तालीमात और मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अल्लाह पाक ने इन्सान को पैदा फ़रमाया और उसे छोटी, बड़ी, ज़ाहिरी, बातिनी, जिस्मानी, रूहानी और दीनी व दुन्यवी हर तरह की नेमतों से माला माल किया। चुनान्चे अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَاَسْبَغَ عَلَیْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّ بَاطِنَةًؕ﴾
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हें भरपूर दीं अपनी नेमतें ज़ाहिर और छुपी।[1] मज़ीद इरशाद फ़रमाया : ﴿وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ﴾
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारे पास जो नेमत है सब अल्लाह की तरफ़ से है।[2] अल ग़रज़ अल्लाह पाक की इन्सान पर इतनी नेमतें हैं जिन्हें शुमार नहीं किया जा सकता। चुनान्चे अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया : ﴿وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَاؕ﴾
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर अल्लाह की नेमतें गिनो तो शुमार न कर सकोगे।[3]

अल्लाह पाक की इन अनगिनत नेमतों पर शुक्र अदा करना जहां इस्लाम की बुन्यादी तालीमात में से है वहां अल्लाह पाक की रिज़ा व ख़ुशनूदी का ज़रीआ भी है। अल्लाह पाक शुक्र अदा करने वालों को पसन्द फ़रमाता है जब कि नाशुक्री करने वालों को ना पसन्द फ़रमाता है। चुनान्चे अल्लाह पाक का फ़रमाने आलीशान है :

﴿وَلَا یَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا یَرْضَهُ لَكُمْؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने बन्दों की नाशुक्री उसे पसन्द नहीं और अगर शुक्र करो तो उसे तुम्हारे लिये पसन्द फ़रमाता है।[4] येही वज्ह है कि अल्लाह पाक ने क़ुरआने मजीद में कई मक़ामात पर अपना शुक्र अदा करने का हुक्म दिया है और ना शुक्री से मना फ़रमाया है। चुनान्चे एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

﴿وَاشْكُرُوْا لِیْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ(۱۵۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मेरा हक़ मानो और मेरी नाशुक्री न करो।[5]

याद रहे कि अल्लाह पाक ने अपना शुक्र अदा करने और नाशुक्री से मना करने का जो हुक्म दिया है इस में इन्सान का अपना ही फ़ाएदा और भला है। अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا یَشْكُرُ لِنَفْسِهٖۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّیْ غَنِیٌّ كَرِیْمٌ(۴۰)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो शुक्र करे वोह अपने भले को शुक्र करता है और जो नाशुक्री करे तो मेरा रब बे परवाह है सब ख़ूबियों वाला।[6] शुक्र नेमत में इज़ाफ़े का सबब जब कि नाशुक्री ज़वाले नेमत का सबब है। अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿لَىٕنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِیْدَنَّكُمْ وَلَىٕنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِیْ لَشَدِیْدٌ(۷)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर एहसान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा और अगर नाशुक्री करो तो मेरा अज़ाब सख़्त है।[7]

अल्लाह पाक की बे शुमार नेमतों में से एक अज़ीम नेमत हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका भी है। जैसा कि अल्लाह पाक के इस फ़रमाने आली शान :

﴿اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا﴾

(तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत नाशुक्री से बदल दी।)[8] के तहत बुख़ारी शरीफ़ में है :

وَمُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نِعْمَةُ اللّٰهِ यानी मुहम्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह पाक की नेमत हैं।[9] आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह पाक की ऐसी नेमत हैं जो सारी नेमतों की अस्ल बल्कि सारी नेमतों को नेमत बनाने वाले और फिर इन नेमतों को मख़्लूक़ तक पहुंचाने वाले

भी हैं। आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : औलियाए कामिलीन व उलमाए आमिलीन तसरीहें फ़रमाते हैं : अज़ल से अबद तक, अर्ज़ो समा में, ऊला व आख़िरत में, दीनों दुन्या में, रूहो जिस्म में, छोटी या बड़ी बहुत या थोड़ी, जो नेमत व दौलत किसी को मिली या अब मिलती है या आइन्दा मिलेगी सब हुज़ूर की बारगाहे जहां पनाह से बटी और बटती है और हमेशा बटेगी।(10)

ला व रब्बिल अर्श जिस को जो मिला उन से मिला
बटती है कौनैन में नेमत रसूलुल्लाह की

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह पाक की वोह जलीलुल क़द्र और अज़ीमुल मर्तबत नेमत हैं जिस पर अल्लाह पाक ने एह़सान जताते हुए इरशाद फ़रमाया :

﴿لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ اِذْ بَعَثَ فِیْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह का बड़ा एह़सान हुवा मुसलमानों पर कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा।(11)

अल्लाह पाक के इसी एह़सान का शुक्र अदा करते हुए सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم मह़फ़िले मीलाद का इन्इक़ाद कर के आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद का ज़िक्रे ख़ैर करते रहे। चुनान्चे ह़ज़रते अमीरे मुआविया رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : एक बार रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم के एक ह़ल्क़े के पास तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : तुम यहां किस लिये बैठे हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : جَلَسْنَا نَذْكُرُ اللهَ عَزَّوَجَلَّ، وَنَحْمَدُهٗ عَلٰى مَا هَدَانَا لِلْاِسْلَامِ وَمَنَّ عَلَيْنَا بِكَ हम यहां अल्लाह पाक का ज़िक्र करने और उस की ह़म्द बयान करने के लिये बैठे हैं कि उस ने हमें दीने इस्लाम का रास्ता दिखाया और आप को भेज कर हम पर एह़सान फ़रमाया। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस बात पर क़सम खाते हो कि तुम यहां इसी लिये बैठे हो ? सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم ने अ़र्ज़ की : अल्लाह पाक की क़सम ! हम यहां इसी लिये बैठे हैं। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَتَانِیْ جِبْرِیْلُ عَلَیْهِ السَّلَامُ فَاَخْبَرَنِیْ اَنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ یُبَاهِیْ بِكُمُ الْمَلَائِكَةَ

यानी अभी मेरे पास जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام आए थे, उन्हों ने मुझे ख़बर दी कि अल्लाह पाक तुम्हारी वज्ह से फ़रिश्तों पर फ़ख़्र फ़रमा रहा है।(12)

मालूम हुवा कि सरकारे आली वक़ार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी अल्लाह पाक की अज़ीम नेमत है, जिस पर अल्लाह पाक ने एह़सान जताया और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم ने इस नेमत के ह़ुसूल पर शुक्र मनाया।

सरकारे आली वक़ार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह पाक की नेमत हैं और नेमत का चर्चा करने का हुक्म देते हुए अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब की नेमत का ख़ूब चर्चा करो।(13) यूंही आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह पाक का फ़ज़्ल और उस की रह़मत भी हैं। फ़ज़्लो रह़मत के ह़ुसूल पर ख़ुशी मनाने का हुक्म देते हुए अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْیَفْرَحُوْا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ अल्लाह ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत और उसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें।(14)

याद रखिये ! नेमत का चर्चा करने और फ़ज़्लो रह़मत पर ख़ुशी मनाने के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े हैं। सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पीर शरीफ़ के दिन रोज़ा रख कर अपना यौमे विलादत मनाया जैसा कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पीर के रोज़े के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो इरशाद फ़रमाया : فِيْهِ وُلِدْتُ وَفِيْهِ اُنْزِلَ عَلَيَّ यानी इसी दिन मेरी विलादत हुई और इसी रोज़ मुझ पर वह़ी नाज़िल हुई।(15) यूंही आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी विलादत के वाक़िआत बयान फ़रमा कर भी अपना मीलाद मनाया है कि मैं दुआए इब्राहीम हूं, बिशारते ईसा हूं और अपनी मां का वोह नज़ारा हुं जो उन्हों ने मेरी विलादत के वक़्त देखा कि उन के सामने एक नूर ज़ाहिर हुवा जिस से उन के लिये शाम के मह़ल्लात चमक उठे।(16)

आशिक़ाने रसूल भी कभी रोज़ा रख कर, तो कभी मह़फ़िले मीलाद में आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआदत के वाक़िआत, फ़ज़ाइलो कमालात और मोजिज़ात बयान कर के तो कभी अपने घरों, गलियों और मह़ल्लों को सजा कर, तो कभी सब्ज़ सब्ज़ झन्डे लहरा कर और कभी जुलूसे मीलाद में जा कर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मीलाद मनाते हैं।

---

(1) پ21، لقمٰن:20 (2) پ14، النحل:53 (3) پ14، ابرٰھیم:34 (4) پ23، الزمر:7 (5) پ2، البقرۃ:152 (6) پ19، النمل:40 (7) پ13، ابرٰھیم:7 (8) پ13، ابرٰھیم:28 (9) بخاری، 3/11، حدیث:3977 (10) فتاویٰ رضویہ، 30/141 (11) پ4، آلِ عمرٰن:164 (12) مسند امام احمد، 6/14، حدیث:16835 مختصراً (13) پ30، الضحیٰ:11 (14) پ11، یونس:58 (15) مسلم، ص455، حدیث:2750 (16) مسند امام احمد، 6/87، حدیث:17163۔

तहफ़्फ़ुज़े अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत और हमारी ज़िम्मेदारी

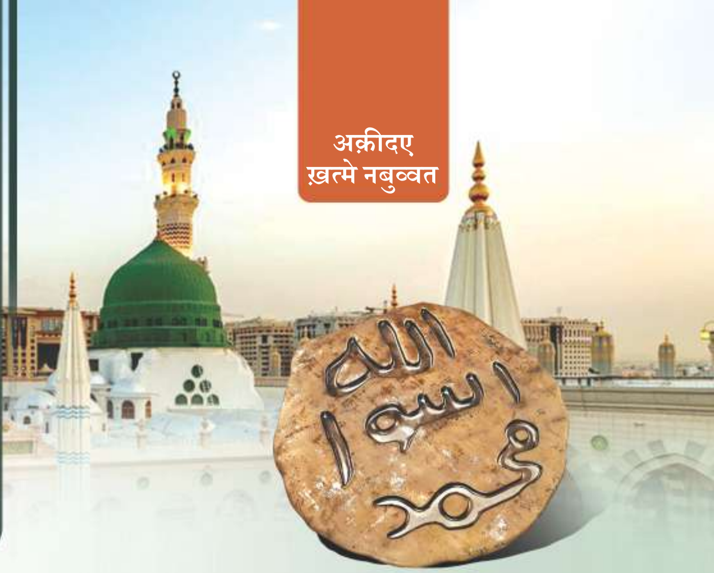

अल्लाह पाक ने तमाम अम्बिया व मुर्सलीन के बाद सब से आख़िर में हुज़ूर नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم को इस दुन्या में मबऊस फ़रमा कर नुबुव्वतो रिसालत का सिल्सिला ख़त्म फ़रमा दिया। सरकारे मदीना صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم के ज़माने या हुज़ूरे अकरम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم के बाद क़ियामत तक किसी को नुबुव्वत मिलना ना मुम्किन है, येह दीने इस्लाम का ऐसा बुन्यादी अक़ीदा है कि जिस का इन्कार करने वाला या इस में ज़र्रा बराबर भी शको शुबा करने वाला काफ़िर व मुर्तद हो कर दाएरए इस्लाम से निकल जाता है।

इस अक़ीदे को अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत कहते हैं और इस अक़ीदे का तहफ़्फ़ुज़ हर मुसलमान के ईमान का तक़ाज़ा है। येह अक़ीदा महफ़ूज़ है तो दीनो ईमान महफ़ूज़ है और इस अक़ीदे में कमज़ोरी ईमान के लिये ख़तरे का बाइस है।

रसूले करीम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم के ज़माने से ले कर अब तक मुसलमान इस अक़ीदे का तहफ़्फ़ुज़ करते आए हैं और ان شآءَ اللہ الکریم रहती दुन्या तक करते रहेंगे कि येह अक़ीदा ज़रूरिय्याते दीन से है बल्कि इस अक़ीदे का तअल्लुक़ रसूले करीम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم की ज़ाते मुबारका से है गोया इस अक़ीदे का तहफ़्फ़ुज़ हुज़ूरे अकरम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم की ज़ाते मुबारका की ख़िदमत है और इस का सिला आख़िरत में नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم की शफ़ाअत और जन्नत में दाख़िले की सूरत में मिलेगा। اِن شآءَ اللہ الکریم!

मौजूदा दौर में क़ादियानी हुज़ूरे अकरम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم को अल्लाह पाक का आख़िरी नबी नहीं मानते बल्कि वोह मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी को नबी मानते हैं जो कि क़ुरआनो ह़दीस और इज्माए उम्मत का इन्कार है। इसी वज्ह से उलमाए किराम ने इन के कुफ़्र का फ़तवा दिया लेकिन क़ादियानी अपने नाम इस्लामी नामों पर रख कर, अपनी इबादत गाहों को मस्जिद के अन्दाज़ में बना कर, उन्हें मस्जिद का नाम दे कर, क़ुरआने करीम को अपनी मज़हबी किताब बता कर और अपने आप को मुसलमान बता कर भोले भाले मुसलमान अवाम को धोका दे रहे हैं और सीधी साधी मुसलमान अवाम को अपने क़ादियानी मज़हब में दाख़िल कर रहे हैं।

क़ादियानी की इस साज़िश को नाकाम बनाने के लिये हमारी ज़िम्मेदारी येह बनती है कि हम जिस सत़ह पर हैं उस पर रहते हुए मुसलमान अवाम में अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत को मज़बूत बनाएं और इस अक़ीदे के तहफ़्फ़ुज़ के लिये हम अवाम में दिलो जान से मेहनत करें ताकि अवाम को अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत की आगाही मिले और अवाम क़ादियानी की नापाक साज़िशों से बच सके।

✿ आप घर के बड़े हैं तो घर में अपने बीवी बच्चों, बहन भाइयों और घर के दीगर अफ़राद को अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत के बारे में बताइये कि "हज़रते मुहम्मद صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم अल्लाह पाक के आख़िरी नबी हैं, आप के बाद कोई नया नबी नहीं आएगा" और उन्हें येह भी बताइये कि इस दौर में क़ादियानी हज़रते मुहम्मद صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم को आख़िरी नबी नहीं मानते, अगर कोई क़ादियानी आप का ज़ेहन वोश करते हुए मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी को मानने का कहे या आप को अपनी इबादत गाह चलने का कहे या आप की माली मदद करने का कहे तो फ़ौरन उस से दूर हो जाइये और उस से किसी भी क़िस्म की कोई बात करने या तअल्लुक़ रखने से गुरेज़ कीजिये वरना येह ईमान के लिये ख़तरनाक हो सकता है।

✿ आप आलिमे दीन हैं तो अपने इर्द गिर्द के लोगों में

अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत की अहमिय्यत क़ुरआनो हदीस और अक़्ली दलाइल से उजागर कीजिये, इस के लिये बयानात, मुख़्तलिफ़ सेमीनार्ज़, कोन्फ़रन्सिज़ का एहतिमाम कीजिये। मुम्किन हो तो दो चार सफ़हात का मुख़्तसर बुकलेट तय्यार कर के अवामुन्नास में बल्कि घर घर उसे आम कीजिये। यूंही जदीद तक़ाज़ों के पेशे नज़र मुख़्तसर क्लिप और पोस्ट वग़ैरा बना कर अपने सोशल मीडिया अकाउन्ट्स पर वायरल कर के सोशल मीडिया सारिफ़ीन तक अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत की आगाही फ़राहम कीजिये ताकि सोशल मीडिया यूज़ करने वाले अफ़राद भी अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत पर मज़बूती से क़ाइम रहें और गुमराह होने से बचें।

❁ आप पीर साहिब या सज्जादा व गद्दी नशीन हैं तो अपने हल्क़ए अहबाब और मुरीदीन को अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत पर मज़बूती के साथ क़ाइम रहने और क़ादियानी लोबी से बचने की ताकीद कीजिये। इस के लिये ख़ानक़ाह में वक़्तन फ़ वक़्तन क़ुरआनो हदीस और अक़्ली दलाइल से इस अक़ीदे की अहमिय्यत को बयान करने की तरकीब बनाइये।

❁ आप इमाम साहिब हैं तो अपनी मस्जिद में अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत के हवाले से नमाज़ियों को आगाही फ़राहम कीजिये, इस के लिये मस्जिद में मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ पर होने वाले बयानात में इस अक़ीदे की अहमिय्यत को बयान कीजिये, मस्जिद में अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत कोन्फ़रन्स मुन्अक़िद कीजिये और नमाज़ियों को बताइये कि ख़त्मे नुबुव्वत के मुन्किर क़ादियानियों से किसी क़िस्म का कोई तअल्लुक़ नहीं रखना है वग़ैरा वग़ैरा।

❁ आप क़ारी साहिब हैं तो अपने मदर्से के बच्चों को अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत के बारे में बताइये, क़ादियानियों के बारे में बताइये और बच्चों को क़ादियानियों से दूर रहने की ताकीद कीजिये, अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत पर क़ुरआनो हदीस और अक़्ली दलाइल पर मुश्तमिल सुवाल जवाब के ज़रीए बच्चों के मुक़ाबले करवाइये ताकि यूं भी बच्चों के ज़ेहनों में अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत पुख़्ता व मज़बूत हो।

❁ आप नात ख़्वां हैं तो नात ख़्वानी में अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत पर लिखे हुए मुस्तनद कलाम पढ़िये, नात ख़्वानी में आए हुए अफ़राद को अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत के बारे में बताइये और उन्हें क़ादियानी से दूर रहने की तरग़ीब दिलाइये। इसी तरह अपने सोशल अकाउन्ट पर भी गाहे ब गाहे अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत पर कलाम शेयर कीजिये या मुख़्तसर क्लिप या पोस्ट शेयर कर के सोशल मीडिया पर भी अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत का परचार कीजिये।

❁ आप टीचर हैं तो अपने तलबा को अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत के बारे में बताइये और उन्हें भी क़ादियानी लोबी से दूर रहने की तल्क़ीन कीजिये और तलबा को येह ज़ेहन दीजिये कि चाहे कोई क़ादियानी कितने ही दलाइल दे या आप की माली मदद करे या आप को स्कोलर शिप या बाहर मुल्क वग़ैरा भेजने का लालच दे आप ने उस की किसी क़िस्म की बातों में नहीं आना है और अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत को नहीं छोड़ना है।

❁ आप किसी कम्पनी, ओफ़िस या दुकान पर जोब करते हैं तो अपने कलीग्ज़ को अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत के बारे में बताइये और उन्हें भी क़ादियानी लोबी से दूर रहने की ताकीद कीजिये। अगर आप मालिक हैं तो क़ादियानी वर्कर रखने से ही इज्तिनाब कीजिये कि मशहूर मिसाल है : एक मछली पूरे तालाब को गन्दा कर देती है।

❁ इसी तरह महल्ले में और दोस्तों में भी अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत के बारे में आगाही फ़राहम कीजिये और उन्हें भी क़ादियानी लोबी से बचने का ज़ेहन दीजिये।

❁ आज कल सोशल मीडिया का दौर है लिहाज़ा सोशल मीडिया पर भी अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत के तहफ़्फ़ुज़ के लिये अपने सोशल अकाउन्ट पर इस हवाले से मुस्तनद मवाद शेर कीजिये ताकि अवामुन्नास को इस अक़ीदे के बारे में मालूमात हासिल हों और वोह भी गुमराह व बातिल अक़ाइद इख़्तियार करने से बचे। नीज़ सोशल मीडिया पर जो भी अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत के बारे में ग़लत बात करे उस को पढ़ने, सुनने और वायरल करने से बचें।

नोट : क़ादियानियों के साथ मेलजोल रखना, उन के साथ खाना पीना, तअल्लुक़ रखना, उन से ख़रीदो फ़रोख़्त करना, उन से मुफ़्त अदवियात लेना, उन की ग़मी ख़ुशी में शरीक होना या उन को अपनी ग़मी ख़ुशी में शरीक करना नाजाइज़ो हराम है। इसी तरह उन को उस्ताज़ बनाना या बच्चों को उन से पढ़वाना भी नाजाइज़ व हराम है।

मुहम्मदे मुस्तफ़ा सब से आख़िरी नबी
अहमदे मुज्तबा सब से आख़िरी नबी

अल्लाह पाक हमें मरते दम तक अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत का तहफ़्फ़ुज़ करने और इस अक़ीदे पर साबित क़दम रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अह़कामे तिजारत

1 चीज़ बेचने का वादा करने के बाद न बेचना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मैं ने अपने दोस्त से यूं तै किया कि मैं आप को दस दिन बाद बाइक बेचूंगा। अभी सिर्फ़ मुआहदा ही हुवा था, क़ीमत में से कुछ भी मैं ने वुसूल नहीं किया था। कुछ दिनों बाद क़ीमतों में 25 फ़ीसद इज़ाफ़ा हुवा जिस की वज्ह से अब मेरा बेचने का इरादा नहीं है क्यूंकि अब मुझे नुक़्सान होगा। वक़्ते मुआहदा मेरा इरादा पुख़्ता था कि मैं बेचूंगा लेकिन मुझे येह अन्दाज़ा नहीं था कि क़ीमतें इतनी बढ़ जाएंगी। जब कि वोह दोस्त ख़रीदने पर बज़िद है क्यूंकि अगर वोह मार्केट रेट पर ख़रीदता है तो उसे बाइक 125000 में ख़रीदनी पड़ेगी जब कि अगर वोह मुझ से लेता है तो मेरे किये हुए वादे के मुत़ाबिक़ उसे 100000 में पड़ेगी। आप राहनुमाई फ़रमाएं कि येह जो मैं ने वादा बैअ किया था शरअन उस से फिरना कैसा ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَایَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : मुस्तक़्बिल के कलिमात का इस्तिमाल करते हुए यूं कहना कि मैं येह चीज़ तुम्हें बेचूंगा, या फ़ुलां चीज़ मैं ख़रीदूंगा। येह ह़क़ीक़तन बैअ नहीं है बल्कि वादए बैअ है। क्यूंकि क़वानीने शरइय्या के मुत़ाबिक़ इन्शाए बैअ के लिये ज़रूरी है कि आक़िदीन में से हर एक या तो माज़ी का लफ़्ज़ इस्तिमाल करे मसलन बेचा, ख़रीदा, या आक़िदीन दोनों ही ह़ाल के लफ़्ज़ इस्तिमाल करें, मसलन बेचता हूं, ख़रीदता हूं। या एक माज़ी का और दूसरा ह़ाल का मसलन बेचा, ख़रीदता हूं। अगर किसी ने मुस्तक़्बिल के सीग़ों का इस्तिमाल किया जिन से उर्फ़ में इन्शाए अक़्द का इरादा न किया जाता हो तो अब येह मुआहदा अक़्दुल बैअ न होगा। चूंकि वादे के वक़्त आप का इरादा मुकम्मल करने का था और होना भी ऐसा चाहिये कि शरीअते मुत़ह्हरा वादों को पूरा करना पसन्द फ़रमाती है। लेकिन नुक़्सान से बचने के लिये अब आप इस वादे को पूरा नहीं करना चाह रहे, लिहाज़ा आप गुनहगार भी नहीं होंगे।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :

﴿يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ۬ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अपने क़ौल (अहद) पूरे करो।

(پ6،المآئدۃ:1)

सदरुश्शरीआ मुफ़्ती अम्जद अली आज़मी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه लिखते हैं : “दोनों के अल्फ़ाज़ माज़ी हों जैसे ख़रीदा बेचा या दोनों ह़ाल हों जैसे ख़रीदता हूं बेचता हूं या एक माज़ी और एक ह़ाल हो मसलन एक ने कहा बेचता हूं दूसरे ने कहा ख़रीदा। मुस्तक़्बिल के सीग़े से बैअ नहीं हो सकती दोनों के लफ़्ज़ मुस्तक़्बिल के हों या एक का मसलन ख़रीदूंगा बेचूंगा कि मुस्तक़्बिल का लफ़्ज़ आइन्दा अक़्द सादिर करने के इरादे पर दलालत करता है फ़िलह़ाल अक़्द का इस्बात नहीं करता।” (बहारे शरीअत, 2/618)

आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : “ख़लफ़े वादा जिस की तीन सूरतें हैं अगर वादा सिरे से सिर्फ़ ज़बानी बत़ौरे दुन्या साज़ी किया और उसी वक़्त दिल में था कि वफ़ा न करेंगे तो बे ज़रूरते शरई व ह़ालते मजबूरी सख़्त गुनाह व ह़राम है ऐसे ही ख़िलाफ़े वादा को ह़दीस में अलामाते निफ़ाक़ से शुमार किया ... और अगर वादा सच्चे दिल से किया फिर कोई उ़ज़्र मक़्बूल

व सबब माक़ूल पैदा हुवा तो वफ़ा न करने में कुछ ह़रज क्या, अदना कराहत भी नहीं जब कि इस उ़ज़्र व मस्लह़त को इस वफ़ाए वादा की ख़ूबी व फ़ज़ीलत पर तरजीह़ हो... और अगर कोई उ़ज़्र व मस्लह़त नहीं बिला वज्ह निस्बत छुड़ाई जाती है तो येह सूरत मकरूहे तन्ज़ीही है ... येह बात इस तक़्दीर पर बे जा व ख़िलाफ़े मुरव्वत है, मगर ह़राम व गुनाह नहीं, हु़ज़ूर सय्यिदुल आलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "ليس الخلف ان يعد الرجل ومن نيته ان يفى ولكن الخلف ان يعد الرجل ومن نيته ان لا يفى" यानी वादा ख़िलाफ़ी येह नहीं कि आदमी वादा करे और उस की निय्यत उस वादे को पूरा करने की हो, बल्कि वादा ख़िलाफ़ी येह है कि आदमी वादा करे और उस की निय्यत वादा पूरा करने की न हो।"

(फ़तावा रज़विय्या, 12/281 ता 283 मुल्तक़तन)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّى الله عليه واٰلهٖ وسلَّم

2 घर की क़िस्तें मुकम्मल होने से पहले आगे किराये पर देना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि ज़ैद, बकर से एक घर पन्दरह लाख रूपये में क़िस्तों पर ख़रीदना चाहता है जिस में से दस लाख रूपये ज़ैद बवक़्ते ख़रीदारी अदा कर देगा और पांच लाख रूपये एक तै शुदा मुद्दत में क़िस्तवार अदा करेगा, दस लाख रूपये अदा करने के बाद ज़ैद वोह घर अपने क़ब्ज़े में ले कर किराए पर दे देगा और उस से ह़ासिल होने वाले किराए से बकर को घर की बक़िय्या क़ीमत क़िस्तों की सूरत में अदा करेगा मेरा सुवाल येह है कि क्या ज़ैद का घर की मुकम्मल क़िस्तें अदा करने से पहले घर किराए पर देना जाइज़ है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में मुकम्मल क़िस्तें अदा किये बग़ैर भी ज़ैद का मज़कूरा घर को किराए पर देना जाइज़ है।

इस मस्अले की तफ़्सील कुछ यूं है कि अ़क़्दे बैअ फ़क़त दुरुस्त ईजाबो क़बूल (Offer And Acceptance) के ज़रीए मुन्अ़क़िद हो जाती है, जिस के बाद ख़रीदार मबीअ (Goods) का और बेचने वाला समन (Price) का मालिक हो जाता है। फिर समन की अदाएगी कभी नक़्द की जाती है और कभी उधार क़िस्तों की सूरत में की जाती है, समन की अदाएगी नक़्द की जाए या क़िस्तवार बहर दो सूरत बैअ दुरुस्त होती है, और मुश्तरी मबीअ का मालिक बन जाता है। जब ख़रीदारी मुकम्मल त़ौर पर उधार पर हो या कुछ रक़म उधार हो तो बेचने वाले को रक़म मिलने से क़ब्ल चीज़ रोकने का इख़्तियार भी नहीं होता। लिहाज़ा पूछी गई सूरत में जब ज़ैद, बक्र से मज़कूरा घर ख़रीद लेगा, बाहमी ईजाबो क़बूल हो जाएगा, तो ज़ैद घर का मालिक हो जाएगा, घर पर क़ब्ज़ा करने के बाद वोह उस घर को किराये पर दे सकता है, अगर्चे उस ख़रीदारी में क़ीमत क़िस्तवार अदा करना तै पाया हो।

बैअ का हुक्म बयान करतने हुए बहारे शरीअत में है : "बैअ का हुक्म येह है कि मुश्तरी मबीअ का मालिक हो जाए और बाएअ समन का।" (बहारे शरीअत, 2/617)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّى الله عليه واٰلهٖ وسلَّم

दिलों पर दस्ते शफ़्क़त की बरकतें

हुज़ूरे सरवरे काएनात, रह़मते दो आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मत पर शफ़्क़त व मेहरबानी के कई अन्दाज़ अपनाए, उन्ही में से एक अन्दाज़ येह भी था कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी बात पर तम्बीह करने या तवज्जोह दिलाने या बत़ौरे बरकत कई सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सीने पर हाथ मुबारक मारा। दस्ते मुबारक जब किसी के सीने पर पड़ता तो वोह सीना इल्मो हिक्मत, ईमान व बसीरत और नूर व मारेफ़त का ख़ज़ीना बन जाता। जिस के सीने पर दस्ते शफ़्क़त मारते उस के मुक़द्दर के दरवाज़े खुल जाते।

येही वोह लम्ह़ात हैं जिन्हें पढ़ते हुए दिल तड़प उठता है कि ऐ काश! हम भी उस मुक़द्दर वाले क़ाफ़िले में शामिल होते। लेकिन इन मुक़द्दस वाक़िआत में हमारे लिये आज भी बे शुमार सबक़, तरबियत, और जज़्बाती वाबस्तगी के लम्ह़े मौजूद हैं। येह मज़मून उसी मह़ब्बते रसूल, उसी रह़मते लम्स, और उसी क़ियादत के अन्दाज़ को बयान करता है जिस में तरबियत भी है, दुआ भी, रूह़ानी फ़ैज़ान भी, और क़ियादत का बे मिसाल उस्लूब भी।

रौशन सितारें

आइये! चन्द उन ख़ुश नसीब सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم के मसरूर कुन वाक़िआत पढ़ते हैं जिन्हें नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते शफ़्क़त से नवाज़ा, और उन के सीने ईमान, इल्म, हिदायत और मह़ब्बते रसूल से भर गए।

नूरे ईमान, ह़ज़रते उमर رَضِیَ اللهُ عَنْه के दिल में ह़ज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا का बयान है कि मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उमर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه ने जब इस्लाम क़बूल किया तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते शफ़्क़त तीन बार आप رَضِیَ اللهُ عَنْه के सीने पर मारते हुए इरशाद फ़रमाया :

اَللّٰهُمَّ اَخْرِجْ مَا فِیْ صَدْرِہٖ مِنْ غِلٍّ وَّاَبْدِلْهُ اِیْمَانًا

यानी ऐ अल्लाह! उस के सीने में जो भी इस्लाम की दुश्मनी है उसे निकाल कर ईमान से तब्दील फ़रमा दे।[1]

ह़ज़रते अली رَضِیَ اللهُ عَنْه की क़ुव्वते फ़ैसला का राज़

मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे यमन की तरफ़ (क़ाज़ी बना कर) भेजा तो मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم! आप मुझे भेज रहे हैं, मैं तो कम उम्र हूं और मुझे फ़ैसला करने के बारे में भी मालूमात नहीं है। रसूले करीम

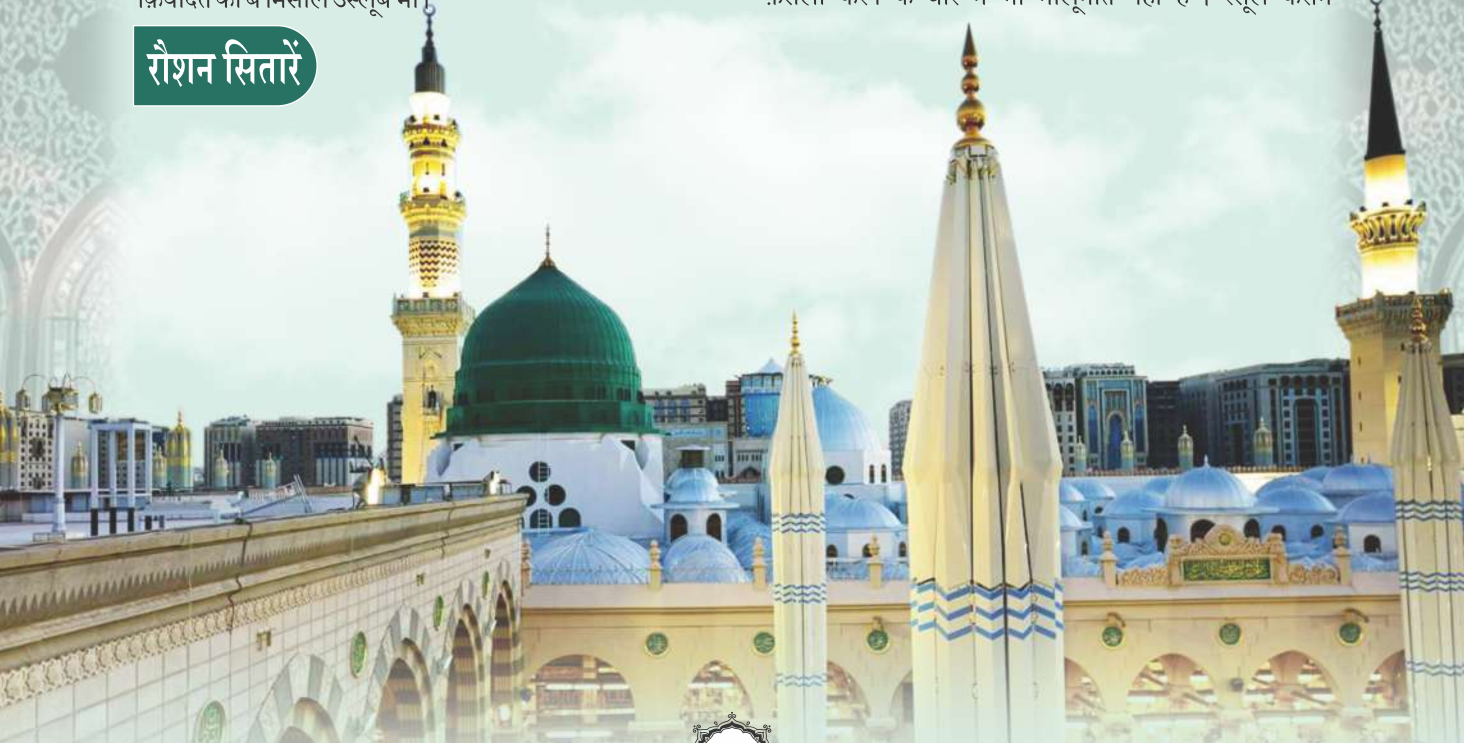

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते शफ़क़त मेरे सीने पर मारते हुए फ़रमाया اَللّٰھُمَّ اھْدِ قَلْبَہٗ وَثَبِّتْ لِسَانَہٗ यानी ऐ अल्लाह ! उस के दिल को हिदायत दे और ज़बान को साबित रख । हज़रते अली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि उस के बाद मुझे कभी फ़रीक़ैन के दरमियान फ़ैसला करने में परेशानी नहीं हुई।[2]

इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا का सीना, बना इल्मो ह़िक्मत का ख़ज़ीना हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते शफ़क़त उन के सर पर रखा और येह दुआ दी : اَللّٰھُمَّ اَعْطِہِ الْحِکْمَۃَ وَعَلِّمْہُ التَّاْوِیْل यानी ऐ अल्लाह ! इसे ह़िक्मत व दानाई और तफ़्सीर का इल्म अ़ता फ़रमा । फिर अपना दस्ते शफ़क़त उन के सीने पर रखा तो उन्हों ने उस की ठन्डक अपनी पीठ में मह़सूस की । फिर येह दुआ दी : اَللّٰھُمَّ احْشُ جَوْفَہٗ حُکْمًا وَعِلْمًا यानी ऐ अल्लाह ! इस का सीना इल्म व हिक्मत का गंजीना बना दे । इस दुआए नबवी की बरकत ऐसी ज़ाहिर हुई कि आप कभी किसी सुवाल का जवाब देने से न घबराए और ता ह़यात उम्मत के बहुत बड़े आलिम रहे।[3]

सीने पर दस्ते शिफ़ा, दिल में ठन्डक ह़ज़रते सअद बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं बीमार हुवा तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी इयादत के लिये तशरीफ़ लाए और अपना दस्ते शफ़क़त मेरे सीने पर रखा जिस की ठन्डक मैं ने अपने दिल पर मह़सूस की । हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम दिल के मरीज़ हो, ह़ारिस इब्ने कलदा सक़फ़ी के पास जाओ वोह इलाज करता है । वोह मदीना की सात अज्वा खजूरें ले कर गुठलियों समेत कूट ले फिर तुम को पिला दे।[4]

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अह़ादीसे शरीफ़ा की तज्वीज़ फ़रमाई हुई दवाएं किसी तबीब की राय से इस्तिमाल करना चाहिएं जो हमारे मिज़ाज, मौसम, दवा की तासीर और हमारे मर्ज़ की कैफ़िय्यत से ख़बरदार हो।[5]

ह़ज़रते अबू क़ुह़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के दिल पर इस्लाम की दस्तक

ह़ज़रते अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا का बयान है कि फ़त्हे मक्का के मौक़अ पर जब रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिदुल ह़राम में तशरीफ़ फ़रमा हुए तो ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपने वालिद अबू क़ुह़ाफ़ा उस्मान बिन आमिर को ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो गए । हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : هَلَّا تَرَکْتَ الشَّیْخَ فِیْ بَیْتِہٖ حَتّٰی اَکُوْنَ اَنَا آتِیْہِ فِیْہِ यानी तुम ने उन को घर पर ही क्यूं नहीं रहने दिया यहां तक कि मैं ख़ुद उन के पास आ जाता । ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अ़र्ज़ की یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ ھُوَ اَحَقُّ اَنْ یَّمْشِیَ اِلَیْکَ مِنْ اَنْ تَمْشِیَ اَنْتَ اِلَیْہِ यानी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह इस बात के ज़ियादा ह़क़दार हैं कि आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हों बजाए येह कि आप उन के पास तशरीफ़ ले जाएं । रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ के वालिद को अपने सामने बिठाया और उन के सीने पर अपना दस्ते शफ़क़त फेर कर फ़रमाया : इस्लाम क़बूल करो । इतना फ़रमाना था कि वोह इस्लाम क़बूल कर के दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए।[6]

ख़शिय्यते ख़ुदा और मह़ब्बते मुस्तफ़ा का ह़सीन इम्तिज़ाज

ह़ज़रते उबय बिन कअब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से पूछा : ऐ अबू मुन्ज़िर ! (येह ह़ज़रते उबय बिन कअब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की कुन्यत है) क्या तुम्हें मालूम है कि क़ुरआने करीम की आयतों में से कौन सी आयत बड़ी फ़ज़ीलत वाली है ? मैं ने कहा : اَللّٰہُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَمُ यानी अल्लाह पाक और उस के रसूल ज़ियादा जानते हैं । रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर मुझ से पूछा : ए अबू मुन्ज़िर : क्या तुम्हें मालूम है कि क़ुरआने करीम की आयतों में से कौन सी आयत बड़ी फ़ज़ीलत वाली है ? मैंने अ़र्ज़ की : اَللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं वोह आप ज़िन्दा और औरों का क़ाइम रकने वाला) । हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया : अल्लाह पाक की क़सम ! ऐ अबू मुन्ज़िर तुम्हें इल्म मुबारक हो ।[7] अल्लाह पाक के आख़िरी नबी मुहम्मदे अरबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक और मौक़अ पर ह़ज़रते उबय बिन काब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की सीने पर अपना दस्ते शफ़क़त मारा था उस वक़्त की कैफ़िय्यत बयान करते हुए आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं: नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सीने पर अपना दस्ते शफ़क़त मारा तो मैं पसीने से शराबोर हो गया और ख़ौफ़ से मैं ऐसा हो गया गोया रब को देख रहा हूं।[8]

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِعَلَيْه फ़रमाते हैं : उस वक़्त (हज़रते उबय को) जो फ़ैज़ान (हासिल) हुवा होगा वोह बयान से बाहर है, हज़रते उबय को पसीना आ जाना क़ुव्वते फ़ैज़ की बिना पर था हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जाड़ों के मौसम में वही नाज़िल होने पर पसीना आ जाता था बाज़ मशाइख़ अपने मुरीदीन को उन के सीने पर हाथ मार कर फ़ैज़ देते हैं उन का माख़ज़ येह हदीस है।[9]

दस्ते मुबारक से दादे फ़ैज़ व तह़सीन हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब हज़रते मुआज़ बिन जबल رَضِىَ اللهُ عَنْه को यमन की त़रफ़ (क़ाज़ी बना कर) भेजने का इरादा फ़रमाया तो उन से पूछा : जब तुम्हारे सामने किसी का मुक़द्दमा आएगा तो तुम कैसे फ़ैसला करोगे ? हज़रते मुआज़ رَضِىَ اللهُ عَنْه ने अर्ज़ की : अल्लाह पाक की किताब से फ़ैसाल करूंगा। रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर पूछा: अगर तुम अल्लाह पाक की किताब में (उस का हुक्म) न पाओ (तो कैसे फ़ैसला करोगे) ? हज़रते मुआज़ رَضِىَ اللهُ عَنْه ने अर्ज़ की : अल्लाह पाक के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत से फ़ैसला करूंगा। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर पूछा : अगर तुम अल्लाह पाक के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत में (उस का हुक्म) न पाओ और न अल्लाह पाक की किताब में पाओ (तो कैसे फ़ैसला करोगे) ? हज़रते मुआज़ رَضِىَ اللهُ عَنْه ने अर्ज़ की : मैं अपनी राय से इज्तिहाद करूंगा और ह़क़ीक़त तक पहुंचने में कोताही नहीं करूंगा। (उन की बात सुन कर) नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के सीने पर अपना दस्ते शफ़क़त मारा और फ़रमाया : अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का शुक्र है कि जिस ने अल्लाह के रसूल के भेजे हुए को उस चीज़ की तौफ़ीक़ बख़्शी जो अल्लाह के रसूल को ख़ुश करे।[10]

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِعَلَيْه फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का आप के सीने पर हाथ मारना या तो शाबाश देने के लिये या अपना फ़ैज़ आप के सीने में पहुंचाने के लिये था कि उस की बरकत से रब तआला उन्हें ख़त़ा से बचाए। इस से मालूम हुवा कि फ़ुक़हा के इज्तिहादात व क़ियासात बिल्कुल हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मर्ज़ी के मुत़ाबिक़ हैं और येह कि उसूले इस्लाम सिर्फ़ क़ुरआनो ह़दीस नहीं बल्कि क़ियासे मुज्तहिद भी है। ख़याल रहे कि उसूले दीन चार चीज़ें हैं : क़ुरआन, सुन्नत, इज्माए उम्मत व क़ियास । इज्माअ और क़ियास का सुबूत क़ुरआने करीम से भी है।[11]

हज़रते जरीर के लिये घुड़ सुवारी के नए दौर का आग़ाज़

हज़रते जरीर बिन अब्दुल्लाह رَضِىَ اللهُ عَنْه ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अर्ज़ की, कि मैं घोड़े की पीठ पर जम कर नहीं बैठ सकता। रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे सीने पर अपना दस्ते शफ़क़त मारा ह़त्ता कि मैं ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हाथ का असर अपने सीने में पाया और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह दुआ फ़रमाई : ऐ अल्लाह पाक ! उस को घोड़े पर जम कर बैठने की क़ुव्वत अत़ा फ़रमा और उस को हिदायत देने वाला और हिदायत याफ़्ता बना। हज़रते जरीर बिन अब्दुल्लाह رَضِىَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : उस के बाद मैं अपने घोड़े से नहीं गिरा।[12]

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِعَلَيْه फ़रमाते हैं : देखो येह है अत़ा मुस्त़फ़वी, हज़रते जरीर को उंग्लियों के ज़रीए क़ुव्वते क़ल्बी बख़्शी जिस से वोह घोड़े पर ठहरने लगे हुज़ूर की हथेली और क़दम शरीफ़ की ठन्डक उन से ही पूछो जिन्हें ऐसे मौक़अ मिले। (मज़ीद फ़रमाते हैं :) येह है सुवाल से ज़ियादा अत़ा हज़रते जरीर ने सिर्फ़ क़ुव्वते क़ल्बी मांगी थी मगर तीन नेमतें अत़ा हुईं क़ुव्वते क़ल्बी, हिदायत पर क़ाइम रहना और लोगों को हिदायत देना कि उन के ज़रीए लोग हिदायत पर आ जाएं।[13]

क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा की दौलत अत़ा हुई हज़रते उस्मान बिन अबी अल आस رَضِىَ اللهُ عَنْه कहते हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अपनी कमज़ोर याददाश्त के सबब क़ुरआने करीम याद न होने की शिकायत की। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह शैत़ान (की वजह से) है जिसे ख़न्ज़ब कहा जाता है। ऐ उस्मान ! मेरे क़रीब आओ। (जब मैं क़रीब हुवा) तो रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे मुंह में अपना लुआबे दहन डाला और अपना दस्ते शफ़क़त मेरे सीने पर रखा जिस की ठन्डक मैं ने अपने दोनों कन्धों के दरमियान महसूस की। फिर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ शैत़ान ! उस्मान के सीने से निकल जा। उस दिन के बाद से मैं जो चीज़ भी सुनता हूं मुझे याद हो जाती है।[14]

दस्ते शफ़्क़त का नूर जो तारीकी मिटा दे हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उसैद बिन अबी अयास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के चेहरे पर दस्ते शफ़्क़त फेरते हुए उन के सीने पर अपना दस्ते पुर अन्वार रखा। उस की बरकत येह ज़ाहिर हुई कि ह़ज़रते उसैद बिन अबी अयास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ जब भी किसी तारीक घर में दाख़िल होते तो वोह घर रौशन हो जाता।[15]

दस्ते शफ़्क़त, कुशादगिये रिज़्क़ का ज़ामिन ह़ज़रते क़ैस बिन सलअ अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : मेरे भाइयों ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मेरी शिकायत की, कि येह अपना माल बहुत ख़र्च करते हैं और इस मुआमले में उन का हाथ बहुत खुला है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से पूछा : ऐ क़ैस ! क्या मुआमला है तुम्हारे भाई तुम्हारी शिकायत कर रहे हैं ? और वोह गुमान कर रहे हैं कि तुम अपना माल बहुत ख़र्च करते हो और इस मुआमले में तुम्हारा हाथ बहुत खुला है। मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं फलों में से अपना ह़िस्सा ले कर राहे ख़ुदा में और अपने साथियों पर ख़र्च कर देता हूं। (येह बात सुन कर) हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे सीने पर अपना दस्ते शफ़्क़त मारा और तीन बार येह इरशाद फ़रमाया : ख़र्च कर अल्लाह पाक तुझ पर ख़र्च करेगा। इस के बाद मैं अल्लाह पाक की राह में निकल गया मेरे साथ सिर्फ़ मेरी सुवारी ही थी और आज मैं अपने घरवालों में सब से ज़ियादा मालदार और ख़ुशहाल हूं।[16]

दस्ते मुबारक की बदौलत सैराबी की नेमत ह़ज़रते अबू ग़ज़वान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ क़बूले इस्लाम से पहले हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए, रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : अबू ग़ज़वान। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के लिये सात बकरियों का दूध दोहा तो उन्हों ने वोह सब पी लिया। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें इस्लाम की दावत दी तो वोह मुसलमान हो गए। रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के सीने पर अपना दस्ते शफ़्क़त फेरा। दूसरे दिन सुब्ह़ के वक़्त सिर्फ़ एक बकरी का दूध दोहा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ वोह दूध पूरा नहीं पी सके। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू ग़ज़वान क्या बात है ? ह़ज़रते अबू ग़ज़वान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया मैं सैराब हो गया हूं।[17]

दिल, नेकी व बदी की पहचान का पैमाना बन गया ह़ज़रते वाबिसा बिन मअबद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (मेरे दिल का ह़ाल जानते हुए) इरशाद फ़रमाया : ऐ वाबिसा ! तुम नेकी और गुनाह के बारे में पूछने आए हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां। तो रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक की उंग्लियां जमा कर के उन्हें मेरे सीने पर मारा और तीन बार येह इरशाद फ़रमाया : اِسْتَفْتِ نَفْسَكَ اِسْتَفْتِ قَلْبَكَ يَاوَابِصَة यानी ऐ वाबिसा ! अपने ज़मीर और दिल से फ़तवा ले लिया करो। नेकी वोह है जिस पर त़बीअ़त जमे और दिल मुत़मइन हो और गुनाह वोह है जो त़बीअ़त में छुवे और दिल में खटके अगर्चे लोग तुम्हें फ़तवा दें या तुम से लें।[18]

दिल में घर करते नसीह़त के मोती एक बार ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में चन्द बार अ़र्ज़ की, कि मुझे कुछ नसीह़त फ़रमाइये। रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़स्बे ह़ाल नसीह़तें इरशाद फ़रमाते रहे और आख़िरी नसीह़त येह इरशाद फ़रमाई : लोगों के लिये वोही पसन्द करो जो अपने लिये पसन्द करते हो। फिर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते शफ़्क़त मेरे सीने पर मारा और इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! अ़क़्ल जैसी कोई तदबीर नहीं, गुनाहों से बचने जैसी कोई परहेज़गारी नहीं, हुस्ने अख़्लाक़ जैसी कोई कमाई नहीं।[19]

ऐ आशिक़ाने रसूल ! इन वाक़िआत को पढ़ कर दिल में ह़सरत उठती है कि काश हम भी रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पाकीज़ा ज़माने में होते और हमारे साथ भी कोई ऐसा वाक़िआ पेश आता जिस में हुज़ूर रह़मते صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे सीने पर अपना दस्ते शफ़्क़त मारते और हमारे सीने दस्ते अक़्दस के फ़ैज़ से रौशन व मुनव्वर हो जाते। लेकिन हमें अपनी इस ह़सरत पर मायूस नहीं होना चाहिये बल्कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में इस्तिग़ासा पेश करें कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम जैसे भी हैं मगर हैं आप के उम्मती, आक़ा ! हमारे सीने पर भी अपना दस्ते शफ़्क़त फेर कर हमारे सीने को गुनाहों से पाक और अपने नूर से मुनव्वर फ़रमा दीजिये।

आला ह़ज़रत के भाईजान, मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हुज़ूर रह़मते आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ करते हैं :

दिल दर्द से बिस्मिल की त़रह लोट रहा हो

सीने पे तसल्ली को तेरा हाथ धरा हो[20]

यानी ऐ अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अरबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ब्ह़ के वक़्त जानवर जिस त़रह तड़प रहा होता है उस त़रह मेरा दिल आप के इश्क़ में तड़प रहा हो हुज़ूर ! उस वक़्त आप तसल्ली के लिये अपना दस्ते अक़्दस मेरे सीने पर रख दीजियेगा।

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का शफ़्क़त व रह़मत का येह अन्दाज़ एक अ़ज़ीम क़ाइद व राहनुमा, एक माहिरे नफ़्सियात और एक शफ़ीक़ व मेहरबान सरपरस्त की शान को हम पर अयां करता है, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते त़य्यिबा के इस पहलू में हमारे लिये कई त़रह की नसीह़तें और दुरूस हैं :

राहनुमाई दिल से की जाए, मह़ज़ ज़बान से नहीं : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सीनों पर हाथ रख कर सह़ाबा के दिलों में नूरे ईमान, हिदायत, इल्म, शुजाअत और ह़िक्मत मुन्तक़िल की येह क़ियादत का ऐसा रूह़ानी उस्लूब है जो दिलों को फ़त्ह़ करता है, आज के रहनुमा अगर चाहें कि उन के मानने वाले ख़ुलूस से उन के साथ जुड़ें, तो वोह सिर्फ़ ख़ित़ाब न करें, बल्कि दिलों से तअ़ल्लुक़ पैदा करें।

दुआ और फ़ैज़ान के ज़रीए सलाह़िय्यत उजागर करना : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबा की सलाह़िय्यतों को पहचाना, उन के दिलों पर हाथ रख कर दुआ की, और उन के अन्दर पोशीदा बसीरत व फ़हम को जगाया। येह हमें सिखाता है कि हर शागिर्द, हर नौ आमोज़, हर मा तह़त में एक पोशीदा ख़ज़ाना होता है। एक अच्छा क़ाइद वोही होता है जो उसे तलाश करे, निखारे और उस पर एतिमाद करे।

मह़ब्बत भरे लम्स की त़ाक़त : आज के दौर में तरबियत, इस्लाह़ और राहनुमाई का अमल सख़्त कलामी, तन्क़ीद और डांट डपट से ग़ैर मुअस्सिर हो जाता है। मगर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मह़ब्बत और जिस्मानी नर्मी (हाथ रख कर दुआ देना) को ज़रीआ बनाया, इस अन्दाज़ को आज के वालिदैन, उसातिज़ा, उलमा और राहनुमाओं को अपनाना चाहिये ताकि दिल में तब्दीली आए।

हर फ़र्द को उस की अहलियत के मुत़ाबिक़ मौक़अ़ देना : ह़ज़रते अ़ली, मुआज़, इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم जैसे नौ जवानों को हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बड़े कामों के लिये चुना, उन पर हाथ रख कर दुआएं कीं और उन पर एतिमाद फ़रमाया। आज के क़ाइदीन को भी नौ जवानों पर भरोसा करना सीखना चाहिये, उन्हें मवाक़ेअ़ देना चाहियें और उन की फ़िक्री तरबियत करनी चाहिये।

बात़िन की इस्लाह़ को मुक़द्दम रखना : बाज़ वाक़िआत में रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सीने पर हाथ रक कर हिदायत के मिलने और शैत़ान से बचने की दुआ फ़रमाई, क़ियादत का अस्ल मक़्सद सिर्फ़ ज़ाहिरी तब्दीली नहीं बल्कि बात़िनी सफ़ाई और फ़िक्री बेदारी है। आज के मुबल्लिग़ीन और राहनुमाओं को दिलों पर काम करने की ज़रूरत है।

क़ियादत शिफ़ा और रह़मत बने, सख़्ती और रोब नहीं : क़ियादत का अस्ल जौहर उस वक़्त नुमायां होता है जब वोह सिर्फ़ राह दिखाने वाली न हो बल्कि दर्द बांटने वाली हो, और छोटों पर शफ़्क़त करने वाली हो। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बीमारी और तक्लीफ़ के मवाक़ेअ़ पर सह़ाबा के साथ शरीके ग़म हुए, उन की इयादत की, उन के सिरहाने बैठे, दिलजोई की और सीने पर हाथ रख कर शिफ़ा की दुआ दी। जब ह़ज़रते सअ़द बीमार हुए तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के पास जा कर न सिर्फ़ तसल्ली दी बल्कि इलाज की जानिब राहनुमाई भी फ़रमाई।

फ़ैसला साज़ी में अ़क़्ल और बसीरत की तरबियत देना : ह़ज़रते मुआज़ बिन जबल के वाक़िए से हमें सीखना चाहिये कि क़ियादत फ़ैसला साज़ी की तरबियत देना भी है। ज़ेहनी सलाह़िय्यतों में इज़ाफ़ा करना और अख़्लाक़ी बसीरत उभारना भी है ताकि मा तह़त ख़ुद सोच सकें।

अल ग़रज़ आज का क़ाइद, सरपरस्त, आलिम, उस्ताज़, बुज़ुर्ग, बाप या मां अगर वाक़ेई असर अंगेज़ बनना चाहते हैं तो उन्हें रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ैज़ भरे अन्दाज़ को अपनाना होगा, नर्मी से दिल जीतना, दुआओं से इस्लाह़ करना, एतिमाद से किरदार बनाना, इल्म से सीने मुनव्वर करना, रूह़ानियत से रौशनी बांटना और सब से बढ़ कर मह़ब्बत से सीने को ठन्डक देना।

अल्लाह करीम हमें अपने छोटों के लिये ऐसे ही शफ़्क़त व तरबियत भरा अन्दाज़ अपनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। आमीन

---

(1)معجم کبیر، 236/12، حدیث:13191(2)ابن ماجہ، 90/3، حدیث:2310 (3)معجم کبیر، 237/10، حدیث:10585(4)ابوداؤد، 11/4، حدیث:3875 (5)دیکھئے: مراٰۃ المناجیح، 41/6(6)دیکھئے: مسند امام احمد، 274/10، حدیث: 27023(7)مسلم، ص315، حدیث:1885(8)دیکھئے: مسلم، ص318، حدیث: 1904(9)مراٰۃ المناجیح، 278/3(10)ابوداؤد، 424/3، حدیث: 3592 (11)مراٰۃ المناجیح، 380/5(12)دیکھئے: بخاری، 125/3، 126، حدیث: 4357 (13)دیکھئے: مراٰۃ المناجیح، 205/8(14)دیکھئے: معجم کبیر، 47/9، حدیث:8347- دلائل النبوہ لابی نعیم، ص277، حدیث:396(15)دیکھئے: تاریخ ابن عساکر، 21/20- کنزالعمال، جز13، 123/7، حدیث:36819-خصائص کبریٰ للسیوطی، 142/2(16)معجم اوسط، 210/6، حدیث: 8536(17)دیکھئے: معجم کبیر، 77/14، حدیث:14682- الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، 261/7 (18)دارمی، 320/2، حدیث: 2533(19)دیکھئے: معجم کبیر، 157/2، حدیث: 1651- الترغیب والترہیب، 131/3، حدیث:24(20)ذوقِ نعت، ص136۔

सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मन्ज़ूम नज़राने

सच्चा मुसलमान बनने के लिये रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत ज़रूरी है। इस महब्बत का इज़्हार करने का अन्दाज़ हर किसी का अपना अपना होता है। कोई अपने महबूब आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाम पर जान क़ुरबान कर के महब्बत ज़ाहिर करता है तो कोई उन के नाम पर अपना घर बार, मालो औलाद फ़िदा कर के इज़्हारे महब्बत करता है। कोई नामे मुहम्मद सुन कर अपने अंगूठे चूम कर महब्बत ज़ाहिर करता है तो कोई नाते रसूले मक़्बूल लिख कर या पढ़ कर इश्क़े रसूल के जज़्बात को ज़ाहिर करता है।

इज़्हारे महब्बते रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के येह मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मुबारक ज़माने में भी पाए जाते थे। येह मुक़द्दस हस्तियां अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपनी महब्बत कभी नसर में ज़ाहिर करतीं तो कभी नज़्म की सूरत में।

आइये ! बारगाहे रिसालत में सहाबए किराम के मन्ज़ूम नज़रानए अक़ीदत की कुछ झलकियां देख कर अपने दिलों में इश्क़े रसूले मक़्बूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में मज़ीद इज़ाफ़ा करते हैं।

ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ

नात ख़्वां ह़ज़रात के मुक़द्दस क़ाफ़िले के सालार और मीरे कारवां, अज़ीम सहाबिये रसूल, नात गो व नात ख़्वां ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ हैं। आप की ख़ुश नसीबी और मुक़द्दर की यावरी का अन्दाज़ा इस रिवायत से लगाया जा सकता है :

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत है : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते ह़स्सान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के लिये मस्जिद में मिम्बर रखवाते थे जिस पर खड़े हो कर वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से फ़ख़्र करते या (कुफ़्फ़ार के एतिराज़ात) दूर करते थे। और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते थे :

अल्लाह पाक जिब्रीले अमीन के ज़रीए ह़स्सान की मदद फ़रमा जब तक वोह अल्लाह के रसूल की त़रफ़ से फ़ख़्र करते हैं या एतिराज़ात दूर करते हैं।(1)

मेरी इ़ज़्ज़त उन के लिये ढाल है

ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के नातिया क़साइद में से एख क़सीदे के मुन्तख़ब अश्आर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

هَجَوْتَ مُحَمَّدًا فَاَجَبْتُ عَنْهُ
وَعِنْدَ اللّٰهِ فِيْ ذَاكَ الْجَزَاءُ

तुम ने मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिजो (बुराई की) तो मैं ने उन की त़रफ़ से जवाब दिया, और उस की अस्ल जज़ा तो अल्लाह पाक के ही पास है।

هَجَوْتَ مُحَمَّدًا بَرًّا حَنِيفًا
رَسُوْلَ اللّٰهِ شِيْمَتُهُ الْوَفَاءُ

तुम ने मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिजो (बुराई की) जो

नेकोकार और बातिल से एराज़ करने वाले हैं, वोह अल्लाह के रसूल हैं और वफ़ा करना उन की ख़स्लत है,

فَاِنَّ اَبِی وَوَالِدَتِی وَعِرۡضِی
لِعِرۡضِ مُحَمَّدٍ مِنۡكُمۡ وِقَاءُ

बिलाशुबा मेरे मां बाप और मेरी इज़्ज़त, तुम से मुहम्मद صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इज़्ज़त बचाने के लिये ढाल है।

وَقَالَ اللّٰهُ قَدۡ اَرۡسَلۡتُ عَبۡدًا
يَقُولُ الۡحَقَّ لَيۡسَ بِهِ خَفَاءُ

अल्लाह पाक फ़रमाता है : मैं ने एक बन्दे को रसूल बना कर भेजा है, जो ह़क्क़ बात कहता है और उस में कोई पोशीदगी नहीं है।[2]

मैं भी अद्लो इन्साफ़ करता हूं

ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللہُ عَنۡہ ने एक बार नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह अश्आर सुनाए :

شَهِدۡتُ بِاِذۡنِ اللّٰهِ اَنَّ مُحَمَّدًا
رَسُوۡلُ الَّذِی فَوۡقَ السَّمَاوَاتِ مِنۡ عَلُ

अल्लाह पाक की इजाज़त से मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस हस्ती के रसूल हैं जिस की बादशाहत आस्मानों के ऊपर है और वोह बुलन्दो बाला है,

وَاَنَّ اَبَا يَحۡيٰى وَ يَحۡيٰى كِلَاهُمَا
لَه عَمَلٌ فِی دِينِه مُتَقَبَّلُ

और येह कि ह़ज़रते अबू यह़्या (ज़करिया) और ह़ज़रते यह़्या (عَلَیۡہِمَا السَّلَام) के अमल हमारे दीन में भी मक़्बूल हैं।

وَاَنَّ اَخَا الۡاَحۡقَافِ اِذَا قَامَ فِيهِمۡ
يَقُولُ بِذَاتِ اللّٰهِ فِيهِم وَيَعۡدِلُ

और येह कि क़ौमे अह़क़ाफ़ के भाई (ह़ज़रते हूद عَلَیۡہِ السَّلَام) जब उन के दरमियान खड़े होते तो उन्हें अल्लाह की त़रफ़ बुलाते और अद्लो इन्साफ़ से काम लेते।

नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : और मैं (भी अल्लाह की त़रफ़ बुलाता, अद्लो इन्साफ़ करता हूं)।[3]

ख़ुश नसीब बच्चियां

नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब अल्लाह के हुक्म से मदीनए मुनव्वरा हिजरत की तो अहले मदीना आप के इस्तिक़बाल के लिये अपने घरों से बाहर आ गए उस वक़्त मदीनए पाक की छोटी छोटी बच्चियों ने आप के इस्तिक़बाल में यूं नज़रानए नात पेश किया :

طَلَعَ الۡبَدۡرُ عَلَيۡنَا مِنۡ ثَنِيَّاتِ الۡوَدَاعِ
وَجَبَ الشُّكۡرُ عَلَيۡنَا مَا دَعَا لِلّٰهِ دَاعٍ

हम पर चौदहवीं का चांद ثَنِيَّاتِ الۡوَدَاعِ (यानी वदाअ की घाटियों) की त़रफ़ से तुलूअ हुवा। हम पर शुक्र वाजिब है कि आप ने हमें अल्लाह की त़रफ़ दावते ह़क़ दी।[4]

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ عَنۡہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा में एक जगह से गुज़रे तो चन्द लड़कियां येह नातिया शेर पढ़ रही थीं :

نَحۡنُ جَوَارٍ مِّنۡ بَنِی النَّجَّارِ
يَا حَبَّذَا مُحَمَّدٌ مِنۡ جَارِ

हम बनू नजार की बच्चियां कितनी ख़ुश नसीब हैं कि मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पड़ोसी हैं।

नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَللّٰهُ يَعۡلَمُ اِنِّیۡ لَاُحِبُّكُنَّ यानी अल्लाह पाक जानता है कि मैं तुम से मह़ब्बत रखता हूं।[5]

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन बच्चियों के लिये येह दुआ की :

اَللّٰهُمَّ بَارِكۡ فِيۡهِنَّ यानी ऐ अल्लाह ! उन्हें बरकत अत़ा फ़रमा।[6]

इमाम बैहक़ी की रिवायत में है कि रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन बच्चियों के पास गए और फ़रमाया : اَتُحِبُّوۡنِی क्या तुम मुझ से मह़ब्बत करती हो ?

उन्हों ने अर्ज़ किया : اِی وَاللّٰهِ يَا رَسُولَ اللّٰهِ، जी हां, या रसूलल्लाह ! अल्लाह की क़सम ! आप صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया

اَنَا وَاللّٰهِ اُحِبُّكُمۡ، وَاَنَا وَاللّٰهِ احبكم، انا وَاللّٰهِ اُحِبُّكُمۡ

“अल्लाह की क़सम ! मैं भी तुम से मह़ब्बत करता हूं, और अल्लाह की क़सम ! मैं तुम से मह़ब्बत करता हूं, अल्लाह की क़सम ! मैं तुम से मह़ब्बत करता हूं !”[7]

नातिया क़सीदा सुन कर चादर अ़ता फ़रमाई

सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कअब बिन ज़ुहैर رَضِیَ اللہُ عَنْہ का ख़ून उन के ज़मानए नसरानियत में (इस्लाम क़बूल करने से पहले) मुबाह़ फ़रमा दिया। उन के भाई बुजैर बिन ज़ुहैर رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने उन्हें लिखा : فطر اليه فانه لا يرد من جاء تائبا यानी उन की बारगाह में उड़ कर आओ, जो उन के सामने मुआफ़ी मांगता ह़ाज़िर हो येह उसे कभी रद नहीं फ़रमाते।

इसी बिना पर ह़ज़रते कअब رَضِیَ اللہُ عَنْہ जब ह़ाज़िर हुए, रास्ते में क़सीदए नातिया "بَانَتْ سُعَاد" नज़्म किया जिस में अर्ज़ करते हैं :

أُنْبِئْتُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ اَوْعَدَنِيْ
وَالْعَفْوُ عِنْدَ رَسُوْلِ اللهِ مَاْمُوْلُ
فَقَدْ اَتَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ مُعْتَذِرًا
وَالْعُذْرُ عِنْدَ رَسُوْلِ اللهِ مَقْبُوْلُ

मुझे ख़बर पहुंची है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे लिये सज़ा का हुक्म फ़रमाया है और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के यहां मुआफ़ी की उम्मीद की जाती है। मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में माज़ेरत करता ह़ाज़िर हुवा हूं, और उन की बारगाह में उ़ज़्र क़बूल किया जाता है।[8]

ह़ज़रते कअब رَضِیَ اللہُ عَنْہ जब इस शेर पर पहुंचे :

اِنَّ الرَّسُوْلَ لَنُوْرٌ يُّسْتَضَاءُ بِهٖ
مُهَنَّدٌ مِّنْ سُيُوْفِ اللهِ مَسْلُوْلُ

बेशक रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसे नूर हैं जिस से रौशनी ह़ासिल की जाती है, वोह अल्लाह पाक की तल्वारों में से एक बे नियाम हिन्दी तल्वार हैं।

तो रह़मते आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी मुबारक चादर उन्हें अ़ता फ़रमाई। ह़ज़रते अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने दस हज़ार दिरहम में वोह चादर ह़ासिल करना चाही लेकिन ह़ज़रते कअब رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चादर के लिये मैं किसी को अपनी ज़ात पर तरजीह़ नहीं देता। ह़ज़रते कअब رَضِیَ اللہُ عَنْہ की वफ़ात के बाद ह़ज़रते अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने बीस हज़ार दिरहम में वोह चादर उन के वुरसा से ह़ासिल की।[9]

शेर में तरमीम करवाई

ह़ज़रते कअब رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने अपने इस क़सीदए नातिया में अर्ज़ किया :

اِنَّ الرَّسُوْلَ لَنَارٌ يُّسْتَضَاءُ بِهٖ
وَصَارِمٌ مِّنْ سُيُوْفِ الْهِنْدِ مَسْلُوْلُ

इरशाद हुवा : "नार" की जगह "नूर" कहो और सुयूफ़िल हिन्द की जगह सुयूफ़िल्लाह।[10]

येह मुबारक क़सीदा 48 अश्आर पर मुश्तमिल है।[11]

अल्लाह पाक उन नात गो, नात ख़्वां सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और मदीनए मुनव्वरा की ह़क़ीक़ी मदनी मुन्नियों के सदक़े हमें और हमारी आने वाली नस्लों को मरते दम तक अल्लाह के मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मद्ह़ो सना की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صلی اللہ علیہ واٰلہ وسلم

---

(1) مشکوٰۃ المصابیح، 2/188، حدیث: 4805 (2) مسلم، ص1038، حدیث: 6395 (3) مسند ابویعلی، 2/35، حدیث: 2645 (4) البدایۃ و النہایہ، 2/583 (5) ابن ماجہ، 2/439، حدیث: 1899 (6) مسند ابویعلی، 3/210، حدیث: 3396 (7) دلائل النبوۃ للبیہقی، 2/508 (8) مطالع المسرات، ص104، المجموعۃ النبہانیہ، 3/8، فتاویٰ رضویہ، 15/653 (9) سیرۃ حلبیہ، 3/302- معجم کبیر، 19/178 (10) ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت، ص242 (11) السنن الکبری للبیہقی، 10/412، حدیث: 21142۔

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये

रबीउल अव्वल इस्लामी साल का तीसरा महीना है। इस में जिन सहाबए किराम, औलियाए उज़्ज़ाम और उलमाए इस्लाम का विसाल या उर्स है, उन में से 12 का तआरुफ़ मुलाहज़ा फ़रमाइये :

सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان

शोहदाए जंगे यमामा : जंगे यमामा हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के दौरे ख़िलाफ़त में रबीउल अव्वल 12 हि. को हज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की कमान्ड में झूटे मुद्दई नुबुव्वत मुसैलमा कज़्ज़ाब और उस के पैरोकार क़बाइल से यमाम व अक़्रिबा (सूबा ख़र्ज, अरब शरीफ़) के मक़ाम पर लड़ी गई, इस में मुसलमानों को फ़त्ह हासिल हुई, मुसैलमा कज़्ज़ाब अपने 20 हज़ार साथियों समेत मारा गया, तक़रीबन एक हज़ार 2 सौ मुजाहिदीन शहीद हुए जिन में अकाबिर सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم भी थे।(1)

1 सय्यिदुल औस हज़रते उबाद बिन बिशर अन्सारी अश्हली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه क़दीमुल इस्लाम सहाबी और कसीरुल फ़ज़ाइल हैं, आप का शुमार किबार सहाबा और नक़बाए मदीना में होता है। आप ने तमाम ग़ज़्वात में हिस्सा लिया, रात में हारिसीने नबवी में शामिल होते और दिन में जिहाद फ़रमाते, आम दिनों में भी शब बेदारी फ़रमाते, इस वस्फ़ की वजह से नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के लिये दुआए ख़ास फ़रमाई। 45 साल की उम्र में जंगे यमामा (रबीउल अव्वल 12 हि.) में शहीद हुए।(2)

उलमाए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام

2 इमाम अबू दाउद सुलैमान बिन दाउद बसरी तयालिसी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه बुलन्द पाया आलिमे दीन और हाफ़िज़े हदीस हैं, उन के बारे में कहा गया है कि उन्हों ने 40 हज़ार अहादीस अपने हिफ़्ज़ से बयान कीं। उन की तस्नीफ़ मस्नदे अबू दाऊद तयालिसी उन की पहचान है। 71 साल की उम्र पा कर माहे रबीउल अव्वल 204 हि. में विसाल हुवा।(3)

मज़ार हज़रते ख़्वाजा महमूद इन्जीर फ़ग़नवी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه

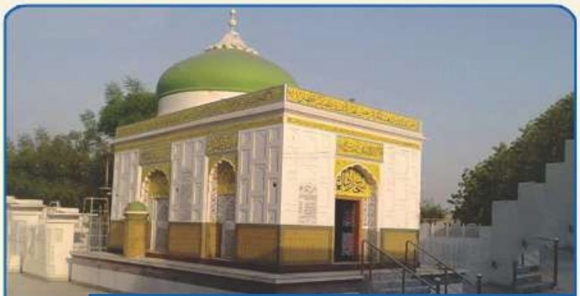

मज़ार सय्यिद हसन बदरुद्दीन दीवान गीलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه

मज़ार डॉक्टर सय्यिद मुज़ाहिर अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه

3 शैख़ुल इस्लाम इमाम मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रियाबी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की पैदाइश 120 हि. में हुई, येह सिक़ह रावी हदीस, मुहद्दिसीन में मक़्बूल, मुस्तजाबुद्दावात, बद मज़हबों से बेज़ार, हज़रते सुफ़्यान सौरी के सोहबत याफ़्ता, इमाम अहमद बिन हम्बल और इमाम बुख़ारी के उस्ताज़ हैं। उन की वफ़ात माहे रबीउल अव्वल में सिन 212 हि. में हुई।(4)

4 मौलाना अब्दुर्रहीम नक़्शबन्दी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की पैदाइश 1329 हि. में हुई और 8 रबीउल अव्वल 1387 हि. को वफ़ात पाई। आप आलिमे दीन, हकीमे हाज़िक़, इस्लामी शाइर, जामेअ मस्जिद के इमामो ख़तीब और मजाज़े तरीक़त थे। रिज़्क़े हलाल के हुसूल के

लिये ज़िन्दगी भर अपने क़ाइम कर्दा मत़ब में त़बाबत करते रहे। मत़ब के आग़ाज़ से पहले रोज़ाना क़ुरआने करीम के 5 पारे तिलावत किया करते थे, कुतुब में तोह़फ़ए रह़ीमिया मन्ज़ूमा यादगार है।(5)

5 तल्मीज़े हुज्जतुल इस्लाम व सदरुश्शरीआ, शैख़ुल उलमा ह़ज़रते मौलाना ग़ुलाम जीलानी आज़मी घोसी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه आज़म गढ़ में 1320 हि. में पैदा हुए और 6 रबीउल अव्वल 1397 हि. को जाए पैदाइश में फ़ौत हुए। आप उस्ताज़ुल उलमा, शैख़ुल ह़दीस, माहिर अरबी अदब, सिल्सिलए क़ादिरिय्या बरकातिया रज़विय्या के मजाज़, सदरुल मुदर्रिसीन और मुह़श्शी कुतुबे दर्स निज़ामी थे।(6)

6 शैख़े त़रीक़त ह़ज़रते मौलाना पीर फ़क़ीर मुह़म्मद अरशद पनाहवी क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 5 मई 1925 ई. को हुई और विसाल 5 रबीउल अव्वल 1407 हि. को हुवा, आप का मज़ार दारुल अरवाह़ जामिआ सूफ़िया में है। आप तल्मीज़े ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत शाह अबुल बरकात, फ़ाज़िले दारुल उलूम ह़िज़्बुल अह़नाफ़, ह़ाज़िक़ त़बीब, नक़्शबन्दिया, क़ादिरिय्या और सोहरवर्दिया सलासिल के फ़ैज़ याफ़्ता, तसव्वुफ़ से मुतअल्लिक़ 8 कुतुब के मुसन्निफ़, साह़िबे दीवान शाइर और बानिये जामिआ सूफ़िया थे।(7)

7 उस्ताज़ुल उलमा मौलाना अबुल फ़ज़्ल अल्लाह दित्ता सियालवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه 22 जुलाई 1942 ई. को पैदा हुए और यहीं यकुम रबीउल अव्वल 1422 हि. को विसाल फ़रमाया। आप जामिआ नईमिया, जामिआ शम्सिया रज़विय्या से मुस्तफ़ीज़ दारुल उलूम ह़िज़्बुल अह़नाफ़ और जामिआ क़ादिरिय्या रज़विय्या के मुदर्रिस, ज़ियाउल उलूम जामिआ शम्सिया रज़विय्या के बानी व मुदर्रिस, मर्कज़ी जामेअ मस्जिद ताजदारे मदीना के इमामो ख़त़ीब, 13 से ज़ाइद कुतुबो रसाइल और मक़ालात के मुसन्निफ़ हैं।(8)

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام

8 ह़ज़रते ख़्वाजा मह़मूद इन्जीर फ़ग़नवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत 18 शव्वाल 627 हि. को इन्जीर फ़ग़ना निज़्द बुख़ारा (उज़्बेकिस्तान) में हुई और विसाल 17 रबीउल अव्वल 717 हि. को फ़रमाया, मज़ार व अबकिना निज़्द बुख़ारा में है। आप ह़ज़रते ख़्वाजा आरिफ़ रेवगिरी के तमाम अस्ह़ाब व मुरीदीन में अफ़्ज़लो अकमत थे, मशाइख़ नक़्शबन्द में आप ही थे जो ज़िक्र जेहर फ़रमाया करते थे।(9)

9 नासिरुल मिल्लत ह़ज़रते अल्लामा पीर सय्यिद अह़मद शाह जीलानी क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत 1259 हि. और 12 रबीउल अव्वल 1299 हि. को विसाल फ़रमाया, मज़ार शहर बाड़मेर (राजस्थान) के बड़े क़ब्रस्तान में है जिसे नीम का तक्या (फ़ातिह़ा चौक) कहा जाता है, आप मुसन्निफ़ कुतुबो रसाइल, आलिमे बा अमल, मुदर्रिसे इस्लामी कुतुब, ख़लीफ़ा नक़ीबुल अशराफ़ बग़दाद और बा करामत वलियुल्लाह थे।(10)

10 क़ुत़्बे ज़मां ह़ज़रते सय्यिद ह़सन शाह बदरुद्दीन दीवान गीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत बग़दाद शरीफ़ में 871 हि. में हुई, आप ख़ानदाने ग़ौसे आज़म के चश्मो चराग़, वलिय्ये कामिल, इल्मो अमल के जामेअ और साह़िबे करामात थे, आप का विसाल 12 रबीउल अव्वल 1018 हि. मिसानियां शरीफ़ रुदास पुर मशरीकी पंजाब हिन्द में हुवा, यहीं मज़ार है।(11)

11 अफ़्सरुल मशाइख़ ह़ज़रते ह़ाफ़िज़ ह़ाजी मह़मूद आरज़ू जालन्धरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ज़िन्दगी का एक हिस्सा जालन्धर में गुज़ारा, आप बाबा मुह़म्मद शरीफ़ क़न्धारी के मुरीदो ख़लीफ़ा, निहायत ह़लीम व बुर्दबार, ख़लीक़ और कसीरुल फ़ैज़ थे, कसीर लोगों ने आप से रूह़ानिय्यत ह़ासिल की, आप का विसाल 8 रबीउल अव्वल 1306 हि. को हुवा, तदफ़ीन जालन्धर की बस्ती शैख़ के क़ब्रिस्तान में हुई।(12)

12 ख़लीफ़ा सरकारे कलां पीरे त़रीक़त डॉक्टर सय्यिद मज़ाहिर अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه सिल्सिलए अशरफ़िया के शैख़े त़रीक़त और दीनी दुन्यावी तालीम से आरास्ता थे, आप की पैदाइश 16 ज़ुलक़ादा 1356 हि. और वफ़ात 15 रबीउल अव्वल 1435 हि. को हुई। तदफ़ीन आस्तानए आलिया जीलानिया में हुई।

---

(1)اسد الغابہ، 2/341-تاریخ طبری، 3/61تا65-8/60تا75-سیرت سید الانبیاء، ص609(2)بخاری، 2/195، حدیث:2655-طبقات ابن سعد، 3/336-الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، 3/496(3)سیر اعلام النبلاء، 8/242تا245-خلاصہ تذہیب تہذیب الکمال، ص151(4)سیر اعلام النبلاء، 8/431تا433(5)تذکرہ رحیمیہ، ص5، 8، 17(6)سیرت صدر الشریعہ، ص231(7)روشن ستارے، ص210تا227(8)مقالات ابوالفضل، ھ تای(9)حضرات القدس، 1/139- تاریخ مشائخ نقشبند، ص132 (10)تذکرۂ ساداتِ لُونی شریف و سوجا شریف، ص276، 277، 291(11)حالات شاہ بدر دیوان، ص38تا81(12)تذکرۂ اولیائے جالندھر، ص206تا209-لمعات کمالات قادریہ و تبرکات خالقیہ، ص122

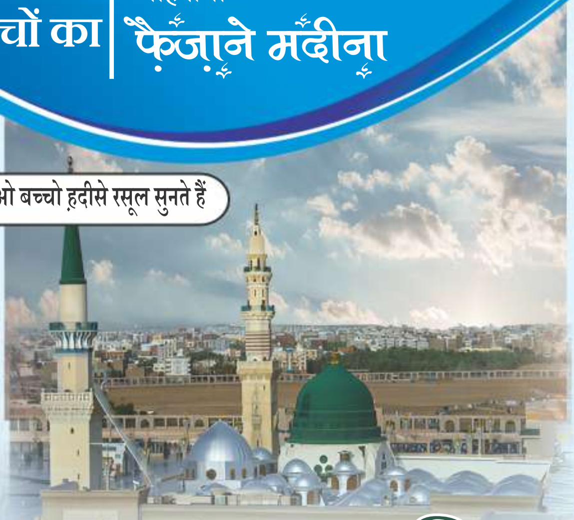

आला अख़्लाक़ की तक्मील वाले नबी صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

हमारे प्यारे नबी ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया اِنَّمَا بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ مَكَارِمَ الْاَخْلَاقِ यानी मुझे उम्दा अख़्लाक़ की तक्मील के लिये भेजा गया है।

(سنن کبریٰ للبیہقی،10/323،حدیث:20782)

येह ह़दीस शरीफ़ जवामेउल कलिम अह़ादीस में से एक है, जवामेउल कलिम वोह अह़ादीस हैं जिन में अल्फ़ाज़ कम और मफ़्हूम ज़ियादा बयान किया गया हो।

इस ह़दीसे पाक में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद अपनी आमद का मक़्सद बयान फ़रमाया है कि मैं लोगों को अच्छा इन्सान बनाने के लिये, अच्छे अख़्लाक़ की तालीम देने के लिये आया हूं।

हमारे प्यारे नबी की आमद का महीना रबीउल अव्वल जारी है, इस मुबारक महीने में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ुश करने के लिये आप भी ऐसे अच्छे अख़्लाक़ अपनाइये जिन को हमारे नबी ने अपनाया और उन का दर्स दिया। यहां चन्द अच्छे अख़्लाक़ ज़िक्र किये जा रहे हैं :

1 वालिदैन और बड़ों का अदबो एह़तिराम करने का दर्स हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने दिया, लिहाज़ा बच्चे बड़ों की इज़्ज़त करें, वालिदैन की बात मानें और उन का दिल ख़ुश कर के सवाब कमाए।

2 हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सच बोलने वाले और अमीन (यानी अमानतदार) थे, ग़ैर मुस्लिम जो हमारे नबी पर ईमान नहीं लाए वोह भी अपनी अमानतें आप के पास रखवाते और आप को "**सादिक़ व अमीन**" (सच बोलने वाला और अमानतों की ह़िफ़ाज़त करने वाला) कहते थे। अमानत की मिसाल येह है कि कोई दोस्त आप को अपनी किताब, खिलौना गाड़ी वग़ैरा दे और कहे कि वापस कर देना तो आप बग़ैर तोड़ फोड़ किये सह़ीह़ सलामत वापस कर दें तो येह अमानतदारी है।

3 अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वादे के पक्के थे, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने कभी वादा ख़िलाफ़ी नहीं की, आप भी जो वादा करें उसे पूरा करें।

4 नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खाने में ऐब नहीं निकालते थे बल्कि खाना पसन्द आता तो खा लेते वरना हाथ रोक लेते, बच्चों को भी चाहिये खाने में ऐब न निकालें मसलन यूं न कहें : खाना अच्छा नहीं है, नमक, मिर्च ज़ियादा है, वग़ैरा वग़ैरा।

5 प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी का मज़ाक़ नहीं उड़ाया न किसी को त़ाना दिया न किसी को गाली दी और न ही किसी का नाम बिगाड़ा, लिहाज़ा आप भी उन चीज़ों से बचें और प्यारे नबी के त़रीक़े को अपनाएं।

अच्छे बच्चो ! मीलाद का अस्ल मक़्सद येही है कि हम अपने प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी को पढ़ कर उसी के मुत़ाबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारें, येही कामयाबी है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुख़्तसर सीरत पढ़ने के लिये मकतबतुल मदीना की किताब "आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी सीरत" पढ़िये।

अल्लाह पाक हमें अपने प्यारे और आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरत पढ़ कर अमल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

आंखों के सामने से गुज़रे पर ख़बर न हुई

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मोजिज़ात जहां और बहुत से हसीन पहलूओं को उजागर करते हैं वहीं इस बात को भी ज़ाहिर करते हैं कि जब अल्लाह पाक को मन्ज़ूर होता वोह काफ़िरों से आप की हैरतनाक हिफ़ाज़त फ़रमाता चुनान्चे जब मक्का के काफ़िरों ने देखा कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और मुसलमानों के मददगार मक्का से बाहर मदीना में भी हो गए और मदीना जाने वाले मुसलमानों को अन्सार ने अपनी पनाह में ले लिया है तो उन्हें ख़तरा हुवा कि कहीं येह मदीने जा कर हम से जंग के लिये फ़ौज न तय्यार कर लें। चुनान्चे उन्हों ने अपने दारुन्नदवा (इजलास हाउस) में एक बड़ी कॉन्फ़रन्स रखी जिस में क़ुरैश के तमाम बा असर लोग और सरदार शरीक हुए। शैताने लईन भी एक बूढ़े शख़्स की सूरत में आया और बोला कि मैं **"शैख़े नज्द"** हूं इस कॉन्फ़रन्स का सुना तो आ गया, सरदारों ने उसे भी कॉन्फ़रन्स में शरीक कर लिया और फिर बा क़ाइदा हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुतअल्लिक़ मशवरा शुरूअ हो गया कि आख़िर इन के साथ क्या किया जाए, चुनान्चे वहां तीन अलग अलग मशवरे पेश किये गए : एक येह कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ज़न्जीरों में जकड़ कर क़ैद कर दिया जाए और दूसरा येह कि उन को मक्का से निकाल दिया जाए, शैतान ने इन दोनों मशवरों की ख़ामियां बयान कर के उन्हें ठुकरा दिया, तीसरा मशवरा अबू जहल ने दिया कि हर क़बीले का एक एक बहादुर हो और सब एक साथ हम्ला कर के मुहम्मद (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को क़त्ल कर डालें। क़त्ल का जुर्म तमाम क़बीलों के सर पर होगा ज़ाहिर है कि ख़ानदाने बनू हाशिम इस क़त्ल का बदला लेने को तमाम क़बीलों से लड़ नहीं सकेंगे लिहाज़ा यक़ीनन वोह ख़ून बहा की रक़म लेने पर राज़ी हो जाएंगे जो हम सब मिल जुल कर अदा कर देंगे। येह मशवरा सुन कर शैतान ने कहा : येह हुई ना बात ! येह मशवरा सब से बेहतर है चुनान्चे सब ने येही तै किया और वहां से चल दिये।

लिहाज़ा जिस रात उन काफ़िरों ने अपना येह नापाक मन्सूबा पूरा करना था उसी रात अल्लाह पाक के हुक्म से हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हिजरत करनी थी चुनान्चे हज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने आ कर रसूले अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अर्ज़ की : आज रात अपने इस बिस्तर पर न सोइएगा, रात को कुफ़्फ़ार आप के दरवाज़े के बाहर जमा हो गए ताकि आप सोएं तो हम्ला करें। रसूले अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सब देखा तो हज़रते अली رَضِیَ اللہُ عَنْہُ से फ़रमाया : मेरी येह सब्ज़ हज़रमी चादर ओढ़ कर मेरे बिस्तर पर सो जाओ, येह तुम्हें नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेंगे नीज़ उन्हें हिजरत के लिये अपनी रवानगी के बारे में बता कर हुक्म दिया कि मेरे पास लोगों की जो अमानतें हैं उन्हें उन के मालिकों को देने तक मक्का में ही रहना।

फिर हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुट्ठी भर मिट्टी ली और सूरए यासीन की इब्तिदाई चन्द आयात पढ़ते हुए उन काफ़िरों के पास से गुज़र गए बल्कि उन के सरों पर थोड़ी थोड़ी मिट्टी भी छिड़क दी मगर उन में से किसी को भी हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दिखाई न दिये। (سیرت ابن ہشام، ص191 تا 194)

- इज्तिमाई मशवरा अगर नेक निय्यती से किया जाए तो नतीजा अच्छा होता है और अगर बद निय्यती से किया जाए तो नतीजा नाकामी व रुस्वाई होता है।
- बुराई की मजलिसों में शरीक होना और बुराई की कोशिशों की हौसला अफ़्ज़ाई करना शैतान का शौक़ व मश्ग़ला है।

● सच्चे वफ़ादार और मुख़्लिस लोग ख़ुलूस और वफ़ादारी की ख़ातिर अपनी जान की भी परवा नहीं करते।

● सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दिल और जान क़ुरबान करने के लिये हर वक़्त तय्यार रहते थे।

● सच्ची कामयाबी हमेशा सच्चाई, दियानत और सब्र के ज़रीए हासिल होती है न कि ज़ुल्म, फ़रेब या साज़िश के ज़रीए।

● बुरे लोगों की कोशिशें ज़ियादा अर्सा कामयाब नहीं रहतीं

● किसी को दुशवार और ख़तरनाक काम सोंपते हुए उस की हिफ़ाज़त की तरफ़ भी भरपूर तवज्जोह रखनी चाहिये और उसे उस के महफ़ूज़ रहने की यक़ीन दहानी भी करवानी चाहिये जब कि उस की कोई सहीह वज्ह भी हो।

● दूसरों के नुक़्सान से ख़ुद को बचाने के लिये अपने गिर्दो पेश से बा ख़बर रहना और हालात का जाइज़ा लेते रहना मुफ़ीद है।

● मुख़्लिस और नेक मन्सूबों में जो लोग हमारे साथ शरीक हों उन्हें एक हद तक अपने राज़ बता देना राज़दारी के ख़िलाफ़ नहीं।

● लोगों के बुरे मन्सूबे और चालबाज़ियां अल्लाह पाक की छुपी तदबीर के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं।

● जिस पर अल्लाह पाक की मदद और हिफ़ाज़त का साया हो तो बड़े से बड़ा दुश्मन भी उस का कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

● कामिल तवक्कुल और एतिमाद सिर्फ़ अल्लाह पाक पर होना चाहिये क्यूंकि हक़ीक़त में वोही नजात देने वाला है।

● अक़्लमन्द वोह है जो ख़तरों में भी ख़ुद पर क़ाबू रख कर सहीह फ़ैसला करे और जब जिस्मानी ताक़त दिखानी हो तो जिस्मानी ताक़त और जब ज़ेहनी ताक़त दिखानी हो तो ज़ेहनी ताक़त दिखाए।

● नफ़्स पर क़ाबू और हिक्मते अमली के साथ फ़ैसले करना बहादुरी की आला मिसाल है, न कि सिर्फ़ ज़ाहिरी क़ुव्वत दिखाना।

● हर सूरत में अमानत उस के मालिक तक पहुंचा देनी चाहिये अगर ख़ुद न पहुंचा सकें तो दूसरा तरीक़ा इख़्तियार करना चाहिये।

● जान का ख़तरा होने के बा वुजूद फ़राइज़ की अदाएगी का लिहाज़ रखना ईमान की पुख़्तगी की अलामत है।

हुरूफ़ मिलाइये !

प्यारे बच्चो ! रबीउल अव्वल का महीना मुसलमानों के लिये ख़ुशी, अक़ीदत और महब्बत का महीना है, क्यूंकि उसी महीने हमारे प्यारे नबी मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस दुन्या में तशरीफ़ लाए। रबीउल अव्वल दिलों में इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पैदा करने का बेहतरीन मौक़अ होता है। इश्क़े रसूल में इज़ाफ़े के लिये येह काम कीजिये : 1 नात ख़्वानी का एहतिमाम कीजिये 2 सीरते नबवी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मुश्तमिल वाक़िआत सुनिये और सुनाइये 3 सीरते मुस्तफ़ा पर मुश्तमिल छोटे छोटे सुवालो जवाब का मुक़ाबला कीजिये 4 ज़ियादा से ज़ियादा दुरूद शरीफ़ की महाफ़िल सजाइये 5 सीरत का कार्ड्ज़ या सीरत पोस्टर्ज़ बनाइये 6 वालिद साहिब या बड़े भाई के साथ जुलूसे मीलाद में शिर्कत कीजिये।

ج	ض	ا	ر	د	و	ر	د	ص
ل	ن	ہ	م	ی	ل	ع	ت	ف
و	ط	د	ن	ج	ت	ر	ی	س
س	ب	م	ر	ل	س	ا	ر	ی
ح	ن	ی	ر	ک	ش	ک	ا	ث
ت	ش	ل	ت	ع	ف	ن	ر	ا
ر	ل	ا	م	ع	ت	س	س	ش
ا	ب	د	ا	س	ح	ا	و	ک
م	ی	ئ	و	چ	س	ا	ل	ر

आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर पांच अल्फ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ "**शुक्र**" तलाश कर के बताया गया है। तलाश किये जाने वाले 5 अल्फ़ाज़ येह हैं :

1 جُلوس 2 سیرت 3 رسول 4 میلاد 5 دُرُود۔

तरबियते औलाद के मुस्तफ़वी उसूल

औलाद की तरबियत की अहमिय्यत से इन्कार मुम्किन ही नहीं है क्यूंकि तरबियत ही इन्सान की शख़्सियत को निखारती, मुआशरे का मुफ़ीद इन्सान बनाती है, तरबियत सीखे हुए इल्म को अमल में लाने और दुरुस्त सम्त में इस्तिमाल का तरीक़ा सिखाती है। तरबियत याफ़्ता औलाद ही दीनो मिल्लत का बेहतरीन सरमाया बनती है। लिहाज़ा वालिदैन को चाहिये अपनी औलाद की दीनी व दुन्यवी तरबियत को हरगिज़ नज़र अन्दाज़ न करें।

बच्चे और बच्चियां अल्लाह करीम का अनमोल तोहफ़ा हैं, इस लिये उन से बदसुलूकी हरगिज़ इख़्तियार नहीं करनी चाहिये। चूंकि बचपन में तो अल्लाह पाक के यहां भी उन के "**गुनाह**" शुमार नहीं होते लिहाज़ा बच्चे अगर जान बूझ कर भी कोई ना पसन्दीदा काम कर डालें, क़ीमती चीज़ को नुक़्सान पहुंचा दें तो भी उन्हें मारने की ज़रूरत नहीं बल्कि उन्हें नर्मी से समझाया जाए और ना पसन्दीदा बातों से दूरी इख़्तियार करने की तरग़ीब हकीमाना अन्दाज़ में दी जाए।

नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरत बहैसिय्यत मुरब्बी

नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते अक़्दस मुअल्लिमे आज़म है और उसी पर आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ख़्र करते हुए फ़रमाते हैं : मुझे मुअल्लिम बना कर भेजा गया है।[1]

तारीख़ आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुअल्लिमाना तर्ज़, मुरब्बियाना अन्दाज़े फ़िक्रो नज़र पर आज भी हैरान है। हमारे नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसे मुअल्लिमे आज़म हैं कि जहालत के अन्धेरों में खोए हुए लोग हिदायत के चमकते दमकते रौशन सितारे बन गए।

रसूले पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कोई अपने बच्चे को अदब की तालीम दे उस के लिये इस से बेहतर है कि एक साअ ख़ैरात करे।[2] यानी अपनी औलाद को एक अच्छी बात सिखाना ख़ैरात करने से अफ़्ज़ल है।[3]

इसी तरह एक और रिवायत में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ का बयान है कि फ़स्ल का कोई फल पकता तो लोग उसे रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाया करते, आप इस पर येह दुआ करते : ऐ अल्लाह ! हमारे लिये हमारे मदीने में, हमारे फलों में और हमारे मुद और साअ में बरकत दे। इस के बाद जो बच्चे ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा करते उन में सब से छोटे को वोह फल इनायत फ़रमा देते।[4]

तालीमो तरबियत का आग़ाज़ बचपन से बच्चों की तालीमो तरबियत का आग़ाज़ उन की विलादत से पहले ही हो जाता है यानी ज़मानए ह़म्ल के दौरान मां के अक़ाइदो नज़रियात, अफ़्आलो किरदार का असर उस के पैदा होने वाले बच्चे पर पड़ता है। चुनान्चे मन्क़ूल है कि रज़ाअत तबीअत को बदल देती है।[5]

इस लिये मां को चाहिये इस दौर में ख़ास तौर पर नमाज़ों ज़िक्रो अज़्कार और तिलावते क़ुरआन का एहतिमाम करे हर वक़्त गुनाहों से बचे बिल ख़ुसूस उस ज़माने में गुनाह व ना फ़रमानी से ख़ुद को बचाए कि इस के मन्फ़ी असरात से बच्चा मुतअस्सिर न हो, विलादत के बाद बचपन ही से मरहलावार बच्चे के अन्दर इस्लामी

अक़ाइदो नज़रियात को पुख़्ता किया जाए, नमाज़ की पाबन्दी का ज़ेहन दिया जाए बल्कि अपने साथ नमाज़ पढ़वाई जाए, प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बच्चों को नमाज़ का हुक्म दो जब सात साल के हो जाएं और जब दस साल के हो जाएं तो नमाज़ न पढ़ने पर उन्हें मारो।[6]

सात आठ बरस की उम्र में बच्चे अच्छे और बुरे के दरमियान तमीज़ करने के क़ाबिल हो जाते हैं। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब किसी ऐसे बच्चे को ग़लत हरकत करता देखते तो उसे प्यार, शफ़क़त और अच्छे अन्दाज़ में समझाते थे। उन को बताते कि सहीह क्या है और ग़लत क्या। येह नहीं कि उन्हें डांटते डपटते या दूसरों के सामने ज़लील करते।

अमली नमूना पेश करना मां बाप जो अपनी औलाद की दीनी, दुन्यावी, रूहानी और अख़्लाक़ी तरबियत करना चाहते हैं उन्हें चाहिये कि अच्छी आदात व अच्छे अख़्लाक़ अपनाएं क्यूंकि बच्चे नसीहत और बातों से इतना नहीं सीखते जितना वोह अपने बड़ों को देख कर सीखते हैं अगर वालिदैन ख़ुद इस्लामी तालीमात पर अमल पैरा होंगे तो उन को देख कर बच्चों में भी दीनी शुऊर बेदार होगा।

दीनी तालीम व अख़्लाक़ी तरबियत आप की औलाद सिर्फ़ आप के बच्चे ही नहीं बल्कि अल्लाह करीम के बन्दे और उम्मते मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अफ़राद हैं, उम्मते मुस्लिमा का क़ीमती सरमाया हैं, क़ौम की ताक़त हैं इस लिये वालिदैन की अहम जिम्मेदारी है कि उन बच्चों को अपने फ़राइज़े मन्सबी से आगाह करें, उन के अन्दर दीनी रूह फूंकें। उस के लिये दीन की बुन्यादी तालीम देना निहायत ज़रूरी है। लिहाज़ा बच्चे की ज़ेहनी सत्ह के मुताबिक़ तौहीदो रिसालत और दीगर बुन्यादी अक़ाइद को दिलो दिमाग़ में पुख़्ता किया जाए जिन के मानने से एक इन्सान सहीहुल अक़ीदा आशिक़े रसूल मोमिन बनता है इस के साथ साथ आदाबे ज़िन्दगी सिखाने और अख़्लाक़ व किरदार को संवारने पर मुकम्मल तवज्जोह देनी चाहिये चुनान्चे इस सिल्सिले में आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका हमारे लिये उस्वए हसना है।

हज़रते उमर बिन अबी सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا कहते हैं : मैं जब छोटा था तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ खाना तनावुल करते हुए मेरा हाथ बरतन में इधर उधर चला जाता था। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ऐ लड़के ! अल्लाह का नाम लो, दाएं हाथ से खाओ और अपने क़रीब से खाओ।[7]

बच्चों से महब्बतो शफ़क़त बच्चों से महब्बतो शफ़क़त नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ास वस्फ़ रहा है। चुनान्चे हज़रते बरा बिन आज़िब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते हसन बिन अली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا को अपने कन्धों पर बिठाया हुवा है और आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे हैं : ऐ अल्लाह ! मैं भी इस से महब्बत करता हूं तू भी इस से महब्बत कर।[8]

महब्बत, शफ़क़त व नर्मी औलाद का बुन्यादी हक़ है। हुज़ूरे सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बच्चों पर बहुत ही शफ़ीक़ थे बच्चों को सलाम में पहल करते, उन को गले लगाते, मुंह चूमते, प्यार से सूंघते उन की न्रमी व महब्बत से तरबियत फ़रमाते, लिहाज़ा इस सिल्सिले में नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उस्वए हसना की पैरवी करते हुए अपनी औलाद की तरबियत प्यार, महब्बत व नर्मी से की जाए वरना बे जा सख़्ती और वक़्त बे वक़्त की डांट डपट बच्चों को ढीट व ना फ़रमान बना देती है। सब के सामने डांट कर समझाना बच्चों को ज़लील करने के मुतरादिफ़ है। बच्चों की तरबियत उन की उम्र और ज़ेहनी सत्ह के एतिबार से मरहलावार की जाए जैसे जैसे बच्चों की उम्र बढ़ती जाए वैसे ही उन की तरबियत का मेयार भी बढ़ता जाए।

बच्चों की तरबियत में उन की नफ़्सिय्यात का लिहाज़ रखना भी ज़रूरी है हिक्मते अमली के साथ उन के अन्दर पोशीदा सलाहिय्यतों को उजागर किया जाए उम्दा काम करने पर हौसला अफ़्ज़ाई कर के मज़ीद आगे बढ़ाया जाये ग़ैर शरई व नामुनासिब कामों पर नर्मी से मना करते हुए ऐसे कामों की बुराई बताई और समझाई जाए। घर में तिलावते क़ुरआन, दुरूद शरीफ़ और ज़िक्र अज़्कार बच्चों के सामने करें बच्चों को उन इबादतों की अमली तरग़ीब मिलेगी।

अल ग़रज़ येह कि वालिदैन बच्चों को अल्लाह करीम का फ़रमांबरदार बन्दा, नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वफ़ादार उम्मती और ख़ानदान व मुआशरे का मुफ़ीद इन्सान बनाने में अपनी तमाम

सलाहिय्यतों को इस्तिमाल करें ताकि दीनो मिल्लत को बा मक़्सद, बा अख़्लाक़ व बा किरदार अफ़राद मुहय्या कर सकें कि नेक औलाद बेहतरीन सदक़ा जारिया है।

इस के लिये क़ुरआनी दुआओं से भी राहनुमाई हासिल कीजिये। चुनान्चे क़ुरआने करीम में है : ﴿رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ ۖۗ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَآءِ(۴۰) رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ(۴۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब मुझे नमाज़ का क़ाइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को ऐ हमारे रब और मेरी दुआ सुन ले ऐ हमारे रब मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को और सब मुसलमानों को जिस दिन हिसाब क़ाइम होगा।[9]

बच्चों की हिफ़ाज़त और उम्दा तालीमो तरबियत के लिये अमली इक़्दामात के साथ दुआ से हरगिज़ ग़फ़्लत न बरतें उन के नेक व सालेह होने की दुआ भी लाज़िमी करते रहें।

तरबियते औलाद में मां का किरदार तरबियते औलाद की ज़ियादा ज़िम्मेदारी मां पर आती है कि बच्चे का अक्सर वक़्त मां के साथ ही गुज़रता है उमूमन वोही बच्चे को उठना बैठना चलना फिरना खाना पीना सिखाती है लिहाज़ा इब्तिदा ही से बच्चे को येह सब उमूर सुन्नत के मुताबिक़ करने की अमली तौर पर तरग़ीब दिलाती रहे।

मां को चाहिये अपने बच्चों को अल्लाह करीम की महब्बत व मारिफ़त सिखाए इर्द गिर्द मौजूद चीज़ों के मुतअल्लिक़ बताए कि उन्हें अल्लाह करीम ने हमारे इस्तिमाल के लिये पैदा फ़रमाया है वोह अपनी मख़्लूक़ से बहुत महब्बत करता है दुन्या की सब से बड़ी ताक़त अल्लाह करीम की महब्बत और रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इश्क़ है इसी लिये एक मुसलमान वालिदा को चाहिये कि वोह अपनी औलाद को कामिल मोमिन बनाए और तक्मीले ईमान के लिये महब्बते मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शर्त है लिहाज़ा बचपन ही से इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم औलाद के सीनों में बसा दे कि दुन्या की कोई ताक़त उसे शिकस्त न दे सके।

इसी लिये नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपनी औलाद को तीन बातों की तालीम दो : 1 अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के 2 अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत अहले बैत की महब्बत और 3 क़ुरआन की तिलावत।[10]

माएं बच्चों को सुनाएं कि सहाबए किराम رضی اللہ عنہم اجمعین ने तादाद की कमी के बा वुजूद दुश्मनाने इस्लाम के सामने किस क़दर शुजाअतो बहादुरी का मुज़ाहरा किया, उन के नन्हे मुन्ने दिलो दिमाग़ में इस्लाम की हक़्क़ानिय्यत का ऐसा सिक्का जमा दें कि वोह ज़िन्दगी के हर मोड़ पर इस्लाम की ख़ातिर मर मिटने के लिये तय्यार रहें।

तरबियत करने वालों के लिये भी ज़रूरी है कि ख़ुद भी सीरतुन्नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुतालआ करें और बच्चों को भी सीरत की कुतुब ख़रीद कर दें उन के सामने पढ़ें और सीरते मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वाक़िआत व मोजिज़ात बच्चों के सामने कहानी की सूरत में बयान करें।

इस लिये तमाम वालिदैन और सरपरस्तों को चाहिये कि वोह वक़्तन फ़वक़्तन सीरते नबवी का मुतालआ करते रहें, ताकि उन पर येह वाज़ेह हो सके कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बच्चों के साथ किस क़िस्म का अन्दाज़ रखा, और फिर इस की रौशनी में वोह बच्चों की सलाहो फ़लाह के लिये रास्ते हमवार करें।

अल्लाह पाक वालिदैन को तरबियते औलाद के इस फ़रीज़े को अह़सन तरीक़े से अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)مشكاة المصابیح، 1/67، حدیث:257(2)ترمذی، 3/382، حدیث: 1958
(3)مراٰۃ المناجیح،6/564(4)مسلم، ص547، حدیث:3334ملتقطاً(5)جامع صغیر، ص277، رقم:4525(6)ابو داود، 1/208، حدیث:494(7)بخاری، 3/70، حدیث:5376(8)مسلم، ص1013، حدیث:6259(9)پ13، ابراھیم:40، 41
(10)جامع صغیر، ص25، رقم:311۔

ख़त्मे नुबुव्वत

जुमुआ के रोज़ वैसे तो स्कूल की आम रूटीन के मुताबिक़ बज़्मे अदब होती ही थी लेकिन आज बच्चों की बज़्मे अदब के लिये बच्चों का जोशो ख़रोश दीदनी था, दरअस्ल प्रिन्सपल साहिब ने चन्द रोज़ पहले ही एलान कर दिया था कि इस जुमुआ को होने वाली बज़्मे अदब का उन्वान होगा : अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत, जिस में मामूल से हट कर बच्चों के बजाए असातिज़ा हिस्सा लेंगे, तभी बच्चे ब्रेक ख़त्म होने का इन्तिज़ार कर रहे थे ताकि जल्दी से बज़्मे अदब शुरूअ हो।

बज़्मे अदब का बा क़ाइदा आग़ाज़ उर्दू के उस्तादे मोहतरम ने तिलावते क़ुरआने मजीद से किया जिस के बाद रियाज़ी के टीचर नाते पाक सुनाने माइक पर आए :

सब से औला व आला हमारा नबी
सब से बाला व वाला हमारा नबी

नात इतनी प्यारी और आसान थी कि किसी के कहे बग़ैर ही बच्चे नात पढ़ने में शामिल हो चुके थे, पूरा हॉल नात से गूंज रहा था, जैसे ही सर की नात ख़त्म हुई तो प्रिन्सिपल साहिब ने पहले ख़त्मे नुबुव्वत के नारे लगवाए :

मुहम्मदे मुस्तफ़ा — सब से आख़िरी नबी
अहमदे मुज्तबा — सब से आख़िरी नबी
ताजदारे अम्बिया — सब से आख़िरी नबी
हैं हबीबे किब्रिया — सब से आख़िरी नबी

प्यारे बच्चो ! अब मैं बिला ताख़ीर हमारे इस्लामिय्यात के मोहतरम उस्ताद बिलाल साहिब को दावत देता हूं कि वोह माइक पर तशरीफ़ लाएं और अपनी तक़रीर से हमारे दिलो दिमाग़ को मुनव्वर फ़रमाएं।

सर बिलाल : अज़ीज़ त़लबा और असातिज़ा ज़ी वक़ार ! السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ आज हम जिस अक़ीदे और नज़रिये की ख़ातिर यहां जमा हुए हैं वोह इतना ही अहम है जितना कि अक़ीदए तौहीद, यानी जैसे अल्लाह पाक को अकेला माबूद माने बग़ैर कोई भी शख़्स मुसलमान नहीं हो सकता वैसे ही जब तक ह़ज़रत मुह़म्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आख़िरी नबी नहीं मानेगा मुसलमान शुमार नहीं होगा।

प्यारे बच्चो ! अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत की ख़ातिर शुरूअ से ही मुसलमान अपनी जानें क़ुरबान करते आएं हैं, आज मैं आप के सामने एक ऐसे जंग की तारीख़ बयान करने जा रहा हूं जो अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत की हिफ़ाज़त की ख़ातिर लड़ी जाने वाली इस्लाम की पहली जंग थी। अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए दस साल हो चुके थे जब अरब शरीफ़ के ही एक क़बीले के सतरह अफ़राद आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, उन में सोलह अफ़राद ने तो उसी वक़्त इस्लाम क़बूल कर लिया लेकिन एक शख़्स ने इस्लाम क़बूल करने के लिये ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने बड़ी अनोखी शर्त़ रखी। हॉल में मुकम्मल ख़ामोशी थी, बच्चों के साथ साथ असातिज़ा भी पूरी त़रह़ सर बिलाल की त़रफ़ मुतवज्जेह थे और वोह अनोखी शर्त़ जानने के लिये बेताब थे।

सर बिलाल ने कुछ वक़्फ़ा लेने के बाद अपनी तक़रीर दोबारा शुरुअ की : वोह शख़्स बोला कि अगर आप (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अपने बाद मुझे अपनी ख़िलाफ़त अ़त़ा फ़रमा दें यानी अपना नाइब बना दें तो मैं आप की पैरवी करूंगा। उस वक़्त ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ मुबारक में खजूर की शाख़ का एक टुकड़ा था, आप उस के क़रीब तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : अगर तुम मुझ से येह शाख़ का टुकड़ा भी मांगोगे तो मैं नहीं दूंगा।

बरगाहे नुबुव्वत से ज़लील होने के बाद अपने क़बीले में पहुंच कर उस शख़्स ने अपनी नुबुव्वत का एलान कर दिया। ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी में तो लोगों ने उसे क़बूल न किया लेकिन जैसे ही आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़ाहिरी दुन्या से पर्दा फ़रमाया उस का फ़ितना फैलने लगा और लोग उस की झूटी दावत

क़बूल करने लगे येह देख कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाद आप के ख़लीफ़ा बनने वाले और उस वक़्त मुसलमानों के सब से बड़े सरबराह (leader) हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ ने नुबुव्वत के इस झूटे दावेदार को सबक़ सिखाने के लिये इस्लामी फ़ौज को रवाना किया और कई रोज़ मुक़ाबला जारी रहा लेकिन जंग का कोई फ़ैसला नहीं हो पा रहा था दर अस्ल आस पास के लोगों पर उस झूटे शख़्स का बहुत असर पड़ा था लाख के क़रीब लोग उस के साथ मिल गए थे, चन्द रोज़ बाद इस्लामी तारीख़ के अज़ीम जरनेल सहाबी हज़रते ख़ालिद बिन वलीद भी इस्लामी फ़ौज की मदद को वहां पहुंच गए, आप ने पूरी प्लानिंग कर के उन पर ह़म्ला किया जिस की वज्ह से उन्हें इब्रतनाक शिकस्त हुई, अपने लश्कर को शिकस्त खाता देख कर वोह झूटा शख़्स एक दीवार के पीछे जा कर छुप गया लेकिन हज़रते वह़शी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ उसे देख चुके थे लिहाज़ा आप ने नेज़ा मार कर उस झूटे शख़्स को क़त्ल कर के जहन्नम रवाना कर दिया।

प्यारे बच्चो ! इस्लामी तारीख़ में इस जंग को यमामा के नाम से याद रखा जाता है और आप को पता है नुबुव्वत के इस झूटे दावेदार का नाम क्या था ? अगर किसी को पता है हाथ खड़ा कर दे।

सर की बात पर प्रिन्सिपल साहिब माइक के पास तशरीफ़ ला कर बोले : दुरुस्त जवाब देने वाले को प्रिन्सिपल ऑफ़िस की तरफ़ से एक इन्आम भी दिया जाएगा। इस एलान के बा वुजूद बच्चों की तरफ़ से किसी का हाथ खड़ा न हुवा तो सर बिलाल ने ख़ुद ही जवाब दिया : बच्चो नुबुव्वत के उस झूटे दावेदार का ना मुसैलमा था जो कि बाद में मुसैलमा कज़्ज़ाब के नाम से मश्हूर हुवा क्यूंकि कज़्ज़ाब अरबी में इन्तिहाई झूटे शख़्स को कहते हैं।

बच्चो ! एक अहम बात आप को पता है उस जंग में कितने सहाबए किराम ने शहादत का मरतबा ह़ासिल किया था ? बारह सौ सहाबए किराम, यानी हज़ार से ज़ाइद सहाबए किराम ने अपनी जान अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत की हिफ़ाज़त की ख़ातिर क़ुरबान कर दी थी जिन में बहुत से सहाबए किराम ह़ाफ़िज़ भी थे, (फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, स. 382, 384, 388, 415) इसी लिये तो हम कहते हैं:

अक़ीदा सब सहाबा का सब से आख़िरी नबी
अक़ीदा अहले बैत का सब से आख़िरी नबी

बच्चों और बच्चियों के 6 नाम

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी सब से पहला तोह़फ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लिहाज़ा उसे चाहिये कि उस का नाम अच्छा रखे।(جمع الجوامع، 3/285، حدیث:8875) यहां बच्चों और बच्चियों के लिये 6 नाम, उन के माना और निस्बतें पेश की जा रही हैं।

बच्चों के 3 नाम

नाम	पुकारने के लिये	माना	निस्बत
मुहम्मद	क़ासिम	तक़्सीम करने वाला	रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम
मुहम्मद	अस्लम	ज़ियादा सलामती वाला	सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का बा बरकत नाम
	मीलाद	पैदाइश, विलादत	ईदे मीलादुन्नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

बच्चीयों के 3 नाम

आमिना	मुतमइन और बेख़ौफ़	रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अम्मीजान का बा बरकत नाम
ह़लीमा	बुर्दबार, बरदाश्त वाली	रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रज़ाई (दूध के रिश्ते की) अम्मीजान का बा बरकत नाम
सुवैबा	रुजूअ करने वाली, लौटने वाली	रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रज़ाई (दूध के रिश्ते की) अम्मीजान का बा बरकत नाम

(जिन के हां बेटे या बेटी की विलादत हो वोह चाहें तो उन निस्बत वाले 6 नामों में से कोई एक नाम रख लें।)

छोटी बच्चियों पर हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़्क़तें

आक़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे लिये रहमत बन कर इस दुन्या में तशरीफ़ लाए हैं, आप की तशरीफ़ आवरी से दौरे जाहिलिय्यत के कसीर ग़लत़ रवाज आप के सदक़े ख़त्म हो गए। आक़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरियाए रह़मत से ना सिर्फ़ बड़ों ने हिस्सा पाया बल्कि बच्चियों को भी हिस्सा मिला। आप अपनी शहज़ादियों की त़रह़ ख़ानदान की और सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ عَنْہُم की बच्चियों से भी बहुत मह़ब्बत फ़रमाते, वक़्तन फ़वक़्तन बच्चियों को तोह़फ़े अ़ता फ़रमाते और उन को दुआओं से भी नवाज़ते जैसा कि ह़ज़रते उम्मे ख़ालिद رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास कपड़े आए जिन में एक सियाह चादर थी, आप ने फ़रमाया : तुम्हारी क्या राय है, येह चादर हम किस को पहनाएं ? पस सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ عَنْہُم ख़ामोश रहे, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरे पास उम्मे ख़ालिद को लाओ, पस मुझे नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास लाया गया तो आप ने अपने मुबारक हाथ से मुझे वोह चादर पहनाई और दो मरतबा फ़रमाया : तुम उस को बोसीदा करो और पुराना करो, फिर आप उस चादर के नक़्शो निगार की त़रफ़ देखने लगे और हाथ से मेरी त़रफ़ इशारा कर के फ़रमा रहे थे : उम्मे ख़ालिद येह बहुत उम्दा है।[1] याद रहे कि येह उस वक़्त की बात है जब ह़ज़रते उम्मे ख़ालिद छोटी बच्ची थीं।[2] नीज़ यतीम बच्चियों की दिल जोई फ़रमाते और उन को भी तह़ाइफ़ अ़त़ा फ़रमाते और उन की परवरिश भी फ़रमाया करते जैसे ह़ज़रते अस्अ़द बिन ज़िरारह رَضِیَ اللہُ عَنْہُ के इन्तिक़ाल के बाद उन की यतीम बच्चियों की शफ़्क़तो मह़ब्बत से परवरिश फ़रमाई, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन बच्चियों को सोने की ख़ूबसूरत बालियां पहनाईं जिन में क़ीमती मोती लगे हुए थे[3] इसी त़रह़ हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी नन्ही नवासी ह़ज़रते उमामा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से भी बेहद प्यार फ़रमाते आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ही उन की परवरिश फ़रमाई। एक मरतबा बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में हदिया पेश किया गया जिस में एक क़ीमती हार भी था आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह मैं उसे दूंगा जो मुझे बहुत प्यारा है। फिर आप ने ह़ज़रते उमामा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا के गले में पहना दिया।[4] इसी त़रह़ बच्चियों को मह़ब्बत से पुकारते थे ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के निकाह़ मुबारक में आई तो उन की एक बेटी ज़ैनब दूध पीती थीं, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाते तो बड़ी मह़ब्बत से पूछते : ज़ुनाब कहां है ? ज़ुनाब कहां है ?[5]

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्का से जब हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो बनू नज्जार की छोटी बच्चियां

ख़ुशी और महब्बत का इज़्हार करते हुए क़सीदा पढ़ने लगीं:

نَحْنُ جَوَارٍ مِنْ بَنِي النَّجَّارِ
يَا حَبَّذَا مُحَمَّدٌ مِنْ جَارِ

यानी हम बनू नज्जार की लड़कियां हैं और ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे कितने ही अच्छे हमसाए हैं।

आक़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह पाक जानता है मैं तुम से महब्बत करता हूं।[6]

आक़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी से मिलने वाले दर्स :

बच्चियों की तरबियत ख़ूब शफ़क़त व नर्मी के साथ की जाए उन पर अपना माल ख़र्च किया जाए उन की ज़रूरिय्यात को अह़सन अन्दाज़ से पूरा किया जाए। उन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई की जाए।

अगर कभी कोई बात नागवार गुज़रे तो झाड़ झपट की जगह बेहतर अन्दाज़ इख़्तियार किया जाए, या ख़ामोशी इख़्तियार कर के एह़सास दिलाया जाए।

बच्चियों को आख़िरत पर तवज्जोह दिलाई जाए, नमाज़ रोज़े, लिबास व पर्दे के शरई अह़काम सिखाने का एहतिमाम किया जाए।

बच्चियों को दुन्या की ज़िल्लत नहीं बल्कि आख़िरत की इ़ज़्ज़त जानें, उन की शादी से क़ब्ल भी अह़सन सुलूक करें और बाद शादी भी अह़सन अन्दाज़ इख़्तियार करें। ऐसा न हो कि रुख़्सत कर के भूल गए बल्कि उन के पास जाएं तो कभी उन को बुलाएं, आना जाना रखें, बाद शादी भी उन की ज़रूरिय्यात का ख़याल रखें, कुछ अच्छा पकाएं या घर लाएं तो उन को भी अपनी इस्तित़ाअ़त के मुताबिक़ भेजें, उन की ह़ाजत का इ़ल्म हो तो पेश करें, बीमार हो तो इ़यादत को जाएं, नीज़ जब बेटियां मुलाक़ात के लिये घर आएं तो महब्बत से ख़ुश आमदीद कहें और तोह़फ़े भी हो सके तो पेश करें।

अगर बाद शादी भी बेटी के हां कोई परेशानी आ जाए मसलन बेवा हो जाए या त़लाक़ तो उस को बोझ न समझें बल्कि तब भी अह़सन अन्दाज़ इख़्तियार फ़रमाएं, त़ानो तशनी न फ़रमाएं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या मैं तुम को बेहतरीन सदक़े पर रहबरी न करूं, तुम्हारी वोह बेटी जो तुम तक लौटा दी जाए, तुम्हारे सिवा उस का कोई कमाने वाला न हो।[7] यानी तुम्हारी वोह बेटी जिस का ख़ावन्द फ़ौत हो गया या पागल दीवाना हो गया या गुम हो गया या उस ने त़लाक़ दे दी मगर लड़की किसी मजबूरी की वज्ह से दूसरा निकाह़ नहीं कर सकती या उसे अच्छा रिश्ता मिलता नहीं इस लिये मजबूरन वोह मैके में आ गई उस के साथ अच्छा सुलूक करना, उस की परवरिश करना बेहतरीन सदक़ा है कि वोह अब बे आस हो कर तुम्हारे सहारे पर तुम्हारे पास आई।[8]

अल ह़ासिल :

ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरत से हमें येह सबक़ मिलता है कि बच्चियों से महब्बत, इ़ज़्ज़त और शफ़क़त न सिर्फ़ एक अख़्लाक़ी अ़मल है बल्कि नजात का ज़रीआ भी है। आज के मुआशरे को चाहिये ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरत को नमूना बना कर बच्चियों के साथ ह़ुस्ने सुलूक को फ़रोग़ दे। सीरते मुस्त़फ़ा में बच्चियों के लिये महब्बत की वोह रौशनी है जो हर दौर में मश्अ़ले राह है।

अल्लाह पाक हमें समझ बूझ अ़त़ा फ़रमाए कि हम अपनी बच्चियों के साथ अह़सन सुलूक करें।

اٰمِین بِجَاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1) بخاری، 4/63، حدیث: 5845 (2) دیکھئے: بخاری، 2/581، حدیث: 3874 (3) دیکھئے: طبقات ابن سعد، 8/349 (4) مسند احمد، 41/232، حدیث: 24704 (5) سنن کبریٰ للنسائی، 5/294، حدیث: 8926 (6) ابن ماجہ، 2/439، حدیث: 1899 (7) ابن ماجہ، 4/188، حدیث: 3667 (8) مراٰۃ المناجیح، 6/584۔

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

1 हालते एहराम में औरत के सर के कुछ बाल खुल जाएं तो ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि अगर औरत एहराम की हालत में हो और उस के सर के बालों से स्कार्फ़ वग़ैरा हट जाए और उस के बाल नज़र आना शुरूअ हो जाएं, फिर मालूम होने पर औरत उन बालों को छुपा ले, तो अब उस औरत के लिये क्या हुक्म होगा ? इस पर दम या सदक़ा वग़ैरा लाज़िम होगा या नहीं ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِکِ الۡوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

औरत के बाल सित्र में शामिल हैं और एहराम की हालत में सित्र ख़ुल जाए, तो कोई कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं होता। अलबत्ता ना महरम के सामने जान बूझ कर सित्र का कोई भी हिस्सा ज़ाहिर करना हराम है और तमाम एहतियात के साथ बाल छुपाए थे लेकिन कब ज़ाहिर हुए मालूम नहीं हुवा तो उस का मुवाख़ज़ा नहीं।

वाज़ेह रहे तवाफ़ कोई भी हो मर्दो औरत को अपनी तफ़्सील के मुताबिक़ जो भी सित्र के आज़ा हैं उन का छुपाना वाजिब है। और खुलने वाले हिस्से की मिक़्दार और तवाफ़ की अक़्साम को ले कर क़फ़्फ़ारा होने या न होने और उस की अक़्साम में काफ़ी तफ़्सील है। (الہدایہ، 1/277 - बहारे शरीअत, 1/483)

وَاللّٰہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 औरत हक़्क़े महर की रक़म की ज़कात कब अदा करे ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मेरी शादी को आठ साल हो चुके हैं, मेरा हक़्क़े महर पचास हज़ार था जो अभी तक मेरे शौहर ने अदा नहीं किया और न ही मैं ने मांगा है, मैं साहिबे निसाब हूं और हर साल ज़कात अदा करती हूं, सुवाल येह है कि हक़्क़े महर का पचास हज़ार जो मुझे नहीं मिला, वोह ज़कात अदा करते वक़्त निसाब में शामिल करूंगी या नहीं ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِکِ الۡوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में हक़्क़े महर जो अभी तक अदा नहीं किया गया, फ़िक़्ही एतिबार से वोह दैने ज़ईफ़ है और दैने ज़ईफ़ में ज़कात उस वक़्त लाज़िम होती है जब उस पर क़ब्ज़ा करने के बाद साल गुज़र जाए या उस जिन्स का कोई और निसाब मौजूद हो और उस पर साल मुकम्मल हो जाए या उस जिन्स का कोई और निसाब मौजूद हो और उस पर साल मुकम्मल हो जाए, लिहाज़ा हक़्क़े महर जब तक आप को वसूल नहीं हो जाता, निसाब में शामिल नहीं होगा। हां आप को हक़्क़े महर वसूल हो गया, तो जिस दिन से आप के क़ब्ज़े में आएगा शुमारे ज़कात में आएगा यानी अगर आप पहले से साहिबे निसाब थीं तो येह माल भी दीगर माले ज़कात के साथ मिला लिया जाएगा और उसी के साले तमाम पर कुल की ज़कात लाज़िम होगी जब कि ज़कात की दीगर शराइत़ पाई जाएं। अगर पहले से साहिबे निसाब न थीं तो जिस दिन से महर वसूल हुवा अगर बक़द्रे निसाब है उसी वक़्त से साल शुरूअ हुवा जब साल मुकम्मल होगा उस वक़्त उस की ज़कात देनी होगी जब कि ज़कात की शराइत़ पाई जाएं। (تحفۃ الفقہاء، 1/295-البحر الرائق شرح کنز الدقائق، 2/223-فتاویٰ رضویہ، 10/162- بہارِ شریعت، 1/906)

وَاللّٰہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

पन्दरह सौवां नबिय्ये पाक का मीलाद है

अज़ : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना
अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

हर ख़ुशी, हर ईद, हर फ़रहत[1] की जो बुन्याद है पन्दरह सौवां नबिय्ये पाक का मीलाद है
झूमते हैं सब मुसल्मां, दिल सभी का शाद[2] है पन्दरह सौवां नबिय्ये पाक का मीलाद है
फ़ज़्ले रब से आज तो हैं बारिशें अन्वार की पन्दरह सौवां नबिय्ये पाक का मीलाद है
हो मुबारक ऐ मुहम्मद (صلی اللہ علیہ والہ وسلم) मुस्तफ़ा के आशिक़ो ! पन्दरह सौवां नबिय्ये पाक का मीलाद है
हर तरफ़ झन्डे लगाओ, रौशनी घर घर करो पन्दरह सौवां नबिय्ये पाक का मीलाद है
मरहबा सल्ले अला की धूम है चारों तरफ़ पन्दरह सौवां नबिय्ये पाक का मीलाद है
ख़ूब नातें गुनगुनाओ, और पढ़ो उन पर दुरूद पन्दरह सौवां नबिय्ये पाक का मीलाद है
सारे आशिक़ जश्ने मीलादुन्नबी से शाद हैं हां मगर शैतां बहुत ग़मगीन है नाशाद[3] है
वोह मुसलमां ला जरम[4] हक़दार है फ़िरदौस[5] का जिस का दिल यादे रसूले पाक से आबाद है
या रसूलल्लाह ! रहमत की नज़र फ़रमाइये ! आफ़तों में घिर गया कमज़ोर ख़ानाज़ाद[6] है
दो जहां में कामयाबी, उस के चूमेगी क़दम मश्ग़ला जिस का ख़ुदा व मुस्तफ़ा की याद है
जो करे प्यारे नबी की शान में गुस्ताख़ियां उस की दुन्या और उस की आख़िरत बरबाद है
तू यतीमों और ग़रीबों का है हमदम या नबी ! फ़ज़्ले रब से तू सख़ी सरकार है जव्वाद है
हज करूं, काबे के जल्वों से हो ठन्डी आंख फिर तैबा आऊं याद से जिस की येह दिल आबाद है
फ़ज़्ले मौला से मिलेंगी ख़ूब तुझ को बरकतें क्यूंकि घर पर आज तेरे महफ़िले मीलाद है

हश्र का मैदान है, तशवीश[7] है अत्तार को
जुर्म के दफ़्तर खुले हैं, आप से फ़रियाद है

1 : ख़ुशी । 2 : ख़ुश । 3 : नाख़ुश । 4 बेशक । 5 : बाग़ (सब से आला जन्नत का नाम)
6 : मालिक के घर पैदा होने वाला ग़ुलाम । आजिज़ी का लफ़्ज़ । 7 : परेशानी । बे चैनी ।
वज़ाहत : इस कलाम का मतलअ एक शाइर इस्लामी भाई का मौज़ूं किया हुवा है । अत्तार
(26 मुहर्रम शरीफ़ 1447 हि./20.7.25)

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी का साथ दीजिये और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़तिय्यात (Donation) के ज़रीए माली तआवुन कीजिये !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है